

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_176285

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81/J63H Accession No. G.H. 779

Author जोधराज ।

Title हस्तीर राखा । 1929

This book should be returned on or before the date
last marked below.

नागरीप्रचारिणी ग्रंथमाला—१३

कवि जोधराज कृत

हम्मीररासो

संपादक

श्यामसुंदरदास बी० ए०



काशी-नागरीप्रचारिणी सभा की ओर से

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

द्वितीय संस्करण]

१९२६

भूमिका

यह ऐतिहासिक काव्य कवि जोधराज का बनाया हुआ है। नोमराणा के राजा, चंद्रभानु की आज्ञा से जोधराज ने इस काव्य को संवत् १७८५ में रचा। इसमें रणथंभौर के वीरशिरोमणि महाराज हम्मीरदेव का चरित्र और विशेष कर अलाउद्दीन के साथ उनके विग्रह का वर्णन है। भारतवर्ष के इतिहास में हम्मीर का नाम प्रसिद्ध है और उसके चरित्र को पढ़ और सुनकर लोग अब तक मनोमुग्ध और उत्साहित होते हैं। कवियों और लेखकों ने भी उसके चरित्र के गान करने में कोई बात उठा नहीं रखी है। अब तक कविता में इस विषय के तीन ग्रंथ प्राप्त हुए हैं। एक तो चंद्रशेखर का हम्मीर-हठ है जो छपकर प्रकाशित हो चुका है। दूसरा ग्वाल कवि का ग्रंथ है जो अब तक छपा नहीं, परंतु जिसकी कविता-शैली भी ऐसी उत्तम नहीं है। तीसरा ग्रंथ यह जोधराज का है। और भी अनेक ग्रंथ इस विषय के होंगे इसमें कोई संदेह नहीं। गद्य में भी अनेक ग्रंथ लिखे गए हैं परंतु दुःख के साथ कहना पड़ता है कि उनमें ऐतिहासिक खोज का बहुत कुछ अभाव देख पड़ता है। राजपूताने में दो हम्मीर हो गए हैं। एक उदयपुर के और दूसरे रणथंभौर के। लेखकों ने प्रायः दोनों के चरित्रों को मिलाकर एक कर डाला है और इसी

भ्रम में पड़कर इतिहास के विरुद्ध बातें लिख डाली हैं । जिन हम्मीर की इतनी प्रसिद्धि है और जिनके गुण गाने से अब तक लोग उत्साहित होते हैं तथा जिन्होंने अलाउद्दीन से रार ठानी थी वे रणथंभीर के चौहान हम्मीर थे, न कि उदयपुर के सिसौ-दिया हम्मीर । अतएव इस काव्य के विषय में कुछ लिखने के पहले अब्बा इसके संबंध की, ऐतिहासिक बातों का उल्लेख करने के पहले मैं जोधराज कृत इस काव्य में चौहान हम्मीर का जो कुछ चरित्र वर्णन किया गया है उसे दे देना उचित समझता हूँ । इस सारांश के लिये, जो आगे दिया जाता है, मैं कुँअर कन्हैया जी का अनुगृहीत हूँ ।

भारतवर्ष के अंतिम सम्राट् भृगु^१कुलोत्पन्न महाराज पृथ्वीराज के वंश में चंद्रभान नाम का एक वीर पुरुष था । यद्यपि नीमराणा अब एक छोटी सी रियासत अलवर राज्य के अन्तर्गत है, पर यहाँ के अधिपति चौहानों के मुकुटमणि माने जाते हैं । ये राजा अपने को महाराज पृथ्वीराज का वंशधर बताते हैं । महाराज चंद्रभान को उनके वीरत्व, दातृत्व, औदार्य, पराक्रम, बुद्धिमत्ता और सर्वप्रियता के कारण लोग राठ^२ का महाराज कहा करते थे, और सब लोग उसी

(१) चहुआनों के भृगुवंशी होने का वर्णन आगे इसी पुस्तक में है ।

(२) पुस्तक में मूल पाठ “राठ पतिशाह” है जिसका अर्थ “राठ का बादशाह” होता है । ‘राठ’ उस भूभाग का नाम है जो अलवर रऔ जयपुर राज्य के बीच में है और जहाँ नीमराणा राज्य स्थित है ।

भाँति उसका आदर भी करते थे। उक्त चंद्रभान के दरबार में आदि-गौड़-कुलोत्पन्न अत्रिगोत्रीय ब्राह्मण, बालकृष्ण का पुत्र जोधराज था। इस वंश के लोग डिडवरिया राव कहे जाते थे।

एक समय चंद्रभान ने जोधराज से हम्मीररासो के सुनने की इच्छा प्रगट की और कहा कि इस काव्य में महाराज हम्मीर की वंशावली, उनका अलाउद्दीन से वैर, उनकी वीरता और उनके युद्धकौशल इत्यादि का यथाक्रम संचेप में वर्णन होना चाहिए। तब जोधराज ने इस काव्य “हम्मीर-रासो” की रचना की।

सृष्टिरचना—प्रथम कल्प के आदि में संसार रूपी उपवन के जीव निर्जीव प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सब पदार्थ वीर्यस्वरूप से उस परम प्रभु परमात्मा अनादि जगदीश्वर के स्वरूप में स्थित थे और वह प्रभु योगनिद्रा में निमग्न था। एक समय वह अपनी शक्ति का आप ज्ञान करके निद्रा से उठा और उसके इच्छा करते ही माया उत्पन्न हुई। जिस समय शेषशायी भगवान् के नाभि-कमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुए वह वाराह कल्प का आदि था।

मानवसृष्टि—जलज से उत्पन्न हुआ ब्रह्मा बहुत समय पर्यंत इसी विचार में मुग्ध रहा कि मैं क्या करूँ। इसी प्रकार जब बहुत समय बीत गया तब उसे आपसे आप अनुभव हुआ कि तप करके सृष्टि उत्पन्न करनी चाहिए और उसने

वैसा ही किया । पहले तो उसने अप, तेज, वायु, पृथ्वी, आकाशादि पंच महातत्वों की रचना की, तदनंतर बीज वृक्षादि जड़वस्तुओं की रचना करके उसने सनक, सनंदन, सनत्कुमारादि ४ पुत्र रचकर मानव जाति की वृद्धि करनी चाही; किंतु जब सनकादि कुमारों ने अखंड ब्रह्मचर्य्य धारण कर सांसारिक विषय भोगादि से अरुचि प्रगट की तब ब्रह्मा ने उसी प्रकार से अन्यान्य मुनिवरो को उत्पन्न किया । ब्रह्मा के मन से मरीचि, कानों से पुलस्त्य, नाभि से पुलह, हाथों से कृतब्रह्मा, त्वचा से नारद, छाया से कर्दम, पीठ से अर्द्धम, कंठ से धर्म और ओष्ठ से लोम ऋषि उत्पन्न हुए । इन्हीं ऋषियों से मनुष्यों की भिन्न भिन्न जातियों की वृद्धि हुई ।

चन्द्रवंश और सूर्यवंश—ब्रह्मा के पुत्र मरीचि के १३ स्त्रियाँ थीं उनमें से एक का नाम कला था । कला के कश्यप और धर्म दो पुत्र हुए । अत्रि ऋषि के तीन पुत्र हुए जिनमें से बड़े का नाम सोम था और कनिष्ठ का नाम दुर्वासा । उक्त सोम का बुध और बुध का पुरुरवा नाम से पुत्र हुआ । इस पुरुरवा के ६ पुत्र हुए जिनसे चंद्रवंशियों के ६ कुल प्रख्यात हैं ।

इसी प्रकार भृगु मुनि से चहुआन क्षत्रियों का वंश चला जिसका वर्णन इस प्रकार से है कि भृगु मुनि की पहली स्त्री से धाता और विधाता नाम के उनके दो पुत्र हुए । भृगु की दूसरी स्त्री से दैत्यगुरु का और च्यवन ऋषि का जन्म

हुआ। च्यवन के ऋचीक, इनके जमदग्नि और जमदग्नि के परशुराम नामक छात्र-वृत्तिधारी पुत्र हुए जिन्होंने छात्र धर्म से च्युत विषयलोलुप सहस्रों छात्रय राजाओं को मारकर उनका वंश पर्यंत नाश कर डाला और उनके रुधिर से पितृ-देवताओं का तर्पण किया। इस प्रकार परशुराम के पराक्रम से प्रसन्न हुए पितृ देवताओं ने परशुराम को शांत होकर तप करने की आज्ञा दी।

आवूराज पर्वत पर यज्ञ और चहुआनों की उत्पत्ति—इधर सृष्टि के शासनकर्ता क्षत्रियों के समूल उन्मूल हो जाने से जब परस्पर अन्याय आचरण के कारण प्रजा पीड़ित हो उठी और दैत्य और राक्षसों के उपद्रव से ऋषि लोगों के यज्ञादि कर्मों में भी विघ्न पड़ने लगा तब ऋषिगण संसार की रक्षा और उसके उचित शासन के निमित्त फिर क्षत्रियों के उत्पन्न करने की अभिलाषा से यज्ञ करना विचारकर अर्बुदगिरि अर्थात् आवू के पहाड़ पर गए। वहाँ पर सब ऋषियों ने शिव की आराधना की। तब शिव ने भी वहाँ आकर मुनिवरो की प्रार्थना स्वीकार की और वे उक्त पर्वत पर अचल रूप से विराजमान हुए; अस्तु तब मुनिवरो ने भी सुंदर वेदिका रचकर यज्ञ-कर्म आरंभ किया। इस यज्ञ में द्वैपायन, वशिष्ठ, लोम, दालिभ, जैमिनि, हर्षन, धौम्य, भृगु, घटयोनि, कौशिक, वत्स, मुद्गल, उद्दालक, मातंग, पुलह, अत्रि, गौतम, गर्ग, सांडिल्य, भरद्वाज, जाबालि, मार-

कंडेय, जरतकाल, जाजुल्य, पराशर, च्यवन और पिप्पलाद आदि मुनियों का समारोह हुआ था। इसके अतिरिक्त शिव और ब्रह्मा भी स्वयं वहाँ उपस्थित थे। इस प्रकार समुचित प्रकार से जिस समय यज्ञ हो रहा था और वेदिका से उत्पन्न हुई अग्निशिखाएँ आकाश को स्पर्श कर रही थीं, उसी समय उस वेदिका में से चालुक्य, प्रमार और परिहार क्षत्रिय क्रम से निकले। इन्होंने मुनिवरों की आज्ञा पा दैत्यों से युद्ध भी किया; किंतु उन्हें परास्त करने में वे समर्थ न हो सके। तब ऋषियों ने उक्त यज्ञस्थल को त्यागकर बसी पहाड़ पर नैऋत दिशा में दूसरा अग्निकुंड निर्माण किया। इस बेर के यज्ञ में ब्रह्मा ने ब्रह्मा, भृगु मुनि ने होता, वशिष्ठ ने आचार्य्य, वत्स ने ऋत्विक् और परशुराम ने यजमान का कार्य्य संपादन किया। निदान इस यज्ञ से जो अग्नि के समान तेजवाला पुरुष उत्पन्न हुआ उसका नाम चहुआन जी हुआ; क्योंकि इनके चार बाहु थे और प्रत्येक बाहु खड्ग, धनुष, शूल और चक्र इन चारों आयुधों को धारण किए हुए था। इस पुरुष ने ऋषिवरों के अशीर्वाद और निज कुलदेवी आशापूरा के प्रसाद से संपूर्ण दैत्यों का वध कर ऋषि और देवताओं को प्रसन्न किया।

कयामुख—इस प्रकार यज्ञकुंड से उत्पन्न चहुआन जी के वंश में बहुत दिनों पीछे विक्रमी १२ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के आरंभ में राव जैतराव चहुआन जन्मे। एक समय जैतराव जंगल में शिकार खेलने गए। वहाँ उन्होंने एक बलवान् बाराह

को देखकर उसके पीछे घोड़ा डाल दिया, बहुत दूर निकल जाने पर एक गंभीर वन में बाराह तो अदृष्ट हो गया और राव जी संगी साथियों से छूटकर चकितचित्त अकेले उस वन में भटकते फिरने लगे । ऐसे समय में वहाँ उन्हें एक ऋषि का आश्रम देख पड़ा तो वहाँ जाकर वे देखते क्या हैं कि परम रमणीय पर्णकुटी में कुशासन पर बैठे हुए पद्म ऋषि जी ध्यान में मग्न हैं । राव जी ने उनके निकट जाकर साष्टांग प्रणाम किया और उनके दर्शन से अपने को कृतार्थ जानकर वे उनकी स्तुति करने लगे । निदान तब ऋषि ने भी प्रसन्न होकर राव जी को आशीर्वाद दिया, और कुछ दिवस पर्यंत उसी स्थान पर रहकर उन्हें शिवार्चन करने का भी उपदेश दिया । राव जी ने वैसा ही करके शिव को प्रसन्न किया । तब ऋषि ने पुनः आज्ञा की कि राव जी तुम यहाँ एक गढ़ भी निर्माण करो । अस्तु राव जी ने उसी समय अपने मित्र, मंत्री और सुहृदों को बुलाकर संवत् १११० वैशाख सुदी अक्षय तृतीया, शनिवार को पाँच घटी सूर्योदय में रणथंभगढ़ की नींव डाली और उसी के उपस्थ में एक रमणीक नगर भी बसाया ।

ऋषि का तप भंग होना—उस पर्वतावेष्टित प्रच्छन्न एवं दृढ़ दुर्ग की रम्य भूमि को पद्म ऋषि ने राव जी से अपने रहने के लिये माँग लिया और उसी में रहकर वे तप करने लगे । जब उनके उग्र एवं पवित्र तप की सूचना इंद्र को मिली तब उस भीरुहृदय इंद्र ने अपने श्रीभ्रष्ट होने के भय से आशं-

कित होकर पद्म ऋषि का तप भ्रष्ट करना चाहा और इसलिये उसने इस कर्म के लिये कुकर्मी मकरकेतु को उपयुक्त जानकर उसे आज्ञा दी कि हे मित्र तू अपने सच्चे सहचर वसंत के सहित जाकर रणथंभ गढ़ में तप करते हुए तेजस्वी पद्म ऋषि की श्री नष्ट कर दे । इस प्रकार इंद्र से उत्तेजित किया हुआ कामदेव अपनी सहकारी षड् ऋतुओं सहित रणथंभ गढ़ में ध्यानमग्न पद्म ऋषि के जाग्रत करने की इच्छा से ऋतुओं के उपचार का प्रयोग करने लगा, किंतु ग्रीष्म का प्रचंड मार्तंड और मलय समीर, पावस के पपीहा, शरद की स्वच्छ चाँदनी, शिशिर के दुशाला और हेमंत के पाला को पराजित करनेवाले मसाले भी जब ऋषि की समाधि भंग न कर सके, तब उस कुसुमायुध ने साक्षात् शिव को रसिक बनानेवाले वसंत का प्रयोग किया अर्थात् उस जनशून्य वन में नाना प्रकार के पुष्प प्रस्फुटित हुए और उन पर मधुप गुंजार करते हुए आनंद से मकरंद पान करने लगे, जहाँ तहाँ नाना वर्ण के पक्षी-सावक कलरव करते हुए कल्लोल करने लगे । उसी समय इंद्र द्वारा प्रेरित अप्सराओं ने आकर नृत्य और गान करते हुए उस शिखर-शैली को इंद्र का अखाड़ा बना दिया, तब उपयुक्त समय जानकर कामदेव ने भी अपने शरीर से मुनिवर के शरीर को वेध दिया । इस प्रकार समाधि भंग होने पर जब मुनि ने आँख उठाकर देखा तो देखते क्या हैं कि उस रणथंभ के अभेद्य दुर्ग में शांत रस को पराजित कर शृंगार रस ने पूर्णतया अपना

अधिकार जमा लिया है और एक चंद्रमुखी मृगलोचनी, गयंद-गामिनी, नवयौवना सम्मुख खड़ी हुई मुनि की ओर कटाक्ष सहित देख रही है। यह देखकर पद्म ऋषि के शरीर से शांति और तप इस प्रकार बिदा हो गए जैसे तुषारतोषित वृक्ष सुकोमल पल्लवों को त्याग देते हैं, एवं जिस प्रकार फल के लगते ही वृक्षगण सूखे पुष्प का अनादर कर देते हैं। इस प्रकार कामातुर होकर पद्म ऋषि समाधि छोड़ सुंदरी का आलिंगन करने को उत्सुक हो उठे। उधर उस रमणी ने भी ऋषि के मनागत भाव को जानकर उनका हाथ पकड़ लिया और तब वे दोनों आनंद से रस-क्रोड़ा करने लगे।

पद्म ऋषि का शोक और शरीरत्याग—इस प्रकार जब अधिक समय व्यतीत हो गया तब सुंदरी तो अंतर्हित होकर स्वर्ग को चली गई और पद्म ऋषि की भी मोहनिद्रा खुली। तब वे मन ही मन विचार और पश्चात्ताप करके विलाप करते हुए आप ही आप कहने लगे—हाय ! मैं कैसा दुर्बुद्धि हूँ कि मैंने क्षणिक सुख के लिये अपना सर्वनाश किया और फिर भी जिसके लिये सर्वस्व का त्याग किया वह भी पास नहीं। हा ! यह मैंने अब जाना कि पाप का परिणाम केवल संताप होता है और संतप्तहृदय मनुष्य जो कुछ कर डाले सब थोड़ा है। हाय, मैं तप से भी गया, भोग से भी गया, अब मैं इस शरीर को रखकर क्या करूँ ? इस प्रकार शोकातुर होकर मुनि ने एक वेदिका रचकर उसमें अपने शरीर के पाँच खंड

करके होम कर दिए । जिस समय पद्म ऋषि ने शरीर त्याग किया उस दिन माघ शुक्ल १२ सोमवार आर्द्रा नक्षत्र था । पद्म ऋषि के मस्तक से अलाउद्दीन बादशाह, वत्सस्थल से राव हम्मीर, भुजाओं से महिमाशाह और मीर गभरू, चरणों से उर्वसी अर्थात् अलाउद्दीन की उस बेगम का अवतार हुआ जो कि इस आख्यान की नायिका है ।

हम्मीर का जन्म—पद्म ऋषि के उपर्युक्त रीति से शरीर त्यागने के पश्चात् अर्थात् संवत् ११४१, शाका १००६ दक्षिणायन शरद ऋतु कार्तिक शुक्ला १२ रविवार को उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में उक्त रणथंभ गढ़ के चहुआन राव जैतराव जी के हम्मीर नाम का एक पुत्र जन्मा । पुत्र का प्रफुल्लित मुख देखकर जैतराव के आनन्द का ठिकाना न रहा । उन्होंने ज्योतिषियों को बुलाकर लग्न कुंडली बनवाई । सहस्रों ब्राह्मणों, भिक्षुकों और बंदी जनों को यथायोग्य सम्मान सहित अन्नदान, गोदान, हेमदान, गजदान देकर सबको संतुष्ट किया गया । जिस समय रणथंभ गढ़ में हम्मीर का जन्म हुआ उसी समय गजनी में शहाबुद्दीन के पुत्र अलाउद्दीन का तथा मीणा के घर महिमा मंगोल दोनों भाइयों का और गभरू के घर उक्त स्त्री का अवतार हुआ ।

हम्मीर और अलाउद्दीनशाह का वैर—एक समय वसंत ऋतु के आरंभ में अलाउद्दीन ने सहस्रों सैनिक और अमीर उमराओं तथा बेगमों को साथ लेकर शिकार के लिये यात्रा की । उसने एक परम रमणीक वन प्रांत

में शिविर लगवा दिए और वह उसी वन में इतस्ततः आखेट करके जंगली जंतुओं के प्राण संहार करने लगा । इसी प्रकार जब वसंत का अंत होकर ग्रीष्म के आतप से भूमि उत्तापित हो रही थी, अलाउद्दीन सब सर्दारों सहित शिकार खेलने चला गया । इधर बेगमें भी अपनी सखी सहेली और अगनित खोजाओं को लेकर एक कमलवन संपन्न निर्मल सरोवर पर जाकर जलक्रीड़ा करने लगीं । दैवयोग से उसी समय सहसा वायु का वेग बढ़ते बढ़ते इतना प्रचंड हो गया कि बड़े बड़े मेघस्पर्शी वृक्ष टूट टूटकर गिरने लगे, धूलि के आकाश में आच्छादित हो जाने के कारण घोर अंधकार छा गया । इस आकस्मिक घटना से भयभीत होकर सब लोग तीन तेरह होकर अपने अपने प्राणों की रक्षा करने के लिये जहाँ तहाँ भागने लगे, जलक्रीड़ा करती हुई बेगमें में से “रूपविचित्रा” नामक एक बेगम जो कि स्वरूप और गुण में सब बेगमें से श्रेष्ठ थी, भटककर एक ऐसे निर्जन प्रांत में जा पहुँची जहाँ हिसक जंतुओं के भीषण नाद के सिवाय अन्य शब्द ही न सुन पड़ता था । जिस समय रूपविचित्रा भय एवं शीत के कारण थर थर काँपती हुई प्राणरक्षा के लिये ईश्वर का स्मरण कर रही थी उसी समय महिमा मीर वहाँ आ पहुँचा । जब उसे पूछने पर ज्ञात हुआ कि उक्त स्त्री बादशाह की बेगम है, तब उसने उसे घोड़े पर बैठाकर शिविर में ले जाने का आग्रह किया । इस पर रूपविचित्रा ने मीर महिमाशाह को धन्य-

वाद देकर कहा कि इस समय मेरा शरीर शीत से अधिक व्याकुल हो रहा है, इसलिये तू आलिंगन से मुझे संतुष्ट कर। इस पर महिमाशाह ने उत्तर दिया कि एक तो मैं किसी भी पराई स्त्री को अपनी भगिनीवत् मानता हूँ तिस पर आप मेरे स्वामी की स्त्री हैं इसलिये आप मेरी माता समान हैं अतएव मैं इस अकर्तव्य एवं पाप कर्म करने को कदापि सहमत नहीं हूँ। तब रूपविचित्रा ने पुनः उत्तर दिया कि क्या आप यह नहीं जानते कि अपने मुख से माँगती हुई स्त्री को रति-दान न देना भी तो एक ऐसा पाप है कि जिसका कोई प्रायश्चित्त है ही नहीं, और हे वीर युवक, तेरे रूप और गुणों की प्रशंसा पर मोहित हुआ मेरा मन तेरे लिये बहुत दिनों से व्याकुल है। भाग्यवश आज यह संयोग प्राप्त हुआ है। बेगम की ऐसी बातें सुनकर महिमाशाह का भी मन डोल उठा और तब उसने घोड़े को एक समीपवर्ती वृक्ष से बाँध दिया, हथियार खोलकर पास रख लिए और वहीं उस स्त्री की मनोकामना पूर्ण करने लगा। उसी समय एक गर्जता हुआ विकराल सिंह सामने आता देख पड़ा। उसे देखकर रूपविचित्रा थर थर काँपने लगी, किंतु महिमाशाह ने उसे धैर्य देकर कहा कि भय मत करो कोई डर नहीं, और कमान को उठाकर एक ही बाण से उसने सिंह को मार डाला।

उपर्युक्त प्राकृतिक उपद्रव के शांत होते ही सहस्रों मनुष्य बेगम की खोज में इधर उधर फिरने लगे। उनमें से कोई

कोई तो बेगम के पास तक आ पहुँचे और उसे शाही शिविर में लिवा ले गए। रूपविचित्रा को पाकर अलाउद्दीन अत्यंत प्रसन्न हुआ। जब मोहम का अंत हो गया और पावस की घनघोर घटाएँ घिर घिरकर आने लगीं तब अलाउद्दीन ने लश्कर सहित दिल्ली को कूच कर दिया।

दिल्ली के राजमहल में एक दिन आधीरात को जिस समय अलाउद्दीन रूपविचित्रा के पास बैठा था, उसी समय एक चूहा आ निकला। उसे देखते ही बादशाह का काम ज्वर जीर्ण हो गया, किंतु उसने किसी प्रकार सम्हालकर उस चूहे को लक्ष्य करके एक ऐसा बाण मारा कि वह वहीं मर गया। चूहे को मारकर अलाउद्दीन की प्रसन्नता का अंत न रहा, इसलिये उसने रूपविचित्रा से कहा कि मैं जानता हूँ कि स्त्रियाँ स्वभाव से ही कायर होती हैं, इसलिये मैंने यह पुरुषार्थ प्रगट किया है। यह सुनकर रूपविचित्रा ने मुस्कराकर कहा—पुरुषार्थी मनुष्य वे होते हैं जो इसी अवस्था में सिंह को सहज ही मारकर शेखी की बात नहीं करते। बेगम की ऐसी बातें सुनकर अलाउद्दीन आश्चर्य और क्रोध के समुद्र में गोते खाने लगा, किंतु उसने अपने को सम्हालकर कहा कि जो तू ऐसा पुरुष मुझे बतला दे तो मैं उससे बहुत ही प्रसन्नतापूर्वक मिलूँ अथवा उसने मेरा कैसा ही अपराध क्यों न किया हो मैं सर्वथा उसे क्षमा करूँ। तब बेगम ने अपने और मीर महिमाशाह प्रति भूत वृत्तांत को कह सुनाया

और कहा कि उस वीर पुरुष को ये चिह्न हैं कि न तो वह उकड़ूँ बैठकर भोजन करता है, न शरणागत को त्यागता है, और न बिना किसी विशेष कारण के झूठ बोलता है। यह सुनते ही बादशाह का क्रोध इस प्रकार बढ़ उठा जैसे सचिकन पदार्थ की आहुति से अग्नि का तेज बढ़ उठता है। अलाउद्दीन ने उसी समय महिमाशाह को बुलाए जाने की आज्ञा दी। इधर रूपविचित्रा भी अपनी मूर्खता पर पछताने लगी। अंत में उसने साहसपूर्वक बादशाह से कहा कि यदि आप उस वीर पुरुष को कुछ दंड देना चाहते हैं तो प्रथम मुझे ही मरवा डालिए, क्योंकि इसमें वास्तव में मेरा ही दोष है, न कि उसका। जहाँपनाह क्या यह अन्याय न होगा कि एक निरपराधी पुरुष दंड पावे और अपराधी को आप गले से लगावें ? बेगम की ऐसी बातें सुनकर बादशाह ने महिमाशाह के आने पर उससे कहा कि “रे मूढ़ कुमार्गगामी अधम, अब मैं तेरा मुख नहीं देखना चाहता, बस अब यदि तुझे अपने प्राण प्यारे हैं तो इसी समय मेरे राज्य से चला जा।”

मीर महिमा और हम्मीर राव—कुछ अलाउद्दीन से तिरस्कृत होकर महिमाशाह ने घर आकर अपने सहोदर मीर गभरू से सारा वृत्तांत कह सुनाया और उसी क्षण परिवार सहित वह दिल्ली से चल दिया। महिमाशाह जिस किसी राजा राव के पास जाता वह उसे शाह अलाउद्दीन का द्वेषी समझकर तुरंत ही अपने यहाँ से बिदा कर देता। इसी

प्रकार फिरते फिरते जब वह राव हम्मीर की ड्योढ़ी पर पहुँचा और उसने अपने आने की इत्तला कराई तो राव जी ने उसे बड़े ही सम्मानपूर्वक डेरा दिलवाया और दूसरे दिन अपने दरबार में बुलाया । दरबार में पहुँचकर महिमाशाह ने ५ घोड़े, १ हाथी, दो मुल्तानी कमान, एक तलवार, दो बाण, दो बहुमूल्य मोती और बहुत से ऊनी वस्त्र राव जी की नजर किए, जिनको राव जी ने सादर स्वीकार कर लिया । उसी समय मीर महिमाशाह ने अपनी बीती भी राव जी से निवेदन करके सविनय कहा — “मैं अलाउद्दीन के विरोधियों में से हूँ । यदि आपमें मेरी रक्षा करने की शक्ति हो तो शरण दीजिए अथवा मुझे भाग्य के भरोसे पर छोड़ दीजिए ।” मीर के ऐसे वचन सुनकर हम्मीर ने कहा कि हे मोर मैं तुम्हें अभयदान देकर पण करता हूँ कि इस मेरे तनपिंजर में प्राणपखेरू के रहते एक क्या सहस्रों बादशाह तेरा बाल बाँका नहीं कर सकते—यह रणथंभ का अभेद्य दुर्ग, ये अपने राज-पूत वीर अथवा मैं स्वयं अपने को युद्धाग्नि में आहुति देने को प्रस्तुत हूँ परंतु तुम्हें न जाने दूँगा । इस प्रकार कहकर राव हम्मीर ने उसी समय मीर को पाँच लाख की जागीर का पट्टा कर दिया और तब से मीर आनंदपूर्वक रणथंभौर के अभेद्य दुर्ग में रहने लगा ।

इधर बादशाह के गुप्तचरों ने उसका सम्मुख यह समाचार जा सुनाया जिसके सुनते ही अलाउद्दीन पूँछ कुचले हुए

काले सर्प की तरह क्रोधित हो उठा; किंतु वजीर बहराम खाँ ने आगत उपद्रव क टालने अथवा मीर महिमा के पक्षपात की इच्छा से दूत को डाँटकर कहा कि जिस मीर को सात समुद्र पार भी ठिकाना देनावाला कोई नहीं है उसे हममीर क्या रखेगा। इस पर दूत ने पुनः कहा कि यदि मेरी बातों में कुछ भी असत्य हो तो मैं उचित दंड पाने के लिये प्रस्तुत हूँ। दूत की ऐसी दृढ़ता देखकर अलाउद्दीन ने उसी समय आज्ञा दी कि हममीर को एक पत्र इस आशय का लिखा जाय कि वह मेरे अपराधी को स्थान न देवे क्योंकि अब तक वह मेरा मित्र है, न कि शत्रु। यदि वह अपने हठ से न हटे तो उसे उचित है कि वह सम्हल जाय, मैं क्षण मात्र में उसके समस्त दर्प और हठ को धूल में मिला दूँगा। अलाउद्दीन की आज्ञा पाते ही एक दूत को बहुत कुछ समझा बुझाकर रणथंभ की तरफ भेजा गया।

दूत ने रणथंभ जाकर बादशाह का पत्र राव हममीर जी को दिया और कहा कि आप बादशाह अलाउद्दीन के बल, पुरुषार्थ और पराक्रम एवं अपने भविष्य के विषय में भी खूब सोच विचार कर उत्तर दीजिए। इस पत्र का उत्तर राव जी ने इस प्रकार से लिखा कि मैं यह भली भाँति जानता हूँ कि आप दिल्ली के बादशाह हैं; परंतु मैं जो पण कर चुका हूँ, उसे अपने जीवन पर्यंत छोड़ने का नहीं। इसलिए उचित यही है कि आप अब मुझसे महिमाशाह के विषय में बात भी

न करें, और जो कुछ आपसे बन पड़े उसके करने में विलंब भी न कीजिए । इस पत्र को पाकर बादशाह का क्रोध और भी बढ़ उठा परंतु राजमंत्रियों के समझाने बुझाने पर उसने एक बार फिर राव हम्मीर के पास दूत भेजकर उसके मन की शाह ली । परंतु उस वीर पुरुष ने बड़े धैर्य और साहस के साथ फिर भी वही उत्तर दिया । राव हम्मीर जी के हठ और साहस के सामने बादशाह की बुद्धि भी चक्कर में पड़ गई, उसे भी अपने आगे पीछे का सोच पड़ गया । उसने विचार किया कि जब राव हम्मीर में इतना साहस है तब उसका कुछ कारण भी होगा, यदि न भी हो तो प्राण की परवाह न करनेवाले के साम्हने बिरले ही मार के लाल खड़े हो सकते हैं । सिंह हाथी से बहुत ही छोटा है किंतु वह अपने साहस और पुरुषार्थ ही से उसे मार डालता है । इसी प्रकार सोच विचार करते हुए बादशाह ने अपने सब दरबारियों को बुलाकर हम्मीर के हठ और अपने कर्तव्य की सूचना दी । तब उसके सब सदाशिवों ने तो हुजूर ही की 'हाँ' में 'हाँ' मिला दी, सिर्फ एक वृद्ध पुरुष ने कहा कि उस चहु-आन के फेर में न पड़िए, रणथंभ पर चढ़ाई करना सहज नहीं है । परंतु वृद्ध की इस बात पर ध्यान भी न दिया गया । अलाउद्दीन ने उसी समय आज्ञा दी कि यथासंभव शीघ्र ही फौज तय्यार की जाय । बादशाह की आज्ञा पाते ही जहाँ तहाँ पत्र भेजकर सोरठ, गिरनार और पहाड़ी देशों

के अनेक राजपूत सरदार बुलाए गए । तब तक इधर शाही वैतनिक फौज भी तय्यार हो गई और फौज के लिये आवश्यक रसद वरदास भी इकट्ठी हो गई ।

निदान इस प्रकार अरबी, कावली, रूमी इत्यादि मुसलमान वीरों की सत्ताईस लाख जंगी फौज और अठारह लाख परिकर कुल ४५ लाख मनुष्य, ५००० हाथी और पाँच लाख घोड़ों की भीड़ भाड़ लेकर अलाउद्दीन ने रणथंभ गढ़ पर चढ़ाई करने को चैत्र मास की द्वितीया संवत् ११३८ को कूच किया । जिस समय यह शाही दल बल राव हम्मीर जी की सरहद में पहुँचा उस समय वहाँ की प्रजा में कोलाहल मच गया । अलाउद्दीन के आज्ञानुसार सब सैनिक सिपाही प्रजा को नाना प्रकार के कष्ट देने लगे । इसलिये सब लोग भाग भागकर रणथंभ के गढ़ में शरण के लिये पुकारने लगे । इसी प्रकार निरपराधी प्रजा का खून करते हुए जब यह दल बल “नल हारणों गढ़” के किले पर पहुँचा तब वहाँ के किलेदार ने तीन दिन पर्यंत शाही फौज का मुकाबिला किया । किंतु अंत में किले पर बादशाही दखल हो गया । इसलिये यहाँ का किलेदार भी रणथंभ को दौड़ गया और उसने बादशाह के अगणित दल बल का समाचार विधिवत् राव हम्मीर जी के सम्मुख निवेदन किया । इस समाचार के पाते ही हम्मीर की बंक भृकुटी और भी टेढ़ी हो गई, कमल खमान नेत्र अग्नि-शिखा से लाल हो उठे, बाहु और ओठ फड़कने लगे ।

रावजी का ऐसा ढंग देखकर अभयसिंह प्रमार, भूरसिंह राठौर, हरिसिंह बघेला, रणदूला चहुआन और अजमतसिंह इन पाँच सदर्दारों ने २०००० फौज लेकर शाही फौज को रास्ते में रोक लिया और वे ऐसे पराक्रम से लड़े कि बादशाही सेना के पैर उखड़ गए और बड़े बड़े अमीर उमरा जहाँ तहाँ भागने लगे । उस समय अलाउद्दीन के वजोर महिरज खाँ ने कहा—
 “मैंने पहले ही अर्ज किया था कि एक तो राजपूत अपनी बात रखने के लिये जान देने की कभी परवाह नहीं करते, फिर भी उस पहाड़ी किले पर फतह पाना बहुत ही मुश्किल काम है” । किंतु बादशाह ने फिर भी उसकी बात योंही टाल दी और आगे कूच करने की आज्ञा दी । इस युद्ध में अलाउद्दीन के ३०००० सिपाही, डेढ़ सौ घोड़े और कई एक अमीर उमरा काम आए किंतु राव हम्मीर के १२५ सिपाही और १० सदर्दार खेत रहे और अभयसिंह प्रमार के सीस में बहुत गहरे गहरे २१ घाव लगे ।

अलाउद्दीन ने रणथंभ गढ़ के पास पहुँचकर चारों तरफ से किले को घेरकर फौज का पड़ाव डाल दिया और फिर से एक दूत के हाथ पत्र भेजकर राव हम्मीर जी से कहला भेजा कि अब भी मेरे अपराधी मीर महिमाशाह को मेरे पास हाजिर करके मुझसे मिलो तो मैं तुम्हारे अपराध को क्षमा कर दूँगा । इस बार जो राव जी ने उत्तर दिया वह इस प्रकार था—“मैं जानता हूँ तू बादशाह है, परंतु मैं भी उस चहुआन कुल में

से हूँ जिसने सदैव मुसलमानों के दाँत खट्टे किए हैं । ख्वाजा मीराँ पीर का एक लाख अस्सी हजार दल बल अजमेर में चहु-आनों ने ही खपाया था । पुनः वीसलदेव जी ने सौनगरा का शाका किया, उसी वंश में पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन को सात बार पकड़कर छोड़ दिया । बस मैं उसी चहुआन कुल में हूँ और तू भी उसी पीर मर्द औलिया खांदान का मुसलमान है । देख अब किसकी टेक रहती है । हे यवनराज, तू निश्चय रख, मेरी टेक यह है कि सूर्य चाहे पूर्व से पश्चिम में उगने लगे, समुद्र मर्यादा छोड़ दे, शेष पृथ्वी को त्याग दे, अग्नि शीतल हो जाय, परंतु राव हम्मीर का अटल प्रण नहीं टल सकता । देख अलाउद्दीन संसार में जो जन्म लेता है वह एक दिन मरता अवश्य है । अथवा जिसकी उत्पत्ति है उसका नाश होता ही है । फिर इस क्षणभंगुर शरीर को, लिये शरणागत को त्यागकर अपने कुल में मैं कलंक नहीं लगाना चाहता । तुझे कितना दर्प है जो अपने सामने दूसरे को वीर नहीं गिनता । इस पृथ्वी पर रावण, मेघनाद सरीखे अभिमानी और अतुल बलशाली वीर पानी के बबूले की तरह बिला गए । यवनराज ! मनुष्य नहीं रहता, परंतु उसके कर्तव्य की कहानियाँ अवश्य रहती हैं । अतएव अब तुझे सूझे सो कर । मैं भी सब तरह से तैयार हूँ ।”

अलाउद्दीन के दूत को इस प्रकार उत्तर देकर राव हम्मीर जी शिवालय में जाकर शिवार्चन करने लगे । धूप, दीप,

नैवेद्य संयुक्त विधिवत् पूजा करके जिस समय राव जी ध्यानमग्न थे उसी समय शिवालय में आकाशवाणी हुई कि हे हम्मीर तुमसे और अलाउद्दीन से १२ वर्ष पर्यंत संग्राम होगा । तत्पश्चात् आषाढ़ सुदी ११ को तुम्हारा शाका पूर्ण होगा जिससे संसार में चिरकाल तक तुम्हारा यश बना रहेगा । शिव जी से इस प्रकार वरदान पाकर राव जी ने प्रसन्न होकर अपने समस्त शूर वीर सरदारों को युद्ध के लिये सन्नद्ध होने की आज्ञा दी । उसी समय हम्मीर के चाचा राव रणधीर ने, जो कि “छाड़गढ़” के किले के स्वामी थे, हम्मीर से कहा कि श्रोमान् क्षमा करें इस समय मेरे हाथ देखें ।

इधर हम्मोर जी का पत्र पाते ही अलाउद्दीन लाल पीला 'सा हो उठा और उसने उसी समय रणथंभ के किले पर चारों ओर से गोले और बाणों की वर्षा करने की आज्ञा दी । बादशाह की आज्ञा पाते ही मुसलमान सेनानायक मुहम्मद अली रणथंभ के अजेय दुर्ग को पाने के लिये प्रयत्न करने लगा । इधर से राव रणधीर ने भी किले की बुर्जी पर से अग्निवर्षा करने की आज्ञा दी और आप कुछ सैनिकों सहित मुसलमानी सेना में वह इस प्रकार से धँस पड़ा जैसे भेड़ों के समूह में भेड़िया धंसता है । निदान पहली वरणी राव रणधीर और मुहम्मद अली की हुई जिसे राव जी ने एक ही हाथ में देा कर दिया । यह देखकर उसका पीठि नायक अजमत खाँ राव जी के सम्मुख आया । किंतु राव रणधीर ने

उसे भी मार गिराया । अजमत खाँ के गिरते ही मुसल्मानी सेना के पैर उखड़ गए । इस युद्ध में मुसलमान सेना के अस्सी हजार अस्त्रधारी खेत रहे और राव रणधीर के केवल एक हजार जवान मारे गए । मुहम्मद मीर के मारे जाने पर जब मुसलमानी फौज भागने लगी तब अलाउद्दीन ने वादित खाँ को सेनानायक बनाया । वादित खाँ ने बड़े धैर्य और दृढ़ता से उत्तेजनाजनक वाक्य कहकर बिखरी हुई फौज को बटोरकर राजपूत वीर राव रणधीर का सामना किया किंतु अंत में उसे भी भूत सेनानायकों के भाग्य में भाग लेना पड़ा ।

वादित खाँ के मरते ही सारी सेना में कुहराम पड़ गया । अलाउद्दीन स्वयं निस्तेज होकर पीर पैगंबरों का पुकारने लगा । तब वजीर मुहम्मद खाँ ने कहा कि इस प्रकार सम्मुख युद्ध करके जय पाना तो कठिन है । इसलिये कुछ सेना यहाँ छोड़कर छाड़गढ़ के किले पर चढ़ाई की जाय । उस किले में राव रणधीर के परिवार के लोग रहते हैं । निदान अपने परिवार पर भीड़ पड़ी देखकर यदि राव रणधीर शरण में आ जाय तो फिर अपनी जय होने में कोई संदेह नहीं है । निदान वजीर की बात मानकर बादशाह ने वैसा ही किया; किंतु पाँच वर्ष व्यतीत हो गया और छाड़गढ़ का किला हाथ न आया । वरन् इसी में एक नवीन बात यह निकल पड़ी कि दिन भर तो हम्मीर जी युद्ध करते और रात को रणधीर का धावा पड़ता जिससे शाही सेना अत्यंत व्याकुल हो उठी । बड़े बड़े अमीर

उमरा मिट्टी मोल मारे जाने लगे । अधिक क्या आरंभ से अंत तक जितनी लड़ाइयाँ हुईं उन सबमें राजपूत वीरों की ही जय हुई । निदान जब अलाउद्दीन की तरफ के अब्दुलकरीम, करम खाँ, यूसफ जंग इत्यादि बड़े बड़े बुद्धिमान् योद्धा सदाँर मारे गए और राव रणधोर जी तथा हम्मीर जी का बाल भी न बाँका हुआ, तब अलाउद्दीन घबरा उठा और फिर से अमीर उमरावों की सभा करके अपने उद्धार का उचित उपाय विचारने लगा ।

इसी समय राव रणधोर जी ने हम्मीर जी से कहा कि यदि चित्तौर से दोनों कुमार बुला लिए जायें तो अच्छा हो । इस पर राव जी ने भी “अच्छा” कह दिया । तब राव रणधोर ने रणथंभ का सब समाचार लिखकर चित्तौर भेज दिया । उक्त समाचार कं गते ही दोनों राजकुमार तीस हजार राठौर, अठ हजार चहुआन, और पाँच हजार प्रमार राजपूतों की सेना लेकर रणथंभ को चले आए । दोनों राजकुमारों को देखकर राव हम्मीर जी ने प्रसन्नतापूर्वक उन्हें गले लगा लिया और मीर महिमा को शरण देने के कारण अलाउद्दीन से रार बढ़ जाने का हाल भी विधिवत् वर्णन कर सुनाया, जिसे सुनते ही दोनों राजकुमारों का मुख प्रसन्नता से प्रफुल्लित हो उठा । उन्होंने वीर रस में उन्मत्त होकर मदान्ध मृगराज की भाँति भ्रमन हुए राव जी से कहा कि अब तक आपन परिश्रम किया अब तनिक हमारा भी पराक्रम देख लीजिए । यों कहकर दोनों राजकुमार रनिवास में गए । राव हम्मीर की

रानी आसुमती को चरण छूकर वे बोले कि हे माता आप कृपा कर हमारे मस्तक पर मौर बाँधकर हमें युद्ध करने का आशीर्वाद दीजिए । दोनों राजकुमारों को ऐसे वचन सुनकर आसुमती ने भी सुतस्नेह से सने हुए वाक्यों से संबोधन करते हुए उन्हें कलेजे से लगा लिया और अपने हाथों उनके शीश पर मौर बाँधा और केशरी बाना पहिनाकर उन्हें युद्ध में जाने को बिदा किया ।

जिस समय आसुमती कुमारों का शृङ्गार कर रही थी उस समय “छाड़गढ़” के किले में इस प्रकार घनघोर रव हो रहा था कि जिससे दिशाओं के दिग्पाल चौकन्ने हो रहे थे । यह खरभर देखकर अलाउद्दीन ने अपने मंत्री से पूछा कि आज “छाड़गढ़” में यह उत्सव किसलिये हो रहा है । तब एक अमीर ने उत्तर दिया कि राव हम्मीर जी के छोटे भाई के पुत्रों ने स्वयं युद्ध के लिये सिर पर मौर बाँधा है । उसी के उत्सव में यह गान वाद्य हो रहा है । यह सुनकर बादशाह ने जमाल खाँ को बुलाकर कहा कि तुमने ही पृथ्वीराज को कैद किया था आज भी अगर तुम दोनों राजकुमारों को पकड़ लोगे तो मेरी अत्यन्त प्रसन्नता के पात्र होगे । इस प्रकार समझा बुझाकर उस दिन के युद्ध के लिये अलाउद्दीन ने भीरु जमाल को सेना-नायक बनाया ।

इधर से दोनों राजकुमार केशरिया बाना पहिने, सीस पर मुकुट, हाथों में रण कंकण बाँधे अपने अपने तेज तुरंगों पर सवार सोलह हजार राजपूतों की सेना के बीच में ऐसे भले

मालूम देते थे मानों रणबाँकुरे देवताओं के दल में इंद्र और कुबेर सुशोभित हो रहे हों। दोनों वीर सेना सहित उज्ज्वल नेजे और खड्ग चमकाते हुए मुसल्मान सेना में इस प्रकार धँस पड़े जैसे काले काले बादलों में बिजली विलीन हो जाती है। इधर अल्लाउद्दीन से उत्तेजित किए-हुए यवन-दल ने उन राजकुमारों को घेर लिया और जमाल खाँ बड़े वेग से उन दोनों राजकुमारों पर दूटा। वे वीर राजकुमार भी बड़ी धीरता से उसका सामना करने लगे। यह देखकर राव हम्मीर जी ने वीर शंखोदर को कुमारों की सहायता के लिये भेजा। इस पर इधर से अरबों फौज का धावा हुआ। राजपूत और मुसलमान सेना में इस प्रकार विकट मार होने लगी कि किसी को अपना बिगाना न सूझता था। इसी समय जमाल खाँ ने अपना हाथी राजकुमारों के सामने बढ़ाया। तब कुमार ने तलवार का ऐसा हाथ मारा कि एक ही हाथ में लोहे का टोप कटते हुए मीर जमाल की खोपड़ी के दो टुक हो गए। जमाल खाँ को गिरता देखकर वालन्न खाँ ने धावा किया। इधर से वीर शंखोदर ने बढ़कर उसका मुख रोका। निदान सायंकाल तक बराबर लोहा भरता रहा। दोनों कुमार अपनी समस्त सेना के सहित स्वर्गगामी हुए। इस युद्ध में मुसलमानी फौज के ७५००० योद्धा खेत रहे।

इस प्रकार दोनों राजकुमारों के मारे जाने पर राव रणधीर ने क्रोधित होकर किले पर से आग बरसाना आरंभ कर

दिया । तब बादशाह ने कहला भेजा कि आप क्यों जान बूझकर जान देने पर उतारू हुए हैं, आपके लड़कर मर जाने से इस झगड़े का अंत न होगा । यदि आप राव हम्मीर जी को समझाकर मीर महिमा को मेरे पास भेजवा दें तो आप वा राव हम्मीर जी दोनों सुख से राज्य करें और हम दिखो चले जायँ । किंतु बादशाह के पत्र का राव रणधीर ने केवल यही उत्तर दिया कि क्षत्रियों का यह धर्म नहीं है कि विषय सुख भोग की लालसा अथवा मृत्यु के डर से वे अपने धारण किए हुए धर्म को त्याग दें । राव रणधीर की ओर से इस प्रकार कोरा उत्तर पाकर अलाउद्दीन ने अपनी फौज को भी छाड़ के किले पर आक्रमण करने की आज्ञा दी । अलाउद्दीन की आज्ञा पाते ही मुसल्मानी फौज ने टिड्डी दल की तरह उमड़कर किले को चारों ओर से घेर लिया और वे किले पर से चलते हुए गोले, गोली, बाण, बछ्छों की विषम बैछार की कुछ भी परवाह न करके किले पर चढ़ दौड़े । मुसल्मानी सेना जब किले में घँस पड़ी तब राजपूत लोग सर्वथा प्राण का मोह छोड़कर तलवार से काम लेने लगे । दोनों में अग्न्याँछों का संचालन बिल्कुल बंद हो गया । केवल तबल, तलवार, बरछी, कटार, सेल से काम लिया जाने लगा । इसी रेलापेल में बादशाह के निज पेशकार (बगल) ने राव हम्मीर की तलवार के सामने आने की हिम्मत की किंतु वीर रणधीर के एक ही वार में उसके जीवन का वारा न्यारा हो गया, इस-

लिये उसके सहकारी रूमी सर्दार ने अपने ५० बलवान् योद्धाओं सहित रणधीर जी को घेर लिया । राव रणधीर ने इन पचासों सिपाहियों को मारकर रूमी सर्दार को भी दो टुक कर दिया । इसी प्रकार मार काट होते हुए राव रणधीर सहित जितने राजपूत वीर उस किले में थे सबके सब मारे गए और छाड़गढ़ का किला बादशाह के हाथ आया । इस युद्ध में शाही फौज के दो बड़े बड़े सर्दार और एक लाख रूमी सैनिक खेत रहे और राव रणधीर के साथी ३०००० राजपूत काम आए । यह छाड़गढ़ का अंतिम युद्ध चैत्र सुदी ८ शनिवार को हुआ । बीस हजार केवल राजपूत मारे गए और एक हजार राजपुतानी स्त्रियाँ स्वयं जलकर भस्म हो गईं ।

छाड़गढ़ का किला फतह करके अलाउद्दीन ने अपने लश्कर की बाग रणार्थभ गढ़ की ओर मोड़ी और कुवार सुदी ८ शनिवार को किले के चारों तरफ घेरा डालकर दूत के हाथ राव हम्मीर जी के पास कहला भेजा कि अब भी यदि महिमाशाह को मेरे पास भेज दो तो मैं बिना किसी रोक टोक के दिल्ली चला जाऊँ । दूत की ऐसी बातें सुनकर राव हम्मीर जी ने कहा—रे मूर्ख दूत, मैं तुझसे क्या कहूँ तेरे स्वामी अलाउद्दीन का मुझसे बार बार ऐसा कहला भेजना उचित नहीं है । विग्रह का निरधारण किया जाता है तो केवल इसलिये कि जिसमें बंधु बांधवों का रक्तपात न हो किंतु अब मुझे इस बात का सोच बाकी न रहा । राव रणधीर सा चाचा और

कुलदीपक दोनों कुमार भी जब इस युद्धाग्नि में अपने प्राण होम कर चुके तब मुझे अब सोच ही किस बात का है । जा तू अपने स्वामी से कह दे कि अब कभी मेरे पास सँदेसा न भेजे । दूत ने वहाँ से आकर राव जी के वचन ज्यों के त्यों बादशाह से कह सुनाए । यह सुनकर अलाउद्दीन ने उसी समय गोलंदाजों को बुलाकर हुक्म दिया कि यहाँ से ऐसा गोला मारो कि किले के बुजों पर रखी हुई तोपें ठस होकर शांत हो जायँ । गोलंदाजों ने बादशाह की आज्ञा पालन करने के लिये यथासाध्य चेष्टा की किंतु वह निष्फल हुई । साथ ही किले पर से उतरे हुए गोलों की मार से लश्कर की बहुत सी तोपें ठस होकर चरख पर से गिर पड़ीं । यह देखकर बादशाह की बुद्धि “किंकर्तव्यविमूढ़” हो गई । वह नाना प्रकार के तर्क वितर्क करता हुआ अपने कर्तव्य पर पछताने लगा । यह देखकर उसके वजोर ने उसे समझाया और रात्रि को किले की खाई पर पुल बाँधकर किले पर चढ़ जाने का मत पक्का किया, किंतु पानी की बाढ़ अधिक होने के कारण मुसल्मान सेना को उससे भी हारना पड़ा, तब तो बादशाह अखंड रूप से डटकर रह गया और किले पर आक्रमण करने के लिये उपयुक्त समय आने की प्रतीक्षा करने लगा ।

एक दिन राव हम्मीर जी ने किले के सबसे ऊँचे हिस्से पर सभामंडप सजाया । उस सभामंडप में सगे संबंधियों सहित बैठा हुआ राव हम्मीर ऐसा ज्ञात होता था जैसे देव-

ताओं के बीच में इंद्र शोभित होता है । स्वर्ण सिंहासन पर बैठे हुए राव हम्मीर जी के सम्मुख चंद्रकला नामक वेश्या नृत्य कर रही थी । चंद्रकला के प्रत्येक गीत से अलाउद्दीन की अपमानसूचक ध्वनि निकलती थी । साथ ही इसके बादशाह की ओर पदाघात करके उसने ऐसा विलक्षण कटाक्ष किया कि जिसे देखकर रावजी की सब सभा में आनंद सूचक एक बड़ी भारी ध्वनि हुई । यह देखकर अलाउद्दीन से न रहा गया । तब उसने कहा कि यदि कोई इस वेश्या को बाण से मारकर राव हम्मीर के रंग में भंग कर दे तो मैं उसे बहुत कुछ पारितोषिक दूँ । यह सुनकर मीर महिमा के भाई मीर गभरू ने कहा कि मैं श्रीमान् की आज्ञा का प्रतिपालन कर सकता हूँ, किंतु खो पर शस्त्र चलाना वीरों का काम नहीं है । इसलिये उस वेश्या को जीव से न मारकर केवल उसका अहित किए देता हूँ । यों कहकर मीर गभरू ने एक ऐसा बाण मारा कि जिससे उस वेश्या के पाँव में ऐसी चोट लगी कि वह तुरत लोट पोट हो गई । वेश्या को गिरते देखकर राव जी आश्चर्य और क्रोध में आकर चारों ओर देखने लगे । तब मीर ने हाथ बाँधकर अर्ज किया कि यह बाण मेरे भाई मीर गभरू का चलाया हुआ है । श्रीमान् इस पर किसी प्रकार का खेद न करें और तनिक मेरा पराक्रम देखें । यह कहकर मीर महिमाशाह ने एक ऐसा बाण मारा कि अलाउद्दीन के सिर पर से उसका मुकुट उड़ गया ।

यह देखकर वजीर महरमखाँ ने अलाउद्दीन से कहा कि अब यहाँ ठहरना उचित नहीं है । इस महिमा के संचालन किए हुए बाण से यदि आप बच गए तो यह उसने पहले निमक का निर्वाह किया है । यदि वह हम्मीर का हुक्म पाकर अब की जो लक्ष्य करके बाण मारे तो आपके प्राण बचने कठिन हैं, अतएव मेरा तो यही विचार है कि अब यहाँ से दिल्ली को कूच कर जाना ही भला है । वजीर महरमखाँ की बात मानकर बादशाह ने उसी समय कूच की तय्यारी की जाने की आज्ञा दी । इधर जिस समय सारे लश्कर में चल-चल का समान हो रहा था उसी समय राव हम्मीर जी के सामान के कोषाध्यक्ष सुरजनसिंह ने आकर बादशाह के पैरों पर शिर धर दिया और कहा कि यदि श्रीमान् मुझे छाड़गढ़ का राज्य दे देना स्वीकार करें तो मैं सहज ही में रणथंभ के अजेय दुर्ग पर आपकी फतह करवा दूँ । इस पर अलाउद्दीन ने उसे बहुत कुछ ऊँची नीची दिखाकर कहा—सुरजनसिंह यदि मैं रणथंभ पर विजय पा जाऊँ तो छाड़ का राज्य तो दूँगा ही इसके अतिरिक्त तुम्हें इस प्रकार संतुष्ट करूँगा कि जिसमें तुम्हारा मन हर तरह से राजी हो जाय ।

बादशाह की बातों में आकर कृतघ्न सुरजन में रणथंभ को फतह करवाने का बीड़ा उठा लिया । उसने उसी समय राव हम्मीर जी के पास जाकर कहा कि “श्रीमान् रसद बर-दास्त और गोली बारूद के खजाने चुक गए हैं, इसलिये किले

में रहकर अपने हठ एवं मान मय्यादा की रक्षा होनी कठिन है, इसलिये वचन मानकर महिमाशाह को अलाउद्दीन के पास भेजकर उससे सुलह कर लीजिए । सुरजन की बात पर राव हम्मीर जी ने विश्वास न किया और आप स्वयं “जौरा भौरा” * (खजाने) के पास जाकर जाँच की तो सुरजन का कहना वास्तव में सत्य पाया । तब तो रावजी को अत्यंत शोक और आश्चर्य ने दबा लिया । यह देखकर महिमाशाह ने कहा कि यदि श्रीमान् आज्ञा दें तो अब मैं स्वयं अलाउद्दीन से जा मिलूँ जिससे वह दिल्ली चला जाय । यह सुनते ही राव जी के नेत्रों से आग की चिनगारियाँ निकलने लगीं । उन्होंने कहा—महिमाशाह क्या फिर फिर यह समय आवेगा ? यदि मैं तुम्हें शाह के पास भेजकर रणथंभ का राज भोग करूँ तो संसार मुझे क्या कहेगा ? क्या इस कायर कर्तव्य से मेरा चित्रिय कुल सदैव के लिये कलंकित न होगा ? अब तो जो कुछ होना था हो चुका ।

इधर सुरजन ने बादशाह के पास आकर कहा कि मैं एक ऐसा अद्भुत कुचक्र चला चुका हूँ कि इस समय आप जो कुछ कहेंगे राव जी तुरंत स्वीकार कर लेंगे । यह सुनकर अला-

* किंतु “जौरा, भौरा” (खजाने) वास्तव में खाली नहीं हुए थे । उनमें का सब माल सामान नीची तह में ज्योंका त्यों भरा पड़ा था । राव हम्मीर जी को धोखा देने के लिये सुरजन ने ऊपर से सूखा चमड़ा डलवा दिया था जो कि पत्थर डालने पर खड़क उठा ।

उद्दीन ने हम्मीर जी के यहाँ कहला भेजा कि वह अपनी देवल रानी की बेटी चंद्रकला को मुझे देकर मुझसे क्षमाप्रार्थी हो तो मैं उस पर दया कर सकता हूँ। यह सुनते ही राव हम्मीर जी के क्रोध और शोक का ठिकाना न रहा। उन्होंने इसके उत्तर में अलाउद्दीन के पास कहला भेजा कि यदि उसे अपनी जान प्यारी है तो चार पीरों सहित अपनी प्यारी चिमना बेगम को मेरे पास भेजकर आप दिल्ली चले जावें अन्यथा मेरे हठ का हटाने की आशा न करें। हम्मीर जी के यहाँ से इस प्रकार कड़ाचूर उत्तर पाकर बादशाह ने कुपित होकर सुरजन से कहा क्यों रे भूठे ! तू यही कहता था कि राव हम्मीर अब आजिज आ जायगा। इस अपमान से उस दुष्ट ने कुपित होकर कहा कि अच्छा अब देखिए क्या होता है।

इधर राव जी बादशाह के दूत को उपर्युक्त उत्तर देकर तन चीण मन मलिन शोकातुर एवं व्यग्रचित्त अवस्था में रन-वास में गए और रानी जी से उक्त बात की वार्ता कर कहने लगे—“हे प्रिये ! अब क्या करूँ ? क्या महिमाशाह को अलाउद्दीन के पास भेजकर ही अपनी प्रजा की रक्षा करूँ ?” रावजी के ऐसे वचन सुनकर रानी ने क्रोध, शोक, लज्जा एवं आश्चर्य से भरे कंठ कहा—“हे राजन्, वीरकुल-शिरोमणि ! आज आपको बादशाह से लड़ते लड़ते १२ वर्ष हो गए। आज आपको यह कुलधर्म के विरुद्ध सलाह देने-वाला कौन है ? हे प्राणप्यारे यह संसार सब भूठा है

अतएव इस संसार चक्र से संचालित दुःख और सुख भी अनित्य है, परंतु एक मात्र कीर्ति ही ऐसी वस्तु है कि जो इस संसार के अप्रतिहत चक्र से कुचली नहीं जा सकती । हे राजन् ! अपने हाथ से शीश काटकर देनेवाले राजा जगदेव, विद्याविशारद राजा भोज, परदुखभंजन राजा विक्रमादित्य, दानवीर कर्ण इत्यादि कोई भी इस संसार में अब नहीं हैं परंतु उनके यश की पताका अब तक अक्षय स्वरूप से उड़ रही है और सदा उड़ेगी । महाराज धन यौवन सदैव नहीं रहता, मनुष्य ही क्या, आकाश में स्थित सूर्य और चंद्रमा भी एकरस स्थिर नहीं रहते । जीवन, मरण, सुख, दुःख यह सब होनहार के अधीन है । और जब होनहार होनी ही है तब अपने कर्तव्य से क्यों चूकिए । श्रीमन् आप इस समय अपने पूर्व पुरुष सोमेश्वर, पृथ्वीराज, जैतराव इत्यादि की वीरता और उनकी अक्षय कीर्ति का स्मरण कीजिए और तन धन सब कुछ जाय तो जाय परंतु शरणागत महिमा-शाह और अपने धर्म हठ को न जाने दीजिए ।”

रानी की इस प्रकार उच्च उत्तम शिक्षा सुनकर राव जी के मुखारविंद पर प्रसन्नता की झलक पड़ गई । उन्होंने कहा “धन्य प्रिये ! बस मैं इतना ही चाहता था, अब मैं निश्चिततापूर्वक रण में प्राण दे सकता हूँ ।” इस बात के सुनते ही रानी मूर्छित होकर जमीन पर गिर पड़ी, फिर कुछ सम्बलकर मधुर स्वर से बोली—“स्वामी, आप युद्ध कीजिए मैं आपसे पहले ही शाका करूंगी ।”

रानी जी से इस प्रकार बातें करके राव जी ने दरबार में आकर राज्य कोष को खोलवाकर याचकों को अयाची करने की आज्ञा दी और सब राजपूत सूर सामंतों के सामने “चतुरंग” से कहा कि अब मैं अपना कर्तव्य पालन करने पर उद्यत हूँ, रणथंभ की प्रजा और राजकुमार ‘रतन’ की रक्षा आप कीजिए। उत्तम होगा कि आप रतन को लेकर चित्तौर चले जायँ। इस पर यद्यपि चतुरंग ने अनाकानी करके अपने को भी राव जी के साथ युद्ध में शामिल रखना चाहा किंतु राव जी के आग्रह करने पर उसे वही मानना पड़ा अर्थात् ५००० सैनिकों सहित ‘रतन’ को लेकर वह चित्तौर की तरफ गया।

जब चतुरंग अल्हणपुर तक पहुँच गए तब राव हम्मीर जी ने अपने सब सद्दारीं से कहा कि “अब धर्म के लिये प्राण न्यौछावर करने का समय निकट आ गया है अतएव जिनको मृत्यु प्यारी हो वे मेरे साथ रहें और जिन्हें जीवन प्यारा हो वे खुशी से घर चले जायँ। राव हम्मीर जी के इस प्रकार कह चुकने पर मीर महिमाशाह ने सब सूर वीर सद्दारीं की तरफ से प्रतिनिधि स्वरूप हो अर्ज किया—हे राव जी ! ऐसा कौन पुरुष कुलांगार होगा जो आपको इस समय रणथंभ में छोड़कर अपने जीवन का सुख चाहेगा। देवता, मनुष्य, शूरवीर पुरुष किसी का भी जीवन स्थिर नहीं है। एक दिन मरेंगे सब, तब फिर ऐसे सुअवसर की मृत्यु

को कौन छोड़े ? मरने से सब डरते हैं, संसार में केवल सती स्त्री और शूर वीर पुरुष ही ऐसे हैं जो मृत्यु को सदैव आलिङ्गन करने के लिये प्रस्तुत रहते हैं एवं उन्हें मृत्यु में ही आनंद आता है ।

दूसरे दिन अरुणोदय के होते ही राव जी ने शौचादि से निश्चित हो गंगाजल से स्नान कर शरीर में सुगंधित गंधादि लेपन कर केशर सने पीले वस्त्र धारण किए, माथे पर रत्न जटित मुकुट बाँधा और शूर वीरों के छत्तीसों बाने (हरबे) लगाकर प्रसन्नतापूर्वक वे ब्राह्मणों को सम्मान सहित दान देने लगे । इधर बात की बात में राठौड़, कूरम, गौड़, तोवर, पड़िहार, पारैच, पुंडीर, चहुआन, यादव, गहिलोत, सेंगर, वार इत्यादि जाति के कुलीन शूर वीर राजपूत लोग अपने अपने आने बाने से सजे हुए रणरंग में रत मदमाते गयंद की भाँति आकर राव जी के पास इकट्ठे होने लगे । उन आगत शूर वीर राजपूतों के माथे पर टेढ़ी पगड़ी, ललाट में केशर सौँधे गंध की त्रिपुंड, गले में तुलसी और रुद्राक्ष की माला, सिर पर लोहे के टोप, शरीर पर झिलम-बक्कर, हाथों में इस्ताने, और यथा अंग छत्तीसों बाने सजे हुए थे । वे वीर योद्धा लोग साक्षात् शिव के गण से सुशोभित होते थे । इधर तो इन सब शूर वीरों सहित राव जी गणेश, शिव, भगवती इत्यादि देवताओं का पूजन और परिक्रमा कर रहे थे उधर राजमहल के द्वार पर मेघ के समान बड़े दुरद दंतारे मतवारे हाथियों और वायु के वेग

को उल्लंघन करनेवाले घोड़ों का घमासान जम रहा था । सूर्य निकलते निकलते राव हम्मीर जी अपने वीर योद्धाओं सहित इष्टदेव का स्मरण करते हुए राजमहल से बाहर हुए, राव जी के आते ही सब सेना व्यूहबद्ध हो गई, सबसे आगे फड़वाली साक्षात् काल की सी बिकराल कालिका का अवतार तोपें, उनके पीछे हथनार उठनार जंबूर, तिनके पीछे हाथी, तिनके पीछे ऊँट, घुड़सवार और फिर तुबकदार पैदल इत्यादि थे । उस समय बाल सूर्य की सुनहरी किरणों के पड़ने से सब साज बाज से सुसज्जित चंचल घोड़े और गंधमय गंडस्थलवाले मतवाले हाथी बड़े ही भले मालूम होते थे । जिस समय राव जी की सवारी संपूर्ण रूप से सुसज्जित हो गई तो नौबत, नगाड़े, शंख, सहनाई, रणतुर, श्रृंगी, डफ इत्यादि रण-वाद्य बजने लगे, कड़खेत उच्च स्वर से कड़खे गा गाकर सहज कठोरहृदय शूर वीरों के चित्त को उत्कर्ष देने लगे । इधर ये शूर वीर लोग उमंग में भरे हुए आगे बढ़ते जाते थे उधर आकाश में अप्सराओं के वृंद के वृंद इस समर में शत्रु के सम्मुख प्राण को परित्याग करनेवाले वीरों को अपने हृदय का हार बनाने के लिये आकाश मार्ग से आ रही थीं । जिस प्रकार ये वीर लोग इधर झिलम, टोप, बखतर, दस्ताने, कलगी, तुर्रा, सरपेच, तीर, तुबक, तेगा, तलवार, तपल, तोमर, तैरा, नेत, बरछी, बिछुआ, बाँक, छुरी, पिस्तौल, पेशकब्ज, कटार, परिघ, फरसा, दाव इत्यादि अस्त्र शस्त्र से सजे हुए थे

उसी प्रकार उस तरफ सर्वाङ्गसुंदरी नवयौवना अप्सराएँ भी सीसफूल, दावनी, आड़, ताटंक, हार, बाजूबंद, जोसन, पहुँची, पाजेब इत्यादि गहने और नाना प्रकार की रंग बिरंगी कंचुकी, चोली, चौबंद इत्यादि वस्त्रों को धारण किए हुए आकाश-मार्ग में स्थित थीं ।

इस प्रकार जंग-रंगराते मदमाते राजपूत इधर से बड़े और उधर से इसी तरह बाणों की बौछार करती हुई मुसल्मान सेना भी पहाड़ों की कंदराओं में से टिड्डो सी निकल पड़ी । दोनों सेनाओं में प्रथम तो धुँवाधार तोप, तुबक, भौका, पिस्तौल इत्यादि अग्न्यस्त्रों से वर्षा हुई, परंतु जब वीरत्व के उत्साह से प्रोत्साहित हुई दोनों सेनाएँ समुद्र की तरह उमड़कर एक दूसरे से खिलत-मिलत हो गईं उस समय एकदम तेगा, तलवार, तवल, छुरी, बिछुआ, कटार, गुर्ज, फर्सा इत्यादि की मार होने लगी । क्षण मात्र में वह आमोदमय रणभूमि साक्षात् करुणा और वीभत्स रस का समुद्र हो गई । जहाँ तहाँ घायल और मृतक शूर वीर सिपाहियों के शवों के ढेर के ढेर नजर आते थे । मृतक हाथी, घोड़ों के शव जहाँ तहाँ चट्टानों से झीखते थे और बहुतेरे नर-देह-रक्त की नदी में जहाँ तहाँ बहे जाते थे । उन पर बैठकर मांस भक्षण करते हुए कौवे, चील्ह, गिद्ध, कुही, बाज, कुर्रा और शृगाल इत्यादि जंतु अत्यंत भयानक रव मचाते थे । इस प्रकार कठिन मार मचने पर मुसल्मान सेना के पैर उखड़ पड़े । यह देखकर बादशाह ने अपनी सेना को ललकारते हुए

वजीर से कहा कि अब क्या किया जाय । तब वजीर ने कहा कि इस समय अपनी सेना की चार अनी करके प्रत्येक का भार दीवान, बाँके बगसी, मैं और आप स्वयं लेकर चार तरफ से आक्रमण करें, तब ठीक होगा । बादशाह ने उसकी सम्मति मानकर वैसाही किया । इस बार उपयुक्त व्यूहबद्ध होने के कारण मुसल्मान सेना ने बड़ी वीरता दिखाई । बादशाह ने पुकारकर कहा कि मेरा जो उमराव हम्मीर को पकड़कर लावेगा उसको बारह हजार की जागीर और दरबार में सबसे बड़ा मंसब मिलेगा । यह सुनकर अब्दुल नामक एक उमराव अपनी सेना सहित बड़े वेग से आगे बढ़ा । इधर राजपूत सेना ने उसके रोकने का यथासाध्य प्रयत्न किया, इस होड़ हैस में बड़ी कड़ी मार हुई, दोनों ओर के कई कर्मंद खड़े हुए । जब राव जी की तरफ के २०० सवार तीस हाथी और ६०० वीर जोधा काम आ चुके तब शेख महिमाशाह ने राव हम्मीर को सिर नवाकर कहा कि श्रीमान् अब बहुत हुआ । अब जरा मेरा भी पराक्रम देखिए । यह कहता हुआ वह बीच समरभूमि में आ खड़ा हुआ और बादशाह को संबोधन करके बोला, मैं महिमाशाह जो आपका अपराधी हूँ यह खड़ा हूँ अब पकड़ते क्यों नहीं ! अथवा जो कुछ करना हो करते क्यों नहीं ? अब अपनी इच्छा को पूर्ण कीजिए ।

महिमाशाह के ऐसे सगर्व वचन सुनकर अलाउद्दीन ने खुरासान खाँ की ओर देखकर कहा कि जो कोई इस शेख को

जीवित पकड़ लावेगा उसे तीस हजार की जागीर, बारह हजार मंसब, नौबत निशान और एक तलवार दूँगा। इस पर सइकी फौज के साथ इधर से खुरासान खाँ और राव हम्मीर की जय जयकार बोलते हुए उधर से महिमाशाह ने एक दूसरे पर आक्रमण किया। बादशाह ने अपनी सेना को उत्तेजित करने के लिये कहा कि इसको शीघ्र पकड़ो। शेख और खुरासान की सेना अनी तो एक दूसरे पर बाणों की वर्षा करने लगी और इधर ये दोनों वीर स्वयं आमने सामने जुटकर एक मात्र खड्ग के सहारे पर खेलने लगे। अंत में महिमाशाह ने खुरासान खाँ को मार गिराया और उसके निशान इत्यादि ले जाकर राव जी को नजर किए। महिमाशाह ने राव हम्मीर जी के सम्मुख खड़े होकर कहा हे शरणागत पण्डित वीर चहुआन आपको धन्य है। आप राज्य, परिवार, स्त्री और सब राजसी वैभवों को तिलांजलि देकर जो एक मात्र मेरी रक्षा करने के लिये अपने हठ से न हटे यह अचल कीर्ति आपकी इस संसार में सनातन स्थिर रहेगी। उसने आँसू भर कहा—

“हाय ! अब वह समय कब आवेगा कि मैं पुनः अपनी माता के गर्भ से जन्म धारण कर आपसे फिर मिलूँ।” यह सुनकर राव जी ने कहा हे वीर मीर, अधीर मत हो। जीवन मरण यह संसार का काम ही है इस विषय का पश्चात्ताप ही क्या ? फिर हम तुम तो एक ही अंश के अवतार हैं तो हम आप अवश्य एक ही में लीन होंगे अतएव इन निःसार बातों का

विचार करना तो वृथा ही है परंतु यह अवश्य है कि मनुष्य-देह धारणकर इस प्रकार कीर्ति संपादन करने का समय कठिनता से प्राप्त होता है ।

राव हम्मीर जी को उपर्युक्त वक्तव्य का अंत होते ही वीरोचित उत्कर्ष से भरा हुआ मीर महिमाशाह रणक्षेत्र के मध्य में आ उपस्थित हुआ । उसकी वरनी पर इधर से उसका छोटा भाई मीर गभरू उसके सामने जा जुटा । जिस समय ये दोनों वीर बांधव एक दूसरे पर प्रहार करने को थे कि अलाउद्दीन ने हँसकर कहा “मीर महिमाशाह मैं सच्चे दिल से तेरी तारीफ करता हूँ । जिस वक्त से तूने दिल्ली छोड़ी उस वक्त से आज तक मुझको सिर न झुकाया, बस अब तुम खुशी से मेरे पास चले आओ मैं तुम्हारा कुसूर माफ करता हूँ और यह बेगम भी तुमको दे देना कबूल करता हूँ । साथ ही इसके गोरखपुर का परगना जागीर में दूँगा ।” इस पर महिमाशाह ने मुस्कराते हुए सहज स्वभाव से उत्तर दिया कि अब आपका यह कहना वृथा है, आप जरा उन बातों का ख्याल भी तो कीजिए जो आपने उस समय कही थीं । यदि अब फिर से भी उसी माता की कुचि से जन्म लूँ तब भी राव जी को नहीं छोड़नेवाला हूँ ।

मीर महिमाशाह को बादशाह से बातें करते देखकर राव जी ने कुमक भेजी । इधर मीर गभरू ने भी कहा कि हे भाई, अब वृथा की दंत कथाओं के क्रंदन करने से क्या लाभ

है, आओ इस सुअवसर पर हम और आप दोनों अपने अपने धर्म को पालन करते हुए स्वर्ग की सीढ़ी पर पैर दें। यह कहते हुए दोनों भाई अपने अपने स्वामियों की जय जयकार मनाते हुए एक दूसरे से जुट पड़े। मीर गभरू ने अपने बड़े भाई महिमाशाह के पैर छूकर कहा “अब मुझे आज्ञा हो।” इसके उत्तर में महिमाशाह ने कहा कि “स्वामिधर्म पालन में दोष ही क्या है ?” पहले तो दोनों भाई परस्पर खड़ से लड़ते रहे किंतु जब बहुत देर हो गई तब दोनों अपने अपने घोड़ों पर से उतरकर परस्पर द्वंद्व युद्ध में प्रवृत्त हुए, और दोनों सेनाओं के देखते ही दोनों वीर भाई स्वर्ग को सिधारे।

जब महिमाशाह मारा जा चुका तब अलाउद्दीन ने राव हम्मीर जी से कहा कि अब आप युद्ध न कीजिए मैं आपकी अक्षय वीरता से अत्यंत प्रसन्न होकर आपको अपनी तरफ से पाँच परगने और देना स्वीकार करता हूँ और यह भी प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब मेरे रहते आप स्वच्छंदतापूर्वक रणथंभ का राज्य कीजिए। इसके उत्तर में हम्मीर जी ने कहा कि अब आपका यह विचार केवल विडंबना है। अब जो कुछ भविष्य में होगा वही होगा, मैं इस क्षणभंगुर जीवन की अभिलाषा वा राज्यसुख के लोभ से अक्षय कीर्ति को त्यागनेवाला नहीं हूँ। रावण, दुर्योधन आदि वीरों ने कीर्ति के लिये ही तन को तिनका सा त्याग दिया, हम तुम दोनों एक ही पद्म ऋषि के अंश से उत्पन्न हैं, अतएव अब यही उचित है कि इस सुअवसर

पर समर भूमि में अनित्य शरीर को विसर्जन करके हम आप स्वर्ग में सदैव के लिये सहवास करें।

राव जी के ऐसे वचन सुनकर अलाउद्दीन ने अपनी सेना को आक्रमण करने की आज्ञा दी। उधर से राजपूत सेना भी प्राण का मोह छोड़कर मदान्मत्त मातंग की तरह मुसलमानों से जंग करने को वीरत्व के उमंग में भरी हुई उमड़ पड़ी। जिस समय इसी दिग्गजों के हृदय को कंपायमान करनेवाले रणवाद्यों को बजाती हुई दोनों सेनाएँ परस्पर मिल रही थीं उसी समय भोज नामक भीलों के सद्गुरु ने राव जी से अपने हरावल में होने की आज्ञा माँगी। रावजी ने कहा कि तुम चित्तौर की रक्षा करो। इस पर उसने उत्तर दिया कि मुझे श्रीमान् की आज्ञा मानने में किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है, परंतु मैंने जो आजन्म श्रीमान् की चरण-सेवा की है वह इसी अवसर के लिये, अतएव अब मुझे आज्ञा हो क्योंकि मैं अपने कर्तव्य के ऋण से उन्मृण होऊँ। यों कहकर भोजराज अपनी भील सेना सहित आगे बढ़ा। उधर से मीर सिकंदर हरावल में हुआ। मुसलमान सेना से तोप की गुरावें छुटती थीं और भील तीरों की वर्षा करते थे। इसी समय भोजराज और सिकंदर का मुकाबला हुआ। इधर से भोजराज ने सिकंदर पर कटार का वार किया और उसने तलवार चलाई, निदान दोनों वीर एक ही समय धराशायी हुए। इस युद्ध में भोजराज के साथवाले दो हजार भील और सिकंदर की तरफ के तीस हजार कंधारी योद्धा काम आए और शाही सेना भाग उठी।

उसी समय राव हम्मीर जीने भोजराज की लाश के पास हाथी जा डटाया और उस वीर के मृतक शव को देखकर राव जी ने आँसुओं से नेत्र डबडवाई हुई अवस्था में कहा—धन्य हो वीर वर ! तुमने स्वामिसेवा में प्राण देकर अतुलित कीर्ति को संपादन किया । राव जी को रणक्षेत्र के बीच अचल भाव से स्थित देखकर अलाउद्दीन ने अपने भागते हुए वीरों से कहा—“रे मूर्ख मनुष्यो, तुमने जिस मेरे कारण आजन्म आनंद से जीविका निर्वाह की, अहर्निश आनंद आमोद में व्यतीत किए, आज तुम्हें लड़ाई का मैदान छोड़कर भागते हुए शरम नहीं आती ।” इतना सुनते ही मुसलमान सेना भूखे बाघ या फुफकारते हुए सर्प की तरह लौट पड़ी । यहाँ राजपूत तो सदैव प्राण हथेली पर रखे हुए थे, बस दोनों में इस तरह कड़ाचूर मार पड़ी कि रणभूमि में रक्त की नदी बह निकली, उस वेग से बहती हुई शोणित सरिता में जहाँ तहाँ पड़े हुए हाथियों के शव वास्तविक चट्टानों से भासित होते थे, वीरों के हाथ पाँव जंघा इत्यादि कटे हुए अवयव जलचर जीव से तैरते ज्ञात होते थे, वीरों के सचिवकन कंश सिवार और ढाल कच्छप सी प्रतीत होती थी, नव युवा वीरों के कटे हुए मस्तक कमल से और उनके आरक्त बड़े बड़े नेत्र खंजन से खिलते हुए नजर आते थे । इस पसर में ७५ हाथी, सवा लाख घोड़े, ७०० निशानवाले और अगणित योधा काम आए । सिकंदर शाह, शेर खाँ, महरम खाँ, मोहब्बत खाँ, मुदफ्फर या मुजफ्फर खाँ,

नूर खाँ, निजाम खाँ इत्यादि मुसलमान वीर मारे गए और राव जी की तरफ के भी नामी नामी चार सौ योद्धा खेत रहे ।

इसी मारामार में राव हम्मीर जी ने अपने हाथी को अलाउद्दीन के सम्मुख डटाए जाने की आज्ञा दी और कहला भेजा कि अब तक वृथा ही रक्त प्रवाह हुआ है अब आइए हमारा आपका द्वंद्व युद्ध हो और सब द्वंद्व समाप्त हो । राव जी का यह सँदेसा सुनकर अलाउद्दीन ने मंत्रों से पूछा कि अब क्या करें । तब मंत्रों ने उत्तर दिया कि उस चहुआन के बल प्रताप एवं पराक्रम से आप अपरिचित नहीं हैं अतएव मेरे विचार में तो यही आता है कि अब आप संधि कर लें तो सर्वथा भला है । निदान अलाउद्दीन ने वजीर की बात मानकर हम्मीर जी के पास संधि का प्रस्ताव भेजा । परंतु उस वीर हम्मीर ने उत्तर दिया कि युद्धस्थल में उपस्थित होकर मित्रता का प्रस्ताव करना भला कौन सी नीति और बुद्धिमत्ता का काम है । शत्रु के सम्मुख विनती करना नितांत कातरता अथवा दंभमय चतुरता का पता देता है ।

बादशाह के दूत को इस प्रकार नीतियुक्त उत्तर देकर राव जी ने अपने राजपूत वीरों को आज्ञा दी कि “हे वीरवर योद्धाओं, अब मेरी यही इच्छा है कि आप तोप, बाण, हथ-नार, चादर, जंबूर, बंदूक, तमंचा, बरछा, सेल, साँग इत्यादि हथियारों को त्यागकर केवल तलवार, छुरी, कटारी और विषाण से काम लो अथवा मल्लयुद्ध द्वारा ही अपने पराक्रम

का परिचय देते हुए स्वर्ग की सीढ़ी पर पैर दो । साथ ही मेरी यह भी आज्ञा है कि बादशाह को न मारना ।”

राव जी के इतना कहते ही राजपूत रावत, महावत से हकारे हुए हाथी की तरह अपने अपने उज्ज्वल शस्त्रों को चमकाते हुए चल पड़े । क्षुधित मृगराज की भाँति रणबाँकुरे राजपूतों का वेग मुसलमानी सेना क्षण भर न सह सकी और बड़े बड़े सैनिक अमीर उमरा भेड़ की भाँति भाग उठे । राजपूत सेना ने अलाउद्दीन के हाथी को घेर लिया और उसे राव हम्मीर जी के सम्मुख ले आए । राव जी ने विवश हुए बादशाह को देखकर अपने सद्दारीं से कहा कि यह पृथ्वीपति बादशाह है । अदंड्य है । इसलिये आप लोग इसे योंही छोड़ दीजिए । निदान राजपूत सद्दारीं ने राव जी की आज्ञा मानकर अलाउद्दीन को उसकी सेना में पहुँचा दिया और वह भी उसी समय वहाँ से कूचकर दिल्ली को चला आया ।

उधर राव हम्मीर जी ने अपने घायलों को उठाकर और बादशाही सेना से छीने हुए निशान लिवाकर निज दुर्ग की तरफ फेरा किया ।

राव जी ने भूलवश, अथवा विजय के उत्साहवश, शाही निशानों को आगे चलने की आज्ञा दी, यह देखकर रानी जी ने समझा कि रावजी खेत हार गए और यह किले पर शाही सेना आ रही है । ऐसा विचार कर रानीजी ने अन्यान्य सब परिवार की वीर महिलाओं सहित प्रज्वलित अग्नि में

शरीर होम कर शाका किया । जब राव जी ने किले में आकर यह दृश्य देखा तो सब सदर्शों और सैनिकों को आज्ञा दी कि वे चित्तौर में जाकर कुँअर रतनसेन की रक्षा करें और आप शिव के मंदिर में जाकर नाना प्रकार के पूजन अर्चन करके यह वरदान माँगा कि अब जो मैं पुनः जन्म धारण करूँ तो इसी प्रकार वीर क्षत्रिय कुल में । और खड्ग खींचकर अपने ही हाथों से कमल के पुष्प के समान अपना माथा उतार के शिव जी को चढ़ा दिया ।

जब यह समाचार अलाउद्दीन के कर्णगोचर हुआ तो राव जी के कर्तव्य पर पश्चात्ताप करता हुआ वह फौरन फिर आया और राव जी के सम्मुख खड़ा होकर अदब से प्रणाम करता हुआ बोला कि अब मुझे क्या आज्ञा है । यह सुनकर राव जी के मस्तक ने उत्तर दिया कि तुम जाकर समुद्र में शरीर छोड़ो तब हम तुम मिलेंगे । राव जी के शीश के वचन मानकर अलाउद्दीन ने वजीर महरम खाँ को आज्ञा दी कि वह सब लश्कर सहित दिल्ली जाकर “शाहजादा” अलावृत्त को तख्त पर बिठावे और वह आप उसी क्षण रामेश्वर को चला गया । वहाँ पर उसने रामेश्वर जी की पूजा की और उन्हीं का ध्यान और स्मरण करते हुए समुद्र में वह कूद पड़ा ।

इस प्रकार बादशाह के तन त्यागने पर राव हम्मीर जी और अलाउद्दीन और मीर महिमाशाह परस्पर स्वर्ग में गले मिले और अप्सराओं और देवताओं ने पुष्पवृष्टि की ।

इस प्रकार राव हम्मीर जी का यश कीर्तन सुनकर राव चंद्रभान जी ने कवि जोधराज को बहुत सा दान दिया, और सब भाँति से प्रसन्न किया ।

चैत्र सुदी तृतीया बृहस्पतिवार संवत् १८८५ को ग्रंथ पूर्ण हुआ ।

यह जोधराज कृत हम्मीररासो का सारांश हुआ । इसमें दी हुई ऐतिहासिक बातों पर विचार करने के पहले मैं एक दूसरे कवि की लिखी हुई हम्मीर राव की कथा का सारांश देना चाहता हूँ । नयनचंद्र सूरि नामक एक जैन कवि ने हम्मीर महाकाव्य नाम का एक ग्रंथ संस्कृत में लिखा है । नयनचंद्र जयसिंह सूरि का पौत्र था । यह ग्रंथ पंद्रहवीं शताब्दी का लिखा हुआ जान पड़ता है । सन् १८७८ में पंडित नीलकंठ जनार्दन ने इस काव्य का एक संस्करण छपाया जिसकी भूमिका में उन्होंने काव्य का सारांश दिया है । उससे नीचे लिखा वृत्तांत मैं हिंदी में उद्धृत करता हूँ । यहाँ पर इस ग्रंथ में दिया हुआ हम्मीरदेव के वंश का कुछ वृत्तांत दे देना उचित जान पड़ता है ।

चौहान वंश में दीक्षित वसुदेव नाम का एक पराक्रमी राजा हुआ । इसका पुत्र नरदेव था । इसके अनंतर हम्मीर तक वंशक्रम इस प्रकार है—

चंद्रराज

जयपाल

जयराज

सामंतसिंह

गुयक

नंदन

वप्रराज

हरिराज

सिहराज—इसने हेनिम नाम के मुसल्मान सर्दार को मारा ।

भीम—सिंह का भतीजा और उसका दत्तक पुत्र ।

विग्रहराज—गुजरात के मूलराज को मारा ।

गंगदेव

वल्लभराज

राम

चामुंडराज—हेजमुदीन को मारा ।

दुर्लभराज—शहाबुद्दीन को जीता ।

दुशल्ल—कर्णदेव को मारा ।

वीसलदेव —शहाबुद्दीन को मारा ।

पृथ्वीराज—प्रथम

अल्हण

अनल—अजमेर में तालाब खुदवाया ।

जगदेव

वीशल

जयपाल

गंगपाल

सोमेश्वर—कर्पूरादेवी से विवाह किया ।

पृथ्वीराज—द्वितीय

हरिराज

गोविंद

बालहण—प्रह्लाद और वाग्भट्ट दो पुत्र हुए ।

प्रह्लाद

वीरनारायण—प्रह्लाद का पुत्र ।

वाग्भट्ट—बालहण का पुत्र ।

वाग्भट्ट के उत्तराधिकारी उनके पुत्र जैत्रसिंह हुए । उनकी रानी का नाम हीरादेवी था जो बहुत रूपवती और सर्वथा अपने उच्च पद के योग्य थी । कुछ काल में हीरादेवी गर्भवती हुई । उसकी इस अवस्था की वासनाओं से गर्भस्थित जीव की प्रवृत्ति और उसके महत्त्व का आभास मिलता था । कभी कभी उन्हें मुसलमानों के रक्त से स्नान करने की इच्छा होती । उसके पति उसकी अभिलाषाओं को पूरा करते; अंत में, शुभ घड़ी में, उसको एक पुत्र उत्पन्न हुआ । पृथ्वी के चारों दिशाओं ने सुंदर शोभा धारण की; सुखद समीर बहने लगा; आकाश निर्मल हो गया; सूर्य मृदुलता से चमकने लगा; राजा ने अपना आनंद ब्राह्मणों पर सुवर्ण बरसाकर और देवताओं की वंदना करके प्रगट किया । ज्योतिषियों ने बालक के मुहूर्तस्थान में पड़े हुए नक्षत्रों के शुभ योग का विचार

करके भविष्यद्वाणी की कि कुमार समस्त पृथ्वी को अपने देश के शत्रु मुसल्मानों के रक्त से आर्द्र करेगा । बालक का नाम हम्मीर रखा गया । हम्मीर बढ़कर एक सुंदर और बलिष्ठ बालक हुआ । उसने सब कलाओं को सीख लिया और शीघ्र ही वह युद्ध-विद्या में भी निपुण हो गया !

जैत्रसिंह के सुरत्राण और विराम दो और पुत्र थे, जो बड़े योद्धा थे । यह देखकर कि उनके पुत्र अब उनको राज्य के भार से मुक्त करने योग्य हो गए, जैत्रसिंह ने एक दिन हम्मीर से इस विषय में बातचीत की, और उन्हें किस रीति से चलना चाहिए इस विषय में उत्तम उपदेश देने के उपरांत, राज्य उनके (हम्मीर के) हवाले कर दिया, और वे आप वनवास करने चले गए । यह बात संवत् १३३८ (१२८३ ई०) में हुई ।*

छः गुणों और तीन शक्तियों से संपन्न होकर हम्मीर ने युद्ध के हेतु प्रस्थान करने का संकल्प किया । पहले वह राजा अर्जुन की राजधानी सरसपुर में गया । यहाँ एक युद्ध हुआ जिसमें अर्जुन पराजित होकर अधीन हुआ । इसके अनंतर राजा ने गढ़मंडले पर चढ़ाई की जिसने कर देकर अपनी रक्षा की । गढ़मंडले से हम्मीर धार की ओर बढ़ा । यहाँ एक

* ततश्च संवन्नववह्नि वह्निभूहायने माघवल्लभपक्षे ।

पौष्यां तिथौ हेलिदिने सपुष्ये दैवज्ञनिर्दिष्टबलेऽलिलभे ॥

राजा भोज राज्य करता था जो स्वनामधारी विख्यात राजा भोज के समान ही कवियों का मित्र था । भोज को पराजित करके सेना उज्जैन में आई जहाँ हाथी, घोड़े और मनुष्य क्षिप्र कं निर्मल जल में नहाए । राजा ने भी नदी में स्नान किया और महाकाल के मंदिर में जाकर पूजा की । बड़े समारोह के साथ वे उस प्राचीन नगरी के प्रधान मार्गों से होकर निकले । उज्जैन से हम्मीर चित्रकोट (चित्तौर) की ओर बढ़ा और मेड़वार (मेवाड़) को उजाड़ करता हुआ आबू पर्वत पर गया ।

वेद के अनुयायी होकर भी यहाँ हम्मीर ने मंदिर में ऋषभदेव की पूजा की, क्योंकि बड़े लोग विरोधसूचक भेदभाव नहीं रखते । वस्तुपाल के स्तुति-पाठ के समय भी राजा प्रस्तुत थे । वे कई दिन तक वसिष्ठ की कुटी में रहे, और मंदाकिनी में स्नान करके उन्होंने अचलेश्वर की आराधना की । यहाँ अर्जुन की कृतियों को देखकर वे बहुत ही आश्चर्यित हुए ।

आबू का राजा एक प्रसिद्ध योद्धा था, किंतु उसके बल ने इस अवसर पर कुछ काम न किया और उसे हम्मीर के अधीन होना पड़ा ।

आबू छोड़कर राजा वर्द्धनपुर आए और उस नगर को उन्होंने लूटा तथा नष्ट किया । चंगा की भी यही दशा हुई । यहाँ से अजमेर की राह से हम्मीर पुष्कर को गए जहाँ उन्होंने आदिवराह की आराधना की । पुष्कर से

राजा शाकंभरी को गए। मार्ग में मरहटा*, खंडिझा, चमड़ा और काँकरौली लूटे गए। काँकरौली में त्रिभुवनेंद्र उनसे मिलने आए और बहुत सी अमूल्य भेंट लाए।

इन विशद कार्यों को पूरा करके हम्मीर अपनी राजधानी को लौट आए। राजा के आगमन से वहाँ बड़ी धूम हुई। राज्य के सब बड़े कर्मचारी धर्मसिंह के साथ दल बाँधकर अपने विजयी राजा की अगवानी के लिये बाहर आए। मार्ग के दोनों ओर प्रेमी प्रजा अपने राजा के दर्शन के हेतु उत्सुक खड़ी थी।

इसके कुछ दिन पीछे हम्मीर ने अपने गुरु विश्वरूप से कोटियज्ञ का फल पूछा और उनसे यह उत्तर पाकर कि इस यज्ञ के पूरा करने से स्वर्ग लोक प्राप्त होता है राजा ने आज्ञा दी कि कोटियज्ञ की तय्यारी की जाय। चट देश के सब भागों से विद्वान् ब्राह्मण बुलाए गए, और यज्ञ पवित्र शास्त्रों में लिखे विधानों के अनुसार समाप्त किया गया। ब्राह्मणों को खूब भोजन कराकर उन्हें भरपूर दक्षिणा दी गई। इसके उपरांत राजा ने एक महीने तक के लिये मुनिव्रत ठाना।

जब कि रणथंभौर में ये सब बातें हो रही थीं, दिल्ली में, जहाँ अलाउद्दीन राज्य करता था, कई परिवर्तन हुए। रणथंभौर में जो कुछ हो रहा था उसका समाचार पाकर उसने

* इस नाम का एक स्थान जोधपुर राज्य में है। जोधपुर राज्य में नाडोल नाम का एक गाँव है जहाँ आसापुरा देवी का स्थान है। रणथंभ से यदि नाडोल जाया जाय तो मेड़ता बीच में पड़ेगा।

अपने छोटे भाई उलगखाँ * को सेना लेकर चौहान प्रदेश पर चढ़ाई करने और उसको उजाड़ देने की आज्ञा दी। उसने कहा “जैत्रसिंह हम लोगों को कर देता था; पर यह उसका बेटा न कि केवल कर ही नहीं देता वरन् हम लोगों के प्रति अपनी घृणा दिखाने के लिये प्रत्येक अवसर ताकता रहता है। यह उसकी शक्ति को नष्ट करने का अच्छा अवसर है।” ऐसी आज्ञा पाकर उलगखाँ ने ८०००० सवार लेकर रणथंभौर प्रदेश पर चढ़ाई की। जब यह सेना वर्णनाशा नदी पर पहुँची तब उसने देखा कि सड़के जो शत्रु के प्रदेश को गई हैं, सवारों के चलने योग्य नहीं हैं। इससे वह कई दिन वहाँ टिका रहा; इस बीच में उसने आस पाम के गाँवों को जलाया और नष्ट किया।

यहाँ रणथंभौर में मुनिव्रत पूरा न होने के कारण राजा स्वयं युद्धक्षेत्र में न जा सकते थे। अतएव उन्होंने भीमसिंह और धर्मसिंह अपने सेनापतियों को आक्रमणकारियों को भगाने के लिये भेजा। राजा की सेना वर्णनाशा नदी के किनारे एक स्थान पर आक्रमणकारियों पर दूट पड़ी और उसने शत्रुओं को, जिनके बहुत से लोग मारे गए, परास्त किया। इस जयलाभ से संतुष्ट होकर भीमसिंह रणथंभौर की ओर लौटने लगा, और उलगखाँ अपनी सेना का प्रधान अंग साथ लिए

* मालिक मुईजुद्दीन उलगखाँ। बिग्रूस ने अपने फिरिश्ता के अनुवाद में इसको “अलफखाँ” लिखा है।

छिपकर उसके पीछे पीछे बढ़ने लगा । अब यह हुआ कि भीमसिंह के सिपाही, जिन्होंने लूट में बहुत सा धन पाया था, उसको रक्षापूर्वक अपने अपने घर ले जाने को व्यग्र थे, और इसी व्यग्रता में उन्होंने अपने नायक को पीछे छोड़ दिया जिसके साथ केवल अनुचरों की एक छोटी सी मंडली रह गई । जब इस प्रकार भीमसिंह हिंदावत घाटी के बीचों बीच पहुँचा तब उसने विजय के अभिमान में उन नगाड़ों और बाजों को जोर से बजाने की आज्ञा दी जिनको उसने शत्रु से छीना था । इस कार्य का फल अचिंत्यपूर्व और आपत्ति-जनक हुआ । उलगखाँ ने अपनी सेना को छोटे छोटे दलों में भीमसिंह का पीछा करने की आज्ञा दे रखी थी और बाजा बजाते ही उसे शत्रु के ऊपर जयलाभ की सूचना समझ, उस पर दूट पड़ने का आदेश दे रखा था । अतः जब मुसलमानों के पृथक् पृथक् दलों ने नगाड़ों का शब्द सुना तब वे चारों ओर से घाटी में आ पहुँचे, और उलगखाँ भी एक ओर से आकर भीमसिंह से युद्ध करने लगा । हिंदू सेनापति कुछ काल तक यह बेजोड़ की लड़ाई लड़ता रहा, पर अंत में घायल हुआ और मारा गया । शत्रु के ऊपर यह जयलाभ पाकर उलगखाँ दिल्ली लौट गया ।

यज्ञ पूरा होने के उपरांत हमीर ने युद्ध का वृत्तांत और अपने सेनापति भीमसिंह की मृत्यु का समाचार सुना । उन्होंने धर्मसिंह को भीमसिंह का साथ छोड़ने के लिये धिकारा,

उसको अंधा कहा क्योंकि वह यह न देख सका कि उलगाखाँ सेना के पीछे पीछे था। उन्होंने उसको क्लीव भी कहा क्योंकि, वह भीमसिंह की रक्षा के लिये नहीं दौड़ा। इस प्रकार धर्मसिंह को धिक्कार कर ही संतुष्ट न होकर राजा ने उस दोषी सेनापति को अंधा करने और उसको क्लीव करने की आज्ञा दी। सेनानायक के पद पर भी धर्मसिंह के स्थान पर भोजदेव हुए, जो राजा के एक प्रकार से भाई होते थे और धर्मसिंह को देश निकालने का दंड भी सुनाया जा चुका था पर भोजदेव के बीच में पड़ने से उसका बर्ताव नहीं हुआ।

धर्मसिंह इस प्रकार अवयवभग्न और अपमानित होकर राजा के इस व्यवहार से अत्यंत दुःखित हुआ, और उसने बदला लेने का संकल्प किया। अपने संकल्पसाधन के हेतु उसने राधादेवी नाम की एक वेश्या से, जिसका दरबार में बहुत मान था, गहरी मित्रता की। राधादेवी नियम प्रति जो कुछ दरबार में होता उसकी रत्ती रत्ती सूचना अपने अंधे मित्र को देती। एक दिन ऐसा हुआ कि राधादेवी बिलकुल उदास और मलिन घर को लौटी, और जब उसके अंधे मित्र ने उसकी उदासी का कारण पूछा तब उसने उत्तर दिया कि आज राजा के बहुत से घोड़े बेधरोग से मर गए इससे उन्होंने मेरे नाचने और गाने की ओर बहुत थोड़ा ध्यान दिया, और जान पड़ता है कि बहुत दिन तक यही दशा रहेगी। अंधे पुरुष ने उसे प्रसन्न होने को कहा क्योंकि थोड़े ही दिनों में सब फिर ठीक हो

जायगा । उसे केवल राजा से यह जताने का अवसर देखते रहना चाहिए कि यदि धर्मसिंह अपने पहले पद पर फिर हो जाय तो वह राजा को जितने धोड़े हाल में मरे हैं उनसे दूने भेंट करे । राधादेवी ने अपना काम सफाई से किया, और राजा ने लोभ के वश में होकर धर्मसिंह को उसके पहले पद पर फिर आरूढ़ कर दिया ।

धर्मसिंह इस प्रकार फिर से नियुक्त होकर बदले ही का विचार करने लगा । राजा का लोभ बढ़ाता गया और उसने अपने अत्याचार और लूट से प्रजा की ऐसी हीन दशा कर दी कि वह राजा से घृणा करने लगी । वह किसी को जिससे कुछ—घोड़ा, रुपया, कोई भी रखने योग्य पदार्थ—मिल सकता था न छोड़ता । राजा, जिसका कोष वह भरता था, अपने अंधे मंत्री से बहुत प्रसन्न रहता जितने, सफलता से फूलकर भोजदेव से उसके विभाग का लेखा माँगा । भोज जानता था कि वह उसके पद से कुढ़ता है, अतः उसने राजा के पास जाकर धर्मसिंह के समस्त पड्यंत्र की बात कही और मंत्री के अत्याचार से रक्षा पाने के लिये उनसे प्रार्थना की । किन्तु हममार ने भोज की बात पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया और कहा कि धर्मसिंह को पूरा अधिकार सौंपा गया है, वह जो उचित समझ कर सकता है, इसलिये यह आवश्यक है कि और लोग उसकी आज्ञा मानें । भोज ने जब देखा कि राजा का चित्त उसकी ओर से फिर गया है तब उसने अपनी संपत्ति

जब्त होने दी और धर्मसिंह के आज्ञानुसार उसे लाकर राजा के भांडार में रखा । पर कर्त्तव्य के अनुरोध से वह अपने नायक के साथ अब भी जहाँ कहीं वे जाते रहता था । एक दिन राजा वैजनाथ के मंदिर में पूजन के हेतु गए और भोज को अपने दल में देखकर उन्होंने एक सभासद से जो पास खड़ा था, व्यंग्यपूर्वक कहा कि 'पृथ्वी अधम जनों से भरी है; किन्तु पृथ्वी पर सबसे अधम जीव कौआ है, जो क्रुद्ध उल्लू से अपने पर नोचवाकर भी अपने पुराने पेड़ पर के घोंसले में पड़ा रहता है ।' भोज ने इस व्यंग्य का अर्थ समझा और यह भी जाना कि यह उसी पर छोड़ा गया है । अत्यंत दुखी होकर वह घर लौट गया और उसने अपने अपमान की बात अपने छोटे भाई पीतम से कही । दोनों भाइयों ने अब देश छोड़ने का संकल्प किया, और दूसरे दिन भोज हम्मीर के पास गया और उसने बड़ो नम्रता से तीर्थाटन के हेतु काशी जाने की अनुमति माँगी । राजा ने उसकी प्रार्थना स्वीकार की और कहा कि 'काशी क्या जी चाहे तो तुम और आगे जा सकते हो—तुम्हारे कारण नगर उजड़ जाने का भय नहीं है ।' इस अविनीत वचन का उत्तर भोज ने कुछ न दिया । वह प्रणाम करके चला गया और उसने तुरंत काशी के हेतु प्रस्थान कर दिया । राजा भोजदेव के चले जाने से प्रसन्न हुआ और उसने कोतवाल का पद, जो (उसके जाने से) खाली हुआ, रतिपाल को प्रदान किया ।

जब भोज शिरसा पहुँचा तब उसने अपने दिन के फेर पर विचार किया और संकल्प किया कि इन अपमानों का बिना बदला लिए न रहना चाहिए। चित्त की इसी अवस्था में वह अपने भाई पीतम के साथ योगिनीपुर गया और वहाँ अलाउद्दीन से मिला। मुसल्मान सरदार अपने दरबार में भोज के आ जाने से बहुत प्रसन्न हुआ। उसने बड़े आदर से उसके साथ व्यवहार किया और जगरा का नगर तथा इलाका उसे जागीर में दिया। अब से पीतम तथा भोज के परिवार के और लोग यहाँ रहने लगे और वह आप (भोज) दरबार में रहने लगा। अलाउद्दीन का अभिप्राय हम्मीर का वृत्त जानने का था इसलिये वह भेंट और पुरस्कार से दिन दिन भोज की प्रतिष्ठा बढ़ाने लगा और वह भी धीरे धीरे अपने नए स्वामी के हित-साधन में तत्पर हुआ।

भोज को अपने पक्ष में समझ अलाउद्दीन ने एक दिन उससे अकेलें में पूछा कि हम्मीर को दबाने का कोई सुगम उपाय है। भोज ने उत्तर दिया कि हम्मीर ऐसे राजा पर विजय पाना कोई सहज काम नहीं है जिससे कुंतल, मध्यदेश, अंग और कांची तक के राजा भयभीत रहते हैं, जो छः गुणों और तीन शक्तियों से संपन्न, एक विशाल और प्रबल सेना का नायक है, जिसकी और समस्त राजा शंका करते और आज्ञा मानते, कई राजाओं को दमन करनेवाला पराक्रमी विराम जिसका भाई है, जिसकी सेवा में महिमासाह तथा और

दूसरे निःशंक मोगल सदाँर रहते हैं, जिसने उसके भाई को हराकर स्वयं अलाउद्दीन को छकाया । भोज ने कहा कि न केवल हम्मीर के पास योग्य सेनापति ही हैं वरन् वे सबके सब उससे स्नेह रखते हैं । एक ओर के सिवाय और कहीं लोभ दिखाना असंभव है । हम्मीर की सभा में केवल एक ही व्यक्ति ऐसा है जो अपने को बेच सकता है । जैसे दीपक के लिये वायु का भोंका, कमल के लिये मेघ, सूर्य के लिये रात्रि, यती के लिये स्त्रियों का संग, दूसरे गुणों के लिये लोभ, वैसे ही हम्मीर के लिये अप्रतिष्ठा और नाश का कारण यह एक व्यक्ति है । भोज ने कहा कि वह समय भी हम्मीर के विरुद्ध चढ़ाई करने के लिये अनुपयुक्त नहीं है । इस वर्ष चौहान प्रदेश में खूब अन्न हुआ है । यदि किसी प्रकार अलाउद्दीन उसे रखने के पहले ही किसानों से छीन सके तो वे जो कि अंधे व्यक्ति के अत्याचार से पहले ही से पीड़ित हैं, हम्मीर का पक्ष छोड़ने पर सम्मत हो सकते हैं ।

अलाउद्दीन को भोज का विचार पसंद आया और उसने तुरंत उलगख़ाँ को एक लाख सवारों की सेना लेकर हम्मीर के देश पर आक्रमण करने की आज्ञा दी । उलगख़ाँ की सेना एक प्रबल धारा के समान जिन प्रदेशों से होकर निकलती उनके अधिपतियों को नरकट के समान नवाती चली जाती । सेना इसी ढंग से हिंदावत पहुँच गई तब उसके आने का समाचार हम्मीर तक पहुँचाया गया । इस पर उस हिंदू राजा ने एक

सभा की और विचार किया कि किन उपायों का अवलंबन करना अच्छा होगा । यह निश्चय हुआ कि वीरम और राज्य के शेष आठ बड़े पदाधिकारी शत्रु से युद्ध करने जायँ । तुरंत राजा के सेनानायकों ने सेना को आठ भागों में विभक्त किया और आठों दिशाओं से आकर वे मुसलमानों पर दूट पड़े । वीरम पूर्व से आया और महिमासाह पश्चिम से । जाजदेव दक्षिण से और गर्भाशूक उत्तर की ओर से बढ़ा । रतिपाल अग्निकोण से आया और तिचर मोगल ने वायुकोण से आक्रमण किया । रणमल ईशानकोण से आया और वैचर ने नैऋत्य की ओर से आकर आक्रमण किया । राजपूत लोग बड़े पराक्रम के साथ अपने कार्य में तत्पर हुए । उनमें से कई एक ने शत्रु की खाइयों को मिट्टी और कूड़े करकट से भर दिया, कई एक ने मुसलमानों के लकड़ों के घेरों में आग लगा दी । कुछ लोगों ने उनके डेरों (खेमों) की रस्सियों का काट डाला । मुसलमान लोग शत्रु लेकर खड़े थे और डोंग हाँककर कहते थे कि हम राजपूतों को घास के समान काट डालेंगे । दोनों दल साहसपूर्वक जी खेलकर लड़े; किंतु राजपूतों के लगातार आक्रमण के आगे मुसलमानों को हटना पड़ा । अतएव उनमें से बहुतों ने रणक्षेत्र त्याग दिया और वे अपना प्राण लेकर भागे । कुछ काल पीछे समस्त मुसलमानी सेना ने इसी रीति का अनुसरण किया और वह कायरता से युद्धक्षेत्र से भागी; राजपूतों की पूरी विजय हुई ।

जब युद्ध समाप्त हो गया तब सीधे सादे राजपूत लोग युद्ध-स्थल में अपने मरे और घायल लोगों को उठाने आए । इस खोज में उन्होंने बहुत सा धन, शस्त्र, हाथी और घोड़े पाए । शत्रु की बहुत सी स्त्रियाँ उनके हाथ आईं । रतिपाल ने आते हुए प्रत्येक नगर में उनसे मट्ठा बेचवाया ।

हम्मीर शत्रु के ऊपर अपने सेनापतियों की इस विजय-प्राप्ति से अत्यंत प्रसन्न हुए । इस घटना के उपलक्ष में उन्होंने एक बड़ा दरबार किया । दरबार में राजा ने रतिपाल को सेने की सिकरी पहनाई, और उसकी तुलना युद्ध के हाथी से की जो सुवर्ण के पट्टे का अधिकारी होता है । दूसरे सरदार और सिपाही लोग भी अपनी अपनी योग्यता के अनुसार पुरस्कृत किए गए और अनुग्रहपूर्वक उन्हें अपने अपने घर जाने की आज्ञा मिली ।

भोगल सरदारों के सिवाय और सब लोग चले गए । हम्मीर ने यह बात देखी और कृपापूर्वक उनसे रह जाने का कारण पूछा । उन्होंने उत्तर दिया कि कृतघ्न भोज को, जो जगरा में जागीर भोग रहा है, दंड देने के पहले हम तलवार म्यान में करना और अपने घर जाना बुरा समझते हैं । उन्होंने कहा कि राजा के संबंध के कारण ही हम लोगों ने उसे अब तक जीता छोड़ा है; किंतु अब वह इस सहनशीलता के योग्य नहीं रहा क्योंकि उसी की प्रेरणा से शत्रु ने रणथंभौर प्रदेश पर चढ़ाई की थी । अतएव उन्होंने जगरा पर चढ़ाई करके

भोज पर आक्रमण करने की अनुमति माँगी । राजा ने प्रार्थना स्वीकार की और दोनों मोगलों ने तुरंत जगरा की ओर प्रस्थान किया । उन्होंने नगर को घेरकर ले लिया और पीतम को कई और मनुष्यों के साथ बंदी बनाकर वे उसे फिर रण-शंभौर ले आए ।

उलगाखाँ पराजय के पीछे तुरंत दिल्ली लौट गया और जो कुछ हुआ था अपने भाई से उसने सब कह सुनाया । उसके भाई ने उस पर कायरता का दोष लगाया; अपने भागने का दोष उसने यह कहकर मिटाया कि उस अवस्था में मेरे लिये केवल एक यही उपाय था जिससे इस संसार में एक बेर फिर मैं आपका दर्शन करता और चौहान से लड़ने के लिये दूसरा अवसर पाता । उलगाखाँ ने बात गढ़कर छुट्टी भी न पाई थी कि क्रोध से लाल भोज भीतर आया । उसने अपने उपवस्त्र को पृथ्वी पर बिछा दिया और उस पर इस प्रकार लोटने और अंडबंड बकने लगा जैसे उस पर प्रेत चढ़ा हो । अलाउद्दीन को उसका यह विलक्षण आचरण कुछ कम बुरा नहीं लगा; उसने उसका कारण पूछा । भोज ने उत्तर दिया कि मेरे लिये इस विपत्ति को कभी भूलना कठिन है जो आज मुझ पर पड़ी है; क्योंकि महिमासाह ने जगरा में जाकर मुझ पर आक्रमण किया और मेरे भाई पीतम को बंदी करके हम्मीर के पास ले गया । भोज ने कहा—लोग घृणा से मेरी ओर उँगली दिखाकर अब यही कहेंगे कि यह एक ऐसा मनुष्य है जिसने अधिक

पाने के लालच से अपना सर्वस्व खो दिया । असहाय और अनाथ होकर मैं पृथ्वी पर अब भी बेखटके नहीं लेट सकता क्योंकि वह समस्त पृथ्वी हम्मीर की है; इसी लिये मैंने अपना वस्त्र बिछा दिया है जिसमें उसी पर मैं उस शोक में छटपटाऊँ जिसने मुझमें खड़े रहने की शक्ति भी नहीं रहने दी है ।

अपने भाई की सहायता की कथा से अलाउद्दीन के हृदय में क्रोध की अग्नि पहले ही से जल उठी थी अब भोज की ये बातें उस अग्नि में आहुति के समान हुईं । हृदय के आवेग में अपनी पगड़ी को पृथ्वी पर पटककर उसने कहा कि हम्मीर की मूर्खता उस मनुष्य की सी है जो समझता है कि मैं सिंह के कपाल पर पैर रख सकता हूँ, और प्रतिज्ञा की कि मैं चौहानों की समस्त जाति ही को नष्ट कर डालूँगा । उसने तुरंत अनेक देशों के राजाओं के पास पत्र भेजे और हम्मीर के विरुद्ध लड़ाई में योग देने के लिये उन्हें बुलाया । अंग, तैलंग, मगध, मैसूर, कलिंग, बंग, भोट, मेड़पाट, पंचाल, बंगाल, थमिम, भिल्ल, नेपाल तथा दाहल के राजा और कुछ हिमालय के सरदार अपना अपना दल आक्रमणकारी सेना में भरने को लाए । इस बहुरंगिनी सेना में कुछ लोग ऐसे थे जो युद्ध की देवी के प्रेम से आए थे, और कुछ ऐसे थे जो लूट की चाह से आक्रमणकारियों के दल में भरती हुए थे । कुछ लोग केवल उस घमासान युद्ध के दर्शक ही होने के हेतु आए थे जो होनेवाला था । हाथी, घोड़ों, रथों और मनुष्यों की इतनी

कसामस थी कि भीड़ में कहीं तिल रखने की जगह नहीं थी। इस भारी समारोह के साथ दोनों भाई नसरतखाँ और उलगखाँ रणथंभौर प्रदेश की ओर चले।

अलाउद्दीन छोटे से दल के साथ इस अभिप्राय से पीछे रह गया जिसमें राजपूतों को यह भय बना रहे कि अभी बाद-शाह के पास सेना बची है।

सेना की संख्या इतनी अधिक थी कि मार्ग में नदियों का जल चुक जाता था इससे यह आवश्यक हुआ कि सेना किसी एक स्थान पर कुछ घंटों से अधिक न ठहरे। कूच पर कूच बोलते दोनों सेनापति रणथंभौर प्रदेश की सीमा पर पहुँच गये। इससे आक्रमणकारियों के हृदयों में भिन्न भिन्न भाव उत्पन्न हुए। वे लोग जो पहली लड़ाई में सम्मिलित नहीं हुए थे कहते थे कि विजय पाना निश्चित है क्योंकि राजपूतों के लिये ऐसी सेना का सामना करना असंभव है। किंतु पहली चढ़ाई के योद्धा लोग ऐसा नहीं समझते थे और अपने साथियों से कहते थे कि याद रखना हम्मीर की सेना से सामना करना है अतएव युद्ध के अंत तक डींग हाँकना बंद रखना चाहिए।

जब सेना उस घाटी में पहुँची जहाँ उलगखाँ की पराजय और दुर्गति हुई थी तब उसने अपने भाई को शिक्षा दी कि अपनी शक्ति ही पर बहुत भरोसा न करना चाहिए, वरन, चूँकि स्थान विकट और हम्मीर की सेना बली और निपुण है, इससे

गह चाल चलनी चाहिए कि किसी को हम्मीर की सभा में भेज दे* जो दो चार दिन तक संधि की बातचीत में उन्हें बहलाए रहे; और इस बीच में सेना कुशलपूर्वक पर्वतों को गार करे और अपनी स्थिति दृढ़ कर ले। नसरतखाँ ने अपने भाई की इस अनुभवपूर्ण बात को माना, और मोल्हण-देव उन बातों का प्रस्ताव करने के लिये भेजा गया जिनसे मुसल्मान लोग हम्मीर के साथ संधि कर सकते थे। बात-चीत होने तक हम्मीर के लोगों ने आक्रमणकारी सेना को उस भयानक घाटी को बे-रोक टोक पार करने दिया। अब खाँ ने अपने भाई को तो उस मार्ग के एक पार्श्व में स्थित किया जो मंडी पथ कहलाता था और उसने स्वयं श्रीमंडप के दुर्ग को छेँका। साथी राजाओं के दल जैत्रसागर के चारों ओर टिकाए गए।

दोनों पक्ष अपनी अपनी घात में थे। मुसल्मानों ने समझा कि हम आक्रमण आरंभ करने के लिये धूर्तता से उत्तम स्थिति पा गए हैं; उधर राजपूतों ने विचारा कि शत्रु अंतर्भाग में इतनी दूर बढ़ आए हैं कि वे अब हमसे किसी प्रकार भाग नहीं सकते।

रणथंभौर में खाँ के दूत ने राजा की आज्ञा से दुर्ग में प्रवेश पाया; जो कुछ उसने वहाँ देखा उससे उस पर राजा के प्रताप का आतंक छा गया। उसके हेतु जो दरबार हुआ उसमें वह गया, और आवश्यक शिष्टाचार के उपरांत उसने

साहसपूर्वक उस सँदेसे को कहा जो लेकर वह आया था । उसने कहा 'मैं विख्यात अलाउद्दीन के भाई उलगखाँ और नसतरखाँ का दूत होकर राजा के दरबार में आया हूँ; मैं राजा के हृदय में, यदि संभव हो, तो यह बात जमाने के लिये आया हूँ कि अलाउद्दीन ऐसे महान्विजयी का सामना करना कैसा निष्फल है और उन्हें अपने सरदार से संधि कर लाने की सम्मति देन आया हूँ ।' उसने हम्मीर से संधि के लिये यह चंद शर्तें बतलाईं—“चाहे आप मेरे सरदार को एक लाख मोहर, चार हाथी और तीन सौ घोड़े भेंट करें और अपनी बेटी अलाउद्दीन को ब्याह दें, अथवा उन चार विद्रोही मोगल सरदारों को मेरे हवाले कर दें जो अपन स्वामी के कोपभाजन होकर अब आपकी शरण में रहते हैं ।” दूत ने फिर कहा “यदि आप अपने राज्य और प्रताप को शांतिपूर्वक भोगना चाहते हैं तो इन दो में से किसी शर्त को मानकर अपना अभिप्राय सिद्ध करने के लिये आपको अच्छा अवसर मिला है; इससे आपका शत्रुओं का नाश करनेवाले बादशाह अलाउद्दीन की कृपा और सहायता प्राप्त होगी जिसके पास असंख्य दृढ़ दुर्ग, सुसज्जित शस्त्रागार और मेगजीन हैं, जिसने देवगढ़ ऐसे ऐसे अगणित अजेय दुर्गों पर अधिकार करके महादेव को भी लज्जित किया क्योंकि उनकी (महादेव की) ख्याति तो अकेले त्रिपुर के गढ़ को सफलतापूर्वक अधिकृत करने से हुई है ।

हम्मीर जो दूत के वचन अधीर होकर सुनता रहा इस अपमानकारी सँदेसे से बहुत ही क्रुद्ध हुआ और उसने श्री मोल्हणदेव से कहा कि यदि तुम भेजे हुए दूत न होते तो जिस जीम से तुमने ये अपमान-सूचक बातें कही हैं वह काट ली गई होती। हम्मीर ने न केवल इन शर्तों में से किसी को मानना अस्वीकार ही किया वरन् अपनी ओर से उतने खड्ग के आघात स्वीकार करने के लिये अलाउद्दीन से प्रस्ताव किया जितनी मुहर हाथी और घोड़े माँगने का उसने साहस किया; और दूत से यह भी कहा कि मुसल्मान सरदार का इस रणभिक्षा को अस्वीकार करना सूअर खाने के बराबर होगा। बिना और किसी शिष्टाचार के दूत सामने से हटा दिया गया।

रणथंभौर की सेना युद्ध के लिये सुसज्जित होने लगी। बड़ी योग्यता और पराक्रम के सेनापति भिन्न भिन्न स्थानों की रक्षा के हेतु नियुक्त हुए। दुर्ग की दीवारों पर रक्षकों को धूप से बचाने के लिये इधर उधर ढेर गाड़े गए। कई स्थानों पर उबलता हुआ तेल और राल रखी गई कि यदि आक्रमणकारियों में से कोई निकट आने का साहस करे तो उसके शरीर पर वह छोड़ दी जाय, उपयुक्त स्थानों पर तोपें चढ़ा दी गईं। अंत में मुसल्मानी सेना भी रणथंभौर दुर्ग के सामने आई। कई दिन तक घमासान युद्ध होता रहा। नसरतखाँ अचानक एक गोली के लगने से मर गया और बर-

सात के आ जाने पर उल्लगखों को लड़ाई बंद करनी पड़ी। वह दुर्ग से कुछ दूर हट गया और उसने अलाउद्दीन के पास अपनी भयानक स्थिति का समाचार भेजा। उसने नसरत खाँ का शव भी समाधिस्थ करने के निमित्त उसके पास भेज दिया। अलाउद्दीन ने यह समाचार पाकर तुरंत रणथंभौर की ओर प्रस्थान किया। यहाँ पहुँचकर उसने तुरंत अपनी सेना को दुर्ग के द्वार की ओर बढ़ाया और उसे छेक लिया।

हम्मीर ने इन कार्यों की तुच्छता सूचित करने के लिये दुर्ग की दीवारों पर कई जगह सूप के भंडे गड़वा दिए। इससे यह अभिप्राय झलकता था कि दुर्ग सम्मुख अलाउद्दीन के आगमन से राजपूतों को कुछ भी बोझ वा कष्ट नहीं मालूम होता था। मुसल्मान सरदार ने देखा कि उससे साधारण धैर्य और साहस के मनुष्यों से पाला नहीं पड़ा है, और उसने हम्मीर के पास सँदेशा भेजकर यह कहलाया कि मैं तुम्हारी वीरता से बहुत प्रसन्न हूँ, और ऐसा पराक्रमी शत्रु चाहे जिस बात की प्रार्थना करे उसे मानने में मैं प्रसन्न हूँ। हम्मीर ने उत्तर दिया कि यदि अलाउद्दीन जो मैं चाहूँ उसे देने में प्रसन्न है तो मेरे लिये इससे बढ़कर संतोष की बात और कोई नहीं होगी कि वह दो दिन मेरे साथ युद्ध करे, और मुझे आशा है कि मेरी यह प्रार्थना स्वीकृत होगी। मुसल्मान सरदार ने इस उत्तर की यह कहकर बड़ा प्रशंसा की कि वह सर्वथा उसके प्रतिद्वंद्वी के साहस के योग्य है, और उससे

दूसरे दिन युद्ध रोपने का वचन दिया । इसके अनंतर अत्यंत भीषण और कराल युद्ध हुआ । इन दो दिनों में मुसलमानों के कम से कम ८५००० आदमी मारे गए । दोनों योद्धाओं के बीच कुछ दिन विश्राम करना निश्चित होने पर लड़ाई कुछ काल के लिये बंद हुई ।

इस बीच में एक दिन राजा ने दुर्ग के प्राचीर पर राधादेवी का नाच कराया : उनके चारों ओर बड़ा जमाव था । यह स्त्री क्रम से क्षण क्षण पर घूमती हुई, जिसे संगीत जाननेवाले ही अच्छी तरह समझ सकते थे, जान बूझकर अपनी पीठ अलाउद्दीन की ओर फेर लेती थी जो किले से थोड़ी दूर नीचे अपने डेरे में बैठा यह सब देख रहा था । कोई आश्चर्य नहीं कि वह इस आचरण से रुष्ट हुआ, और कोप करके अपने पास के लोगों से उसने कहा कि क्या मेरे असंख्य साथियों में कोई ऐसा है जो इस स्त्री को इतनी दूर से एक तीर से मारकर गिरा सकता है । एक सरदार ने उत्तर दिया कि मैं केवल एक आदमी को जानता हूँ जो यह काम कर सकता है, वह उड्डानसिंह है जिसे बादशाह ने कैद कर रखा है । कैदी तुरंत छोड़ दिया गया और अलाउद्दीन के पास लाया गया जिसने उसे उस सुंदर लक्ष्य पर अपना कौशल दिखाने की आज्ञा दी । उड्डानसिंह ने आज्ञानुसार वैसा ही किया, और एक क्षण में उस वारांगना की सुंदर देह बाण से बिधकर दुर्ग की दीवार पर से सिर के बल नीचे गिरी ।

इस घटना से महिमासाह को बहुत क्रोध हुआ और उसने राजा से अलाउद्दीन के साथ भी वही व्यवहार करने की अनुमति माँगी जो उसने बेचारी राधादेवी के साथ किया था । राजा ने उत्तर दिया कि मुझे तुम्हारी धनुर्विद्या का असाधारण कौशल विदित है, किंतु मैं नहीं चाहता कि अलाउद्दीन इस रीति से मारा जाय क्योंकि उसकी मृत्यु से मेरे साथ शस्त्र ग्रहण करनेवाला कोई पराक्रमी शत्रु न रह जायगा । महिमासाह ने तब प्रत्यंचा चढ़े हुए बाण को उड्डानसिंह पर छोड़ा और उसे मार गिराया । महिमासाह के इस कौशल ने अलाउद्दीन को इतना सशंकित कर दिया कि वह तुरंत अपने डेरे को भोल के पूर्वीय पार्श्व से हटाकर पश्चिम की ओर ले गया जहाँ ऐसे आक्रमणों से अधिक रक्षा हो सकती थी । जब डेरा हटाया गया तब राजपूतों ने देखा कि शत्रु ने नीचे नीचे सुरंग तैयार कर ली है, और खाई के एक भाग पर मिट्टी से ढका हुआ लकड़ी और घास का पुल बांधने का यत्न किया है । राजपूतों ने इस पुल को तोपों से नष्ट कर दिया, और सुरंग में खैलता हुआ तेल डालकर उन लोगों को मार डाला जो भीतर काम कर रहे थे । इस प्रकार अलाउद्दीन का गढ़ लेने का सब यत्न निष्फल हुआ । उसी समय वर्षा से भी उसे बहुत कष्ट होने लगा जो मूसलाधार होती थी । अतएव उसने हम्मीर के पास सँदेशा भेजा कि क्षुपा करके रतिपाल को मेरे डेरे में भेज दीजिए क्योंकि मुझे उनसे इस अभिप्राय

से बातचीत करने की इच्छा है कि जिसमें हमारे और आपके बीच का झगड़ा शांतिपूर्वक तै हो जाय ।

राजा ने रतिपाल का जाकर अलाउद्दीन की बात सुनने की आज्ञा दी । रणमल रतिपाल के प्रभाव से क्रुद्धता था और नहीं चाहता था कि वह इस काम के लिये चुना जाय ।

अलाउद्दीन रतिपाल से बड़े ही आदर के साथ मिला । उसके दरबार के डेरे में प्रवेश करने पर मुसल्मान सरदार अपने स्थान पर से उठा और उसे आलिंगन करके उसने अपनी गद्दी पर बैठाया और वह आप उसके बगल में बैठ गया । उसने अमूल्य भेंट उसके सामने रखवाई तथा और भी पुरस्कार देने का वचन दिया । रतिपाल इस सुंदर व्यवहार से बहुत प्रसन्न हुआ । उस धूर्त मुसल्मान ने यह देखकर और लोगों को वहाँ से हट जाने की आज्ञा दी । जब वे सब चले गए तब उसने रतिपाल से बातचीत आरंभ की । उसने कहा—“मैं अलाउद्दीन मुसल्मानों का बादशाह हूँ, और मैंने अब तक सैकड़ों दुर्ग ढहाए और लिए हैं । किंतु शत्रु कं बल से रण-थंभौर को लेना मेरे लिये असंभव है । इस दुर्ग को घेरने से मेरा अभिप्राय केवल उसके अधिकार की ख्याति पाना है । मैं आशा करता हूँ (जब कि आपने मुझसे मिलना स्वीकार किया है) कि मैं अपना मनोरथ सिद्ध करूँगा और अपनी इच्छा पूरी करने में मुझे आपसे कुछ सहायता पाने का भरोसा है । मैं अपने लिये और अधिक राज्य और किले

नहीं चाहता । जब मैं इस गढ़ को लूँगा तब इसका सिवाय और क्या कर सकता हूँ कि उसे आप ऐसे मित्र को दे दूँ ? मुझे तो उसके प्राप्त करने की ख्याति ही से प्रसन्नता होगी ।” ऐसी ऐसी फुसलाहटों से रतिपाल का मन फिर गया और उसने इस बात का अलाउद्दीन को निश्चय भी करा दिया । इस पर, अलाउद्दीन अपने लक्ष्य को और भी दृढ़ करने के लिये रतिपाल को अपने हरम में ले गया और वहाँ उसने उसे अपनी सब से छोटी बहिन के साथ खान पान करने के लिये एकांत में छोड़ दिया । यह हो चुकने पर रतिपाल मुसल्मानों के डेरे से निकलकर दुर्ग को लौट आया ।

रतिपाल इस प्रकार अलाउद्दीन के पक्ष में हो गया । अतः एव जब वह राजा के पास आया तब उसने जो कुछ मुसल्मानों के डेरे में देखा था और जो कुछ अलाउद्दीन ने उससे कहा था, उसका सच्चा वृत्तांत नहीं कहा । यह न कहकर कि अलाउद्दीन का बल राजपूतों के लगातार आक्रमण से बिलकुल टूट गया है और वह गढ़ लेने का नाम मात्र करके लौटना चाहता है उसने कहा कि वह न केवल राजा से क्षीनतापूर्वक अधीनता स्वीकार कराने ही पर उतारू है वरंच उसमें अपने धमकियों को सच्चा कर दिखाने की सामर्थ्य है । रतिपाल ने कहा कि अलाउद्दीन इस बात को मानता है कि राजपूतों ने उसके कुछ सिपाहियों को मारा है किंतु इसकी उसे कुछ परवा नहीं, ‘गोजर की एक टाँग टूटने से वह लँगडा नहीं कहा जा

सकता' । उसने हम्मीर को सम्मति दी कि ऐसी दशा में आपका स्वयं इसी रात को रणमल से मिलना चाहिए और उसे आक्रमणकारियों को हटाने पर उद्यत करना चाहिए, देश-द्रोही रतिपाल ने कहा कि रणमल एक असाधारण योद्धा है किंतु वह शत्रुओं को हटाने का पूरा पूरा उद्योग नहीं करता है क्योंकि वह राजा से किसी न किसी बात के लिये दुखी है । रतिपाल बोला कि राजा के मिलने से सब बातें ठीक हो जायँगी ।

राजा से मिलने के उपरांत रतिपाल रणमल से मिलने गया और वहाँ जाकर मानों अपने पुराने मित्र को सर्वनाश से बचाने के निमित्त उसने कहा कि न जाने क्यों राजा का चित्त तुम्हारी ओर से फिर गया है इससे युद्ध के पहले ही हल्ले में तुम शत्रु की ओर हो जाना । उसने कहा कि हम्मीर इसी रात को तुम्हें बंदी बनाना चाहता है । उसने उससे वह घड़ी भी बतलाई जब राजा उसके पास इस अभिप्राय से आवेंगे । यह सब करके रतिपाल चुपचाप अपनी इस शठता का परिणाम देखने की प्रतीक्षा करने लगा ।

जब रतिपाल हम्मीर से मिलने गया था तब उनके पास उनका भाई वीरम भी था । उसने अपने भाई से यह विश्वास प्रगट किया कि रतिपाल ने जो कुछ कहा है वह सत्य नहीं है । शत्रुओं ने उसे अपनी ओर मिला लिया है । उसने कहा कि बोलते समय रतिपाल के मुँह से मद्य की गंध आती

थी, और मद्यप का विश्वास करना उचित नहीं । कुल का अभिमान, शील, विवेक, लज्जा, स्वामिभक्ति, सत्य और शौच ये ऐसे गुण हैं जो मद्यपों में नहीं पाए जा सकते । अपनी प्रजा में राजद्रोह का प्रचार रोकने के लिये वीरम ने अपने भाई को रतिपाल के बध की सम्मति दी । किंतु राजा ने इस प्रस्ताव को यह कहकर अस्वीकार किया कि मेरा दुर्ग इतना दृढ़ है कि वह शत्रु को किसी दशा में भी रोक सकता है; किंतु यदि कहीं संयोगवश रतिपाल के बध के अनंतर यह गढ़ शत्रुओं के हाथ में पड़ जायगा तो लोगों को यह कहने को हो जायगा कि एक निर्दोष मनुष्य के बध के दुष्कर्म के कारण उसका पतन हुआ ।

इस बीच में रतिपाल ने राजा के रनिवास में यह खबर फैलाई कि अलाउद्दीन केवल राजा की कन्या से विवाह करना चाहता है और यदि उसकी यह इच्छा पूरी हो जाय तो वह संधि करने के लिये प्रस्तुत है, क्योंकि वह और कुछ नहीं चाहता । इस पर रानियों ने राजकन्या से राजा के पास जाकर यह कहने को कहा कि मैं अलाउद्दीन से विवाह करने में सहमत हूँ । वह कन्या वहाँ गई जहाँ उसके पिता बैठे थे और उसने उनसे अपने राज्य और शरीर की रक्षा के हेतु अपने को मुसल्मान को दे डालने की प्रार्थना की । उस (कन्या) ने कहा “हे पिता मैं एक व्यर्थ काँच के टुकड़े के समान हूँ और आपका राज्य और प्राण चिंतामणि वा

पारस पत्थर के समान है; मैं बिनती करती हूँ कि आप उनको रखने के लिये मुझको फेंक दीजिए ।”

जब वह भोली भाली लड़की इस प्रकार हाथ जोड़कर बोली तब राजा का जी भर आया । उन्होंने उससे कहा, “तुम अभी बालिका हो इससे जो कुछ तुम्हें सिखाया गया है उसके कहने में तुम्हारा दोष नहीं । किंतु मैं नहीं कह सकता कि उनको क्या दंड मिलना चाहिए जिन्होंने तुम्हारे हृदय में ऐसे ख्याल भर दिए हैं । स्त्रियों का अंग भंग करना राजपूतों का काम नहीं, नहीं तो उनकी जीभ काट ली जाती जिन्होंने ऐसी कुत्सित बात मेरी कन्या के कान में कही ।” हम्मीर ने फिर कहा “पुत्री ! तुम अभी इन बातों को समझने के लिये बहुत छोटी हो इससे तुम्हें बतलाना व्यर्थ है । किंतु तुम्हें श्लेच्छ मुसल्मान को देकर सुख भोगना मेरे लिये ऐसा ही है जैसा अपना ही मांस खाकर जीवन काटना । ऐसे संबंध से मेरे कुल में कलंक लगेगा, मुक्ति की आशा नष्ट होगी, इस संसार में हमारे अंतिम दिन कड़ुए हो जायेंगे । मैं ऐसे कलंकित जीवन की अपेक्षा दस हजार बार मरना अच्छा समझता हूँ” । अब वे चुप हुए और दृढ़ता तथा स्नेह-पूर्वक अपनी कन्या को चले जाने को उन्होंने कहा ।

राजा, रतिपाल की सम्मति के अनुसार संध्या के समय अपनी शंकाओं को मिटाने के लिये रणमल के डेरे पर जाने को तैयार हुए, साथ में उन्होंने बहुत थोड़े आदमी लिए ।

जब वे रणमल के डेरे के निकट पहुँचे तब उसको (रणमल को) रतिपाल की बात याद आई, वह यह समझकर कि यदि मैं यहाँ ठहरूँगा तो मेरा वंदी होना निश्चय है, अपने दल के सहित गढ़ से भाग निकला और अलाउद्दीन की ओर जा मिला; यह देखकर रतिपाल ने भी वैसा ही किया ।

राजा इस प्रकार ठग और घबड़ाए हुए कोट में लौट आए और उन्होंने भंडारी को बुलाकर भंडार की दशा पूछी कि कितने दिन तक सामान चल सकता है । भंडारी ने सच्ची बात कहने में अपने प्रभाव की हानि समझ, कहा कि सामान बहुत दिन तक के लिये काफी है । किंतु ज्योंही यह कहकर वह फिरा त्योंही विदित हुआ कि राजभंडार में कुछ भी अन्न नहीं है । राजा ने यह समाचार पाकर वीरम को उसके मारने और उसकी समस्त संपत्ति पद्मसागर में फेंक देने की आज्ञा दी ।

उस दिन की अनेक आपत्तियों को भेलकर, राजा शिथिलता से अपनी शय्या पर जा पड़े । किंतु उनकी आँखों में उस भयावनी रात को नींद नहीं आई । जिन लोगों के साथ वे भाई से बढ़कर स्नेह का व्यवहार करते थे उनका उन्हें ऐसी दशा में अकेले छोड़कर एक एक करके चल खड़े होना उनको असह्य जान पड़ता था । जब सबेरा हुआ तब उन्होंने नित्य-क्रिया की और दरबार में बैठकर वे उस समय की दशा पर विचार करने लगे । उन्होंने सोचा कि जब हमारे राजपूतों ही

ने हमें छोड़ दिया तब महिमासाह का क्या विश्वास, जो मुसल्मान और विजातीय है। इसी दशा में उन्होंने महिमासाह को बुला भेजा और उससे कहा “सच्चा राजपूत होकर मेरा यह धर्म है कि देश की रक्षा में मैं अपना प्राण त्याग दूँ, किंतु मेरे विचार में यह अनुचित है कि वे लोग जो मेरी जाति के नहीं मेरे हेतु युद्ध में अपने प्राण खोवें, इससे मेरी इच्छा है कि तुम कोई रक्षा का ऐसा स्थान बतलाओ जहाँ तुम सपरिवार जा सकते हो जिससे मैं तुम्हें कुशलपूर्वक वहाँ पहुँचवा दूँ।”

राजा के इस शील से सकुचित होकर, महिमासाह बिना कुछ उत्तर दिए, अपने घर लौट गया, और वहाँ तलवार लेकर उसने अपने जनाने के सब लोगों को काट डाला और हम्मीर के पास आकर कहा कि मेरी स्त्री और मेरे लड़के जाने को तैयार हैं किंतु मेरी स्त्री एक बेर अपने राजा का मुँह देखना चाहती है जिसकी कृपा से उसने इतने दिनों तक सुख किया। राजा ने यह प्रार्थना अंगीकार की और अपने भाई वीरम के साथ वे महिमासाह के घर गए। किंतु वहाँ जाने पर यह हत्याकांड देख उनके आश्चर्य और शोक का ठिकाना न रहा। राजा, महिमासाह को हृदय से लगाकर बच्चे के समान रोने लगे। उन्होंने उससे चले जाने को कहने के कारण अपने को दोषी ठहराया और कहा कि ऐसी अलौकिक स्वामिभक्ति का बदला नहीं हो सकता। अतः धीरे धीरे, वे

कोट में लौट आए और प्रत्येक वस्तु को गई हुई समझ, उन्होंने अपने लोगों से कहा कि तुम लोग जो उचित समझो वह करो, मैं तो शत्रु के बीच लड़कर प्राण देने को उद्यत हूँ। इसकी तैयारी में, उनके परिवार की स्त्रियाँ रंगदेवी के साथ चिता पर जलकर भस्म हो गईं। जब राजा की कन्या चिता पर चढ़ने लगी तब राजा शोक के वशीभूत हुए। वे उसे हृदय से लगाकर छोड़ते ही न थे। किंतु उसने अपने को पिता की गोद से छुड़ाकर अग्नि में विसर्जन कर दिया। जब चौहानों की सती साध्वी ललनाओं की राख के ढेर के अतिरिक्त और कुछ न रह गया तब हम्मीर ने मृतक संस्कार किया और तिलांजलि देकर उनकी आत्माओं को शांत किया। इसके अनंतर वे अपनी बची हुई स्वामिभक्त सेना को लेकर गढ़ के बाहर निकले और शत्रुओं पर दूट पड़े। भीषण सम्मुख युद्ध उपस्थित हुआ। पहले वीरम युद्ध की कसामम के बीच लड़ते हुए गिरे, फिर महिमासाह कं हृदय में गाली लगी। इसके पीछे जाज, गंगाधर, ताक और क्षेत्रसिंह परमार ने उनका साथ दिया। सबके अंत में महापराक्रमी हम्मीर सैकड़ों भालों से बिधे हुए गिरे। प्राण का लेश रहते भी शत्रु के हाथ में पड़ना बुरा समझ उन्होंने एक ही बार में अपने हाथों से सिर को धड़ से जुदा कर दिया और इस प्रकार अपने जीवन को शेष किया। इस प्रकार चौहानों के अंतिम राजा हम्मीर का पतन हुआ ! यह

शोचनीय घटना उनके राज्य के अठारहवें वर्ष में श्रावण के महीने में हुई ।

यहाँ पर यह कथा समाप्त होती है । दोनों के मिलान करने पर मुख्य मुख्य बातों में आकाश पाताल का अंतर जान पड़ता है । किस में कहाँ तक सत्यता है इसका निर्णय करना बड़ा कठिन है । दोनों कथाओं में हम्मीर के पिता का नाम जैत्रसिंह लिखा है अतएव इस संबंध में कोई संदेह की बात नहीं जान पड़ती । हम्मीररासो में लिखा है कि हम्मीर का जन्म विक्रम संवत् ११४१ शाके १००८ में हुआ । साथ ही यह भी लिखा है कि अलाउद्दीन का जन्म भी इसी दिन हुआ । इस हिसाब से हम्मीर और अलाउद्दीन का जन्म १०८४ ई० में हुआ । पर अन्य ऐतिहासिक ग्रंथों से यह बात ठीक नहीं जान पड़ती । हम्मीर महाकाव्य में हम्मीर के गद्दी पर बैठने का संवत् १३३० (सन् १२८३ ई०) दिया है । यह ठीक जान पड़ता है । फिर हम्मीर महाकाव्य में लिखा है कि चौहान-राज की मृत्यु उनके राज्य के अठारहवें वर्ष में अर्थात् संवत् १३४८ सन् १३०१ ई० में हुई । अमीर खुशक की तारीख आलाई में यह तिथि तीसरी जिलकाद ७०० हिजरी (जुलाई १३०१ ई०) दी है । मुसलमानी इतिहासों से विदित है कि सन् १२८६ में सुल्तान अलाउद्दीन मुहम्मदशाह अपने चाचा जलालुद्दीन फीरोजशाह को मारकर गद्दी पर बैठा, और सन् १३१६ ई० तक राज्य करता रहा । इस

अवस्था में हम्मीररासो में दिए हुए संवत् ठीक नहीं हो सकते । कदाचित् यहाँ यह कह देना भी अनुचित न होगा कि हम्मीररासो में हम्मीर की जो जन्म कुंडली दी है वह भी ठीक नहीं है ।

दूसरी बात जो इस काव्य के संबंध में विचार करने की है वह यह है कि हम्मीर की अलाउद्दीन से लड़ाई क्यों हुई । हम्मीररासो तथा ऐसे ही अन्य हिंदी काव्यों में मीर महिमा-शाह की रक्षा के लिये युद्ध का होना लिखा गया है और इसमें कोई संदेह नहीं कि इस अद्भुत कथा से हम्मीर का गौरव बहुत कुछ बढ़ जाता है और कथा में भी एक अद्भुत रस का संचार हो आता है । पर हम्मीर महाकाव्य में इसका कहीं नाम भी नहीं है और न कहीं किसी पुराने इतिहास में इसका वर्णन मिलता है पर महिमाशाह का हम्मीर के यहाँ रहना निश्चित है तथा उसके अपने बाल बच्चों को मारकर लड़ाई में हम्मीर के साथ देने की बात भी ठीक है । यह अवस्था तभी हो सकती है जब महिमाशाह अपने को हम्मीर का किसी बड़े उपकार के लिये ऋणी मानता हो । अलाउद्दीन का साथ न देकर हम्मीर का साथ देना एक मुसल्मान सद्दार के लिये निस्सन्देह बड़े आश्चर्य की बात है । हिंदी काव्यों में जिन घटनाओं का उल्लेख है उनका होना तो कोई असंभव बात है ही नहीं । भारतवर्ष में जितने बड़े बड़े युद्ध हुए हैं सब स्त्रियों के ही कारण हुए हैं । पृथ्वीराज के समय में तो मानों इसकी पराकाष्ठा

हो गई थी । पर मुसल्मानों के लिये यह निन्दा की बात थी । इसलिये मुसल्मान इतिहासकारों का इस घटना को छोड़कर युद्ध का कुछ दूसरा ही कारण बताना कोई आश्चर्य की बात नहीं है । पर नयनचंद्र सूरि का कुछ न कहना अवश्य संदेह उत्पन्न करता है । अलाउद्दीन ने जिस नीचता से रतिपाल को मिला लिया इसका तो यह कवि पूरा पूरा वर्णन करता है । यहाँ के कुछ श्लोक उद्धृत कर देना उचित जान पड़ता है ।

अन्तरंतःपुरं नीत्वा शकेशस्तमभोजयत् ।

अपीप्यत्तद्भगिन्या च प्रतीत्यै मदिरामपि ॥ ८१ ॥

प्रतिश्रुत्य शकेशोक्तं ततः सर्वं स दुर्मतिः ।

विरोधोद्धोधिनीर्वाचो गत्वा राज्ञे न्यरूपयत् ॥ ८२ ॥

[सर्ग १३]

इनसे यह स्पष्ट विदित होता है कि नयनचंद्र कुछ मुसल्मानों का पक्षपाती नहीं था । कुछ लोग कह सकते हैं कि जैनी होने से उसका विरोधो होना असंभव नहीं है । मेरा अनुमान तो यह है कि उसने मुसल्मानी इतिहासों के आधार पर अपना काव्य लिखा है क्योंकि उसमें कथित घटनाएँ और सन संवत् सब मुसल्मानी इतिहासों से मिलते हैं । जो कुछ हो इसमें कोई संदेह नहीं कि ऐतिहासिक दृष्टि से नयनचंद्र सूरि का काव्य जोधराज के रासो से अधिक प्रामाणिक है ।

तीसरी घटना जिस पर विचार करना आवश्यक है वह हम्मीर की मृत्यु है। दोनों काव्यों से यह सिद्ध होता है कि हम्मीर ने आत्महत्या की। हम्मीररासो में इसका कारण कुछ और ही लिखा है और हम्मीर महाकाव्य में कुछ और है। जोधराज के अनुसार हम्मीर को विजय प्राप्त हुई और विजय के उत्साह में उसने मुसल्मानी झंडे निशानों को आगे करके अपने गढ़ की ओर पयान किया जिस पर रानियों और रनिवास की अन्य महिलाओं ने यह समझा कि हम्मीर की हार हुई और मुसल्मानी सेना गढ़ को लेने के लिये आ रही है। इस पर अपने सतीत्व की रक्षा के निमित्त उन्होंने अग्नि में अपने प्राण दे दिए। इस पर हम्मीर को ऐसी ग्लानि हुई कि उसने भी अपने प्राण देकर अपने संताप को शांत किया। नयनचंद्र के अनुसार रणमल और रतिपाल के विश्वासघात पर विजय की सब आशा जाती रही और हम्मीर ने पहले राजमहिलाओं को अग्निदेव के अर्पण कर रण में वीरोचित मृत्यु से मरना विचारा। अंत में जब उसका शरीर रणक्षेत्र में विधकर गिर पड़ा तो उसे आशंका हुई कि कहीं मुसलमानों के हाथ से मेरे प्राण न जायें। इसलिये वहीं उसने अपने मस्तक को अपने हाथ से काटकर इस आशंकित अपमान से अपनी रक्षा की। दोनों बातों में राजमहिलाओं का अग्नि में आत्म-समर्पण करना और हम्मीर का आत्महत्या करना मिलता है और इन घटनाओं के संघटित होने में भी कोई संदेह या आश्चर्य की बात

नहीं है। जो कथा इस संबंध में दोनों काव्यों में दी है वह युक्तिसंगत जान पड़ती है। कौन कहाँ तक सत्य है इसका निर्णय करना तो बड़ा कठिन है, विशेष करके ऐतिहासिक प्रमाणों के अभाव में तो इस संबंध में कुछ कहना व्यर्थ है। जोधराज का यह लिखना कि अलाउद्दीन ने समुद्र में कूदकर अपने प्राण दे दिए निस्संदेह असत्य जान पड़ता है। इस युद्ध के १५ वर्ष पीछे तक वह जीता रहा इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं।

जो कुछ हो, ऐतिहासिक अंश में गड़बड़ रहने पर भी हम्मीर की कथा बड़ी अद्भुत है और भारतवर्ष के गौरव को बढ़ानेवाली है। कौन ऐसा स्वदेशाभिमानी होगा जो राज-महिलाओं के जौहर और हम्मीर की वीरता तथा उसके साहस का वृत्तांत पढ़कर अपने को धन्य न मानता हो और जिसका हृदय देशगौरव से न भर जाता हो। धन्य है वह देश जहाँ ऐसे ऐसे वीर हो गए हैं, धन्य हैं वे स्त्रियाँ जो अपने सतीत्व की रक्षा के लिये बिना कुछ सोचे विचारे इस क्षणभंगुर शरीर को नष्ट कर डालती थीं और धन्य हैं वे लोग जो उनके वृत्तांतों को पढ़कर आनंदित और प्रफुल्लित होते हैं और जिन्हें अपने देश के गौरव की रक्षा का उत्साह होता हो।

मैं पहले लिख चुका हूँ कि दो हम्मीर हो गए हैं। एक के विषय में तो मैंने इतना कुछ मसाला इकट्ठा कर दिया है। मेवाड़ के हम्मीर के विषय में भी कुछ कह देना आवश्यक

जानकर ठाकुर हनुवंत सिंह लिखित मेवाड़ के इतिहास से इनका घृत्तांत उद्धृत कर देता हूँ । वह इस प्रकार है—

“लखमसी जी के पीछे मुसलमानों से बैर लेनेवाला अब केवल उनका लड़का अजयसिंह था जो कि केलवाड़े में रहता था । यह केलवाड़ा अर्बली पर्वत के उच्च प्रदेश में है । वहाँ उसकी रक्षा करनेवाले भील लोग थे । अजयसिंह जी के बड़े भाई अरसी जी के कुँअर हम्मीरसिंह को अपने पीछे गद्दी पर बिठलाने का वचन लखमसी जी ने अजयसिंह से ले लिया था इससे तथा अजयसिंह के पुत्र के हम्मीरसिंह के समान पराक्रमी न होने से उनके उत्तराधिकारी हम्मीरसिंह ही थे । इनकी माता के विषय में यह कथा प्रसिद्ध है कि एक दिन अरसी जी युवराजत्व अब था में ऊदबा गाँव के जंगल में आखेट को गए थे । वहाँ जब एक सूअर के पीछे इन्होंने घोड़ा दिया तो वह भागकर ज्वार के खेत में घुस गया । ज्योंही अरसी जी सूअर के पीछे खेत में जाने लगे त्योंही एक कन्या ने, जो उस खेत की चौकसी कर रही थी, इनको भीतर जाने से रोका और कहा कि ठहरो सूअर को मैं बाहर निकाले देती हूँ । फिर उस लड़की ने ज्वार के पेड़ को उखाड़ सूअर को दो चार सपाटा लगाकर उसे उनकी ओर खदेड़ दिया । उस लड़की की निर्भयता को देख आखेटको को बड़ा आश्चर्य हुआ । पीछे जब कि वे एक नाले पर विश्राम करने के लिये ठहरे हुए थे तो सनसनाता हुआ दूर से एक पत्थर का टुकड़ा आया और घोड़े

की टाँग में ऐसे जोर से लगा कि उसका पैर टूट गया । बहुत ही छोटे से पत्थर के टुकड़े से घोड़े का पैर टूटा हुआ देख खोजा गया तो उसकी मारनेवाली भी वही खेत की रखवालिन कन्या निकली । पक्षियों के उड़ाने को उसने गोफन में रख कर गिल्ला फेंका था परंतु दैवयोग से वह घोड़े को आ लगा । जब उसने यह सुना कि घोड़े को चोट लग गई है तो अरसी जी के पास जाकर अपने बिना जाने अपराध की क्षमा बड़ी नम्रता से माँगी । संध्या का लौटते समय अरसी जी को फिर वही कन्या अपने घर को जाती हुई राह में मिली । यह लड़की हाथे पर दूध का मटका रखे और दोनों हाथों में दो पड़रे (भैंस के बच्चे) लिए हुए जा रही थी, उस समय अरसी जी के साथियों में से एक ने हँसी में उसके दूध को गिरा देने का विचार किया और वह मनुष्य घोड़ा दौड़ाता हुआ उसके पास होकर निकला । इससे यह लड़की कुछ भी न घबड़ाई और अपने हाथ में का एक पड़रा घोड़े के पिछले पैरों में ऐसा मारा कि घोड़ा और सवार दोनों धरती पर गिर पड़े और 'सी के बदले उलटी अपनी हानि कर ली । अरसी जी ने घर जाकर निश्चय कराया तो वह कन्या चंदाना वंश (चहुवानों की एक शाखा है) के एक राजपूत की पुत्री निकली । अरसी जी ने उसके बाप को बुलवाकर उससे अपने विवाह करने के लिये वह लड़की माँगी, परंतु उस राजपूत ने निषेध कर दिया । घर पहुँचकर जब अपनी स्त्री से उसने सब वृत्तांत

कहा तो वह पति के इस कार्य से बहुत अप्रसन्न हुई और लग्न स्वीकार करने के लिये अपने पति को फिर अरसी जी के पास उल्टने लौटाया । अंत में अरसी जी का उस कन्या के साथ विवाह हुआ, जिसके पेट से अति पराक्रमी हम्मीर-सिंह ने जन्म लिया । सिंहनी के पेट में तो सिंह ही जन्म लेता है । हम्मीरसिंह जी बचपन में अपनी ननसाल में रहकर बड़े हुए थे ।

“हम्मीरसिंह के काका अजयसिंह जब केलवाड़े में रहते थे तो उनकी मुसलमानों के सिवाय पहाड़ियों में रहनेवाले राजपूत सद्धारों के साथ भी बड़ी लड़ाई रही । इन पहाड़ियों का मुखिया बालेछा जाति का मूंजा नामी एक राजपूत था जिसके साथ लड़ाई करने में एक बार अजयसिंह बहुत घायल हुए । इस समय अजयसिंह के दो पुत्र सजनसी और अजीतसी भी थे जिनकी आयु अनुमान १५ वर्ष के थी परंतु वे कुछ भी बोरता लड़ाई में न दिखा सके, इससे उन्होंने अपने भतीजे हम्मीरसिंह को बुला लिया और उनको सब वृत्तांत कह सुनाया । हम्मीरसिंह अपने दोनों चचेरे भाइयों से बड़े न थे परंतु तौ भी उन्होंने मूंजा बालेछा का सिर काट लेने का उत्साह किया । मरना वा मूंजा का सिर काट लाना ऐसा विचार निश्चय करके वे निकले । थोड़े दिनों में उन्होंने मूंजा का सिर काट लाकर अपने काका को भेंट किया । अजयसिंह इस बात से बहुत प्रसन्न हुए, और मूंजा के ही रुधिर से तिलक करके अपने

पीछे हम्मीरसिंह को राज्य का अधिकारी ठहराया । जब अजयसिंह मरे तो उनसे पहले ही अजमाल मर चुके थे, सजनसी गद्दी के लिये अधिकारी हम्मीरसिंह को नियत हुआ देख दक्षिण में चले गए, जिनके वंश में एक ऐसा वीर पुरुष जन्मा कि जिसने मुसल्मानों से पूरा बदला ही न लिया किंतु अपने असामान्य पराक्रम और साहस से मुसल्मानी राज्य का मूलोच्छेदन ही कर दिया । यह पुरुष मरहटों के राज्य की नींव जमानेवाला सितारे का राजा शिव जी था जो समस्त भारतवर्ष में विख्यात है । सजनसी से बारहवीं पीढ़ी में यह हिंदू धर्म-रक्षक और अतुलित पराक्रमी वीर पुरुष शिव जी हुआ है । सजनसी जी से पीछे दुलीपजी, सीओजी, भोराजी, देवराज, उग्रसेन, माहुलजी, खेलुजी, जनकोजी, संतोजी, शाहजी और शिव जी हुए । अजयसिंह के पीछे हम्मीरसिंह सं० १३०१ ई० में मेवाड़ की गद्दी पर बैठे । उस समय मेवाड़ की गिरती दशा होने से आस-पास के राजा लोगों ने मेवाड़ के राणाओं को अपना शिरोमणि मानना छोड़ दिया था । हम्मीरसिंह ने अपने पहाड़ी साथियों को इकट्ठा करके जिन जिन राजाओं ने इनको अधिष्ठाता मानना छोड़ दिया था उन सभी को परास्त करके अपने अधीन किया । इस प्रकार थोड़े दिनों में ही हम्मीरसिंह ने अपना गौरव आस पास के राजाओं पर जमा लिया । अब चित्तौर को किस विधि लूँ इस विचार में हम्मीरसिंह पड़े ।

“हम्मीरसिंह ने चित्तौर के आस-पास का सारा देश लूटकर उजाड़ डाला, अकेला चित्तौर ही मुसलमानों के अधीन रह गया था । किसी प्रकार उसे लूँ यही हम्मीरसिंह का दृढ़ विचार था । एक दिन उन्होंने अपने सब मनुष्यों को बुलाकर कहा कि “भाइयो ! जिसे जीने की इच्छा हो, जिसे संसार के इन क्षणिक सुखों के बदले स्वर्ग का सुख छोड़ देना हो, जिसे अपनी प्रतिष्ठा की अपेक्षा प्राण प्यारे हों, जिसे अपने उग्र वैरी मुसलमानों का डर हो, जिसे अपनी गई हुई भूमाता को तुकों के हाथ में से निकाल लेने की हौस न हो और जिसको इस अर्वली पर्वत की झाड़ी जंगलों में सदा पड़ रहने की इच्छा हो, वह भले ही सुख से इस अर्वली की विकट गुह्य गुफाओं में रहे मेरी आज्ञा है, जो मेरी भुजा में बल होगा तो तुम्हारे चले जाने पर भी अपने कुलदेवता की सहायता से अकेला भी चित्तौर को लूँगा । तुम लोग सुख से जाओ और जो ईश्वर-इच्छा से मैं चित्तौर को जल्दो ले सका तो तुमको पोछे बुला लूँगा, उस समय आ जाना ।” हम्मीरसिंह के मनुष्यों में राजपूत भी थे परंतु अधिक तो आसपास के भील लोग थे । उन लोगों ने बालकपन से ही हम्मीरसिंह का पराक्रम देख रखा था और निरंतर उनके साथ रहने से वे भी राजपूतों के समान ही साहसी और पराक्रमी हो गए थे और हम्मीरसिंह के चाल चलन तथा व्यवहार से भी वे लोग ऐसे प्रसन्न थे कि यदि वे कहते तो प्राण देने को वे लोग उद्यत हो जाते ।

हम्मीरसिंह के उपरोक्त वचनों का उत्तर उन लोगों ने इस प्रकार दिया “हम मरेंगे अथवा शत्रुओं को मारेंगे परंतु अपने राजा को छोड़कर कभी पोछे न हटेंगे, हम अपने कुल को कलंकित न करेंगे, हम अपने शत्रुओं के हाथ में से अपनी भूमाता को छुड़ाने के लिये अपने प्राण देंगे और इस जगत् के क्षणस्थायी सुखों को छोड़ स्वर्ग का सदैव सुख भोगेंगे।” इस प्रकार वे एक स्वर होकर बोले कि मानो एक साथ मेघ की गर्जना हुई। हम्मीरसिंह ने इन वीर राजपूतों के ऊपर पुष्पों की वृष्टि करके कहा “धन्य हो मेरे प्यारे ! धन्य हो ! धन्य हो क्षत्रिय पुत्रो ! धन्य हो ! ऐसे ही उत्तर की मैं आशा रखता था और सोही अंत को मिला। तुम लोगों की शुभचिंतकता से मैं अपनी भूमाता को छुड़ा सकूँगा। तुम्हारी राजभक्ति और तुम्हारी एकता देख, तुम्हारा साहस और पराक्रम देख हमारे कुलदेवता हमारे सहायक होंगे। और मुझे निश्चय है कि हमारा मनोरथ सिद्ध होगा; इसलिये प्यारे वीर पुरुषों तैयार हो जाओ। अपने बाल बच्चों को इस पहाड़ की सुरक्षित गुफा में छोड़ आओ और उनकी सब प्रकार रक्षा होती रहे इसके लिये पाँच सहस्र वीर भीलों को नियत कर चलो।” हम्मीरसिंह के इन वाक्यों को सुनकर सर्वत्र जय जयकार होने लगी। उक्त प्रकार के प्रबंध करके वे सब चित्तौर के लिये पहाड़ों से उतर पड़े।

“इस समय हम्मीरसिंह के पास पाँच हजार से कुछ अधिक मनुष्य थे तथापि, ‘एक मराऊ सौ को मारे’ इस कहावत

के अनुसार वे पाँच लाख के समान थे । उन्होंने चित्तौर के चारों ओर का देश लूट लिया, ग्राम जला दिए, मुसलमानों को पकड़ लिया । चारों ओर अशांति रहने से व्यापारी व्यापार से और किसान खेती करने से रुक गए । मुसल्मान लोग अपनी प्रजा का रक्षण न कर सके । इससे प्रजा का समूह हम्मीरसिंह के अधीन हो बसने लगा । इस समय हम्मीरसिंह की रहन सहन अर्वली पर्वत की चोटियों पर केलवाड़े में थी । वहाँ जाने का मार्ग बड़ा बेड़ा था । शत्रुओं के अधिकार कर लेने योग्य कदापि न था । अर्वली पर्वत के भीतरी गुप्त स्थलों को वहाँ से भाग जाने का मार्ग पृथक् था । ये गुप्त स्थल पहाड़ों की घनी झाड़ियों में होने से बड़े विकट थे । वहाँ इतने फलादि खाने योग्य पदार्थ उत्पन्न होते थे कि वर्षों तक सहस्रों मनुष्यों का निर्वाह हो सकता था । केलवाड़े से पश्चिम ओर का मार्ग खुला था जहाँ होकर गुजरात और मारवाड़ का माल व्यापारी लाते थे तथा मित्रता रखनेवाले भीलों से भोजन की बड़ी सहायता मिलती थी । बाल बच्चों की रक्षा के लिये जो पाँच सहस्र भील नियत थे वे आवश्यकतानुसार रसद पहुँचा जाते थे । अच्छी तरह सोच समझ के और चतुराई से हम्मीरसिंह ने अपने लिये निर्भय स्थान ढूँढ़ा था । परंतु हम्मीरसिंह की बुद्धि को भला उनका दुर्दांत शत्रु अलाउद्दीन कैसे सह सकता था । वह सैन्य लेकर स्वयं आया और उसने अर्वली का पूर्व भाग जीत लिया । परंतु इससे

हम्मीर की कुछ भी हानि न हुई। बादशाह ने अर्वली का पूर्वी भाग जीत लिया तो वे दक्षिण भाग में धूम मचाने लगे। अंत में अलाउद्दीन थक गया और हम्मीरसिंह को अधीन करने का काम चित्तौर के सूबेदार मालदेव को सौंप आप दिल्ली को लौट गया।

मालदेव अपने बल से तो हम्मीरसिंह को वश में कर न सका, छल से उनको वश में लाने तथा उनके अपमान करने का विचार कर अपनी पुत्री के विवाह कर देने के बहाने से उसने हम्मीरसिंह के पास नारियल भेजा। हम्मीरसिंह ने अपने संपूर्ण राजपूत लोगों तथा साथियों से इस विषय में सम्मति ली तो उन सभी ने इस संबंध के स्वाकार करने का निषेध किया, परंतु हम्मीरसिंह ने कहा कि “भाइयो मेरी समझ में तो यही आता है कि तुम सब भूल रहे हो। तुम लोग जो भय बतलाते हो उससे मैं अज्ञान नहीं हूँ परंतु राजपूत होकर किसी के डर से अपना निश्चय किया हुआ कार्य छोड़ देना यह बड़ी कायरता है। यह राजपूत का नहीं किंतु दासीपुत्र का काम है। राजपूतों को तो सदा दुःख के समय के लिये कटिबद्ध रहना चाहिए। राजपूतों को तो एक बार घायल होकर घर भी छोड़ना पड़ता है, और एक बार बाजे गाजे के साथ गद्दों पर भी बैठना पड़ता है। जो भेजा हुआ यह टीका न स्वीकार करूँ तो मेरी माँ की कांख कलंकित होवे। मेरे शूरवीर भाइयो ! मैं यह जानता हूँ कि तुम लोग

अपने प्राणों की अपेक्षा मेरे प्राणों की अधिक चिंता रखते हो परंतु इसमें तुम्हारी भूल है। घर में बैठे बैठे सवा मन रुई के गद्दे पर सोते सोते और बातें करते करते सैकड़ों मनुष्य मर जाते हैं, यह हम सभी से छिपा नहीं है। क्या यह तुम समझते हो कि जो इस संसार का मारने वाला जिलानेवाला है वह हमको जो डरकर घर में छिप जावेंगे तो न मारेगा। और जो उसे जीवित रखना होगा तो हमारा नाम मिटानेवाला कौन है ? इसलिये घर में निकम्मे पड़े पड़े मर जाने से तो शत्रु को मारते मारते मरना ही श्रेष्ठ है, नहीं तो जीना भी किस काम का है। भला इस बहाने से जिन स्थानों में मेरे बाप दादे रहते थे, जिन किलों के ऊपर मेरे बाप दादों के झंडे फहराते थे, जिन जंगलों में मेरे बाप दादों के शरीर का रुधिर बह चुका है, वे स्थल, वे गढ़ और राजमहल तो देखने को मिलेंगे। मेरे बाप दादे जिन स्थानों में मरे हैं वहाँ मैं भी मरूँगा उनके साथ मैं भी स्वर्गधाम पाऊँगा। कहीं हमारे कुल देवताओं ने ही अथवा हमारी भूमाता ने ही इस बहाने से मुझे वहाँ बुलवाया हो। कदाचित् उनकी इच्छा यही हो कि मैं वहाँ जाऊँ, इसलिये वहाँ जाने से वे भी हमारी सहायता अवश्य करेंगी। भाइयो ! मेरी इच्छा है कि नारियल को खोकार करना चाहिए। उनके वचन सुनते ही सब लोगों में वीर रस उमड़ आया और यह बात सबने खोकार कर ली और हम्मीरसिंह ने पाँच सौ सवार लेकर चित्तौर जाने का विचार

कर लिया । हम्मीरसिंह अपने छँटे छँटाए पाँच सौ सवार लेकर चित्तौर के निकट पहुँचे, उस समय मालदेव के पाँच लड़के उनकी अगवानी को आए । द्वार पर तोरण बँधा हुआ न देखा, तथा नगर में कोई धूमधाम और विवाह की तैयारी न देखी, इससे उन्होंने मालदेव के पुत्रों से पूछा कि क्यों क्या बात है, विवाह की कुछ धूमधाम नहीं दीखती । वे कुछ उत्तर न दे सके । इससे हम्मीरसिंह क्रोध में भरे हुए चित्तौर में जाकर द्वार में बैठ गए । हम्मीरसिंह का कोप और उनके मनुष्यों के लाल मुख देख मालदेव के देवता कूँच कर गए । उनके पकड़ लेने की तो सामर्थ्य कहाँ थी । पाँच सौ वीर नंगी तलवारें लिए अडिग जमे हुए थे, वहाँ किसकी सामर्थ्य थी जो हम्मीरसिंह की ओर देख सके । हम्मीरसिंह अकेले भी मालदेव और उसके पाँच पुत्र के लिये काफी थे । मालदेव ने डरकर अपनी पुत्री के साथ हम्मीरसिंह का पाणिग्रहण कर दिया । उस लड़की ने हम्मीरसिंह को चित्तौर लेने की यह युक्ति बतलाई कि आपको जिस समय दहेज दिया जाय, उस समय आप उस वृद्ध महता को जो मेरे पिता का बड़ा चतुर सेवक है अपने लिये माँग लेना । निदान यही हुआ । इस भाँति विवाह करके हम्मीरसिंह अपने घर को लौटे । केलवाड़े में लोग बड़े अधीर हो रहे थे परंतु हम्मीरसिंह को कुशलपूर्वक लौट आया देख लोग आनंद में मग्न हो गए ।

“इस रानी से हम्मीरसिंह के खेतसी नामक पुत्र जन्मा । जब खेतसी एक वर्ष का हुआ तो उसकी माता ने अपने बाप को लिखा कि मुझे अपने क्षेत्रपाल देवता के पगों लगना है, इसलिये मुझे वहाँ बुला लो । मालदेव उस समय मेर लोगों के साथ लड़ने को गया हुआ था, इससे उसके भाइयों ने अपनी बहिन को बुला लिया । इस प्रकार हम्मीरसिंह की खो, उनका पुत्र और कुछ मनुष्य चित्तौर में प्रविष्ट हुए । उसी बूढ़े महता के यत्न से जो कि मालदेव के यहाँ से सेना का अध्यक्ष रह चुका था, और अब हम्मीरसिंह के यहाँ रहता था यह परिणाम निकला कि चित्तौर की संपूर्ण राजपूत सेना हम्मीरसिंह के पक्ष में हो गई । हम्मीरसिंह को गद्दी पर बिठाने के समाचार भेजे गए । हम्मीरसिंह आगे से ही सावधान होकर आस पास फिरते रहते थे । यह समाचार पाते ही आ निकले, परंतु इतने ही में शत्रु की सेना भी लड़ने को आ गई । इस समय हम्मीरसिंह के पास थोड़े और शत्रु के पास बहुत से मनुष्य थे परंतु बड़े पराक्रम के साथ अपनी तलवार का स्वाद चखाते हुए हम्मीरसिंह सबको परास्त करके विजय प्राप्तकर चित्तौर में आ गद्दी पर बैठ गए ।

“अलाउद्दीन उस समय मर गया था और मुहम्मद तुगलक उस समय बादशाह था । मालदेव यह देखकर कि चित्तौर छिन गया और बिना बादशाही मदद के फिर मिलना कठिन है, दिल्ली को भाग गया ।

“चित्तौर के गढ़ पर राणा जी का झंडा फहराता हुआ देख पहाड़ों में से आस पास के ग्रामों में से तथा गुप्त स्थानों में से निकल निकलकर टिड्डा दल की भाँति लोग चित्तौर में घुसने लगे। चित्तौर में से मुसलमानों का राज्य उठ गया और राज-पूतों का आ गया, यह सुनकर लोग आनंद मग्न हो गए और दूर दूर से वहाँ आने लगे। छोटे और बड़े सब ही लोग मुसलमानों से बदला लेने की उमंग के साथ आ एकत्रित हुए। जो इस समय मुसलमानों की सेना चित्तौर लेने को आवे तो उसे कुचल डालो ऐसा वचन सबके मुख से निकलने लगा। हम्मीरसिंह की सेना की कमी न रही। मुसलमानों से युद्ध करने की उमंग में चित्तौर में झुंड के झुंड सहस्रों मनुष्य फिरने लगे। सब कहने लगे कि जो मुसलमानी सेना ऐसे समय में लड़ने को आ जावे तो उसकी अच्छी दुर्गति हो और वे जो कह रहे थे सो ही हुआ। मुहम्मद अपने छिने हुए राज्य को लौटाने को आया। हम्मीरसिंह के पास बिना बुलाए सहस्रों मनुष्य मुसलमानों के प्राण लेने को आ उपस्थित हुए और उनके उत्साह को देख राणाजी तत्काल चित्तौर से बाहर लड़ने के लिये निकले। सिंगोली स्थान के निकट बड़ा संग्राम हुआ। सारांश यह है कि राजपूतों ने इस उत्कटता से युद्ध किया कि मुसलमानों का एक भी मनुष्य दिल्ली को लौटकर न जाने दिया।

“इस लड़ाई में स्वयं मुहम्मद पकड़ा गया। मालदेव का पुत्र हरीसिंह हम्मीरसिंह के साथ द्वंद्व युद्ध करता हुआ मारा

गया । मुहम्मद को तीन महीने तक हम्मीरसिंह ने बँधुआ बना-
कर रखा । पीछे मुहम्मद ने अजमेर, रणथंभौर, नागौर आदि
पर्गने सौ हाथी और पचास लाख रुपया देकर छुटकारा पाया ।

“हम्मीरसिंह का बड़ा साला बनबीरसिंह उनके पास
नौकरी के लिये आया । राणा जी ने उसे सत्कारपूर्वक अपने
पास रखा और उसके निर्वाह के लिये नीमच, जीरण, रतन-
पुर और कीरार ये पर्गने जागीर में दिए । जागीर देते समय
राणा जी ने उससे कहा कि ‘यह जागीर भोगो और प्रामा-
णिक रीति से चाकरी देते रहो । तुम एक समय तुरकों के
पादसेवी थे परंतु अब तो अपनी ही जाति के, स्वधर्मवाले के
तथा अपने सगे संबंधी के नौकर हो । जिस भूमि के लिये
मेरे बाप दादों तथा सहस्रों शुभचिंतक पुरुषों ने अपना रुधिर
बहाया था उस भूमि को फिर लौटा लेने का मेरे ऊपर ऋण
था सो मैंने कुलदेवताओं की कृपा से लौटा लिया । तुम
अब से तुर्कों के नौकर न रहकर राजपूत के हुए सो ईमानदारी
से काम करना ।’ बनबीर भी वैसा ही ईमानदार निकला ।
उसने मरते समय तक शुद्ध चित्त से सेवा की और चंबल नदी
के ऊपर का भीनौर ग्राम जीतकर मेवाड़ में मिलाया ।

“जब से चित्तौर को मुसलमानों ने ले लिया था तभी से
मेवाड़ के राणाओं की प्रतिष्ठा घट गई थी । भरतखंड के समस्त
देशी राज्यों में मेवाड़ के राणा शिरोमणि गिने जाते थे परंतु
चित्तौर के निकल जाते ही इसमें बाधा पड़ गई थी । जो राजा

कर देनेवाले थे उन्होंने कर तथा गद्दो पर बैठते समय भेंट, और आवश्यकता के समय पर सेना द्वारा सहायता करना आदि सब बंद कर दिया था। उस समय संपूर्ण चित्रिय राज्य निर्बल थे। उनको किसी के आश्रय की आवश्यकता थी। जब तक चित्तौर में राणा रहे वे लोग उनके आश्रय में रहे परंतु चित्तौर निकल जाने से वे दिल्ली के बादशाहों के अधीन हो गए, परंतु राणा हम्मीरसिंह जी ने फिर से इस प्रवाह को फेरा। उन्होंने चित्तौर को मुसल्मानों से छीनकर उन फेरफारों को फिर ज्यों का त्यों कर दिया जिन्हें कि मुसल्मानों ने अपने राज्य समय में कर डाला था। देश के संपूर्ण चित्रिय राजा मुसल्मानों की अपेक्षा चित्तौर के राणाओं के अधीन रहने से प्रसन्न हुए। ज्यों ही हम्मीरसिंह जी ने चित्तौर ले लिया और मुहम्मद को हराया कि संपूर्ण आर्य वंश के राजा एक के पीछे एक भेंट ले लेकर आए, कर देने लगे और यथालमय सेना द्वारा युद्ध में सहायता करने लगे। इस भाँति मारवाड़, जयपुर, बूंदी, ग्वालियर, चंदेरी, राजौड़, रायसेन, सीकरी, कालपी और आबू आदि ठिकानों के राजा हम्मीरसिंह जी के आज्ञाकारी हुए। हम्मीरसिंह जी भरतखंड के समस्त राजपूत राज्याँ में महाराजाधिराज बन गए। मुसल्मानों के आने से पहले इस देश में मेवाड़ के राणाओं की शक्ति अधिक थी, मुसल्मानों के आते ही वह दिन दिन घटने लगी। हम्मीरसिंह जी ने इस अवनति को केवल रोका ही नहीं किंतु मुसल्मानों के आने से

पहले मेवाड़ की जो उत्तम दशा थी फिर उसी पर उसे पहुँचा दिया । मुहम्मद के पीछे किसी भी बादशाह ने चित्तौर के लेने का साहस न किया, इसका एकमात्र हेतु हम्मीरासह जी के पराक्रम का भय था । इसी से हम्मीरसिंह के राज्यशासन के पिछले पचास वर्षों में मेवाड़ में अटल शांति रही और इस दीर्घकाल की शांति ने मेवाड़ देश को व्यापार, धन, विद्या, सभ्यता, तथा शूर पुरुषों से परिपूर्ण कर दिया । हम्मीरसिंह जी जैसे बलवान् थे वैसे ही राज्य चलाने में, न्याय करने में, कलाकौशल को उन्नति देने में प्रवीण थे । उनके राज्य में यह कहावत पूर्णतया चरितार्थ हो गई थी कि “बाघ और बकरी एक घाट पानी पीते हैं”; शांति बढ़ने से संपूर्ण व्यापारी, किसान और कारीगर अपने अपने धंधों में लग गए, इससे देश में संपत्ति बढ़ी जिससे राज्य की आय में अधिकता हुई । इन्होंने उत्तम उत्तम स्थान बनाकर कारीगरी की उन्नति की और प्रजा का न्याय यथोचित करके तथा पुत्रवत् पालन करके सबसे आशीर्वाद प्राप्त किया । इस भाँति चौंसठ वर्ष राज्य भोगकर अति वृद्धावस्था में सन् १३६५ ई० में हम्मीरसिंह जी ने वैकुण्ठधाम का मार्ग लिया । परम बुद्धिमान् और पराक्रमी महाराणा हम्मीरसिंह जी अपने पुत्र खेतसी जी के लिये शांति-संपन्न और विस्तीर्ण राज्य छोड़ गए । मेवाड़पति महाराणा हम्मीरसिंह जी अपनी अक्षय कीर्ति छोड़कर मरे । वहाँ के लोग उन्हें अब तक सराहते हैं ।”

इन हम्मीर के विषय में विशेष कुछ लिखना अथवा इनके संबंध की घटनाओं पर विचार करना मैं आवश्यक नहीं समझता । एक तो इनका इस रासो काव्य से कोई संबंध नहीं है, दूसरे यह भूमिका योंही इतनी बड़ी हो गई है कि अब इसे और बढ़ाना अनुचित जान पड़ता है । केवल कथाभाग मैंने इसलिये दे दिया है कि जिसमें पाठकों को इसके जानने का यही अवसर प्राप्त हो जाय और वे स्वयं इसके विषय में और जानने का उद्योग करें । जिन महाशयों को हम्मीर के विषय में कुछ लिखने का अवसर प्राप्त हो उन्हें उचित है कि वे दोनों हम्मीरों को अलग अलग मानकर उनके संबंध की घटनाओं का उल्लेख करें ।

बस अब मुझे हिंदी के प्रेमियों से क्षमा माँगनी है कि एक तो इस भूमिका के लिखने में इतना विलंब हो गया, दूसरे यह भूमिका इतनी बड़ी हो गई । आशा है कि पहले अपराध का मार्जन दूसरे से हो जाय ।

इस भूमिका को समाप्त करने के पहले मैं कुँवर कन्हैया जू और पंडित रामचंद्र शुक्ल को अनेक धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने इसके कई अंशों के लिखने में मुझे बड़ी सहायता दी । साथ ही मैं कुँवर कृष्णसिंह वर्मा को भी धन्यवाद दिए बिना नहीं रह सकता । उन्हीं के द्वारा मुझे यह काव्य प्राप्त हुआ । ठाकुर विजयसिंह जी ने इस काव्य को प्राप्त करने और कुँवर कृष्णसिंह जी की सहायता करने में जो

(१००)

कष्ट उठाया उसके लिये मैं उनका भी उपकार मानता हूँ ।
आशा है कि ये सब महाशय इसी प्रकार मुझ पर कृपा बनाए
रहेंगे जिससे मैं अन्य अन्य ऐसे काव्यों के संपादन करने में
समर्थ होऊँ ।

काशी,
६ फरवरी १९०८

{

श्यामसुंदरदास

हम्मीररासो

दोहा

सिन्धुर्वदन अमंद दुति, बुद्धि सिद्धि बरदाय ।
सुमिरत पद पंकज तुरत, विघ्न अनेक बिलाय ॥ १ ॥

छप्पय

दुरद बदन बुधि सदन चंद्र लल्लाट बिराजै ।
भुजा च्यारि आयुद्ध तेज फरसी कर राजै^१ ॥
इक दंत छविधौम अरुण सिंदुरमय सोहै ।
मनो प्रात रवि उदित कहन उपमा कवि को है ॥
कर कमल माल मोदक लिए उर उदार उपवीत बर ।
शिव शिवा सुवन गणराज तुम देहु सदा बरदान बर^२ ॥२॥
पुंडरीक सुत सुता तासु पद कमल मनाऊँ ।
बिसद बरण^३ बर बसन बिसद भूषन हिय ध्याऊँ ॥
बिसद जंत्र सुर शुद्ध तंत्र तुंबर जुत सोहै ।
बिसद ताल इक भुजा द्वितिय पुस्तक मन मोहै ॥

गति राजहंस हंसह चढ़ी रटी सुरन कीरति बिमल ।

जय मात बिमल^१ बरदायिनी देहु सदा बरदान बल ॥३॥

छंद पद्धरी

जय विघ्नराज गणईशदेव ।

जय जगदंब जननी सएब^२ ॥

गुरु पाद पद्म बंदन सुकीन ।

सब सज्जन पद मन^३ लीन कीन ॥ ४ ॥

पृथिराज राज जग भौ प्रसिद्ध ।

भृगुवंश मध्य प्रगटे सुसिद्ध ॥

नृप चंद्रभांनु तिहि वंश मध्य ।

किरवान दान होऊ प्रसिद्ध ॥ ५ ॥

पिच निंबराण जग ग्राम नाम ।

जुत वर्णाश्रम निज धर्म धाम ॥

जय कीरति भुवमंडल उदार ।

अरु तेज प्रतापी बल अपार ॥ ६ ॥

सब कहैं राठ को पातिशाह ।

जस श्रवन सुनन की सदा चाह ॥

द्विजराज गौड़कुल जग प्रसिद्ध ।

विद्या विनीत हरि धर्म वृद्ध ॥ ७ ॥

सब दया दान उदार वीर ।

गुण सागर नागर परम क्षीर ॥

कुल पंच वृत्त के मूल जान ।
 द्विज आदि गौड़^१ जानत जहान^२ ॥ ८ ॥
 सौ चौदह सै चालीस च्यार ।
 जन सासन सागर अति उदार ॥
 अब सब को किंकर मोहि जानि ।
 ऋषि अत्रि गोत्र मैं जन्म मानि ॥ ९ ॥
 डिडवरिया राव कहि बिरद ताहि ।
 शुभ राठ देस मैं उदित आहि ॥
 तिहिं नाम ग्राम भल बीजवार ।
 सब प्रजा सुखी जुत वरण चार ॥ १० ॥
 जहँ बालकृष्ण सुत जोधराज ।
 गुन जोतिष पंडित कवि समाज^३ ॥
 नृप करी कृपा तिहिं पर अपार ।
 धन धरा बाजि गृह बसन सार ॥ ११ ॥
 बाहन अनेक^४ सतकार भूरि ।
 सब भाँति अजाची कियो मूरि ॥
 नृप एक^५ समय दरबार माहिं ।
 रासो हमोर कह्यौ सुन्यो नाहिं ॥ १२ ॥
 नृप प्रश्न करिय यह उभै बात ।
 सब कह्यौ वंश उत्पति सुतात ॥

१ सोह आदि गोर । २ जानि । ३ उदार । ४ बात ।

अरु कहौ साहि हम्मोर बैर ।

किहि भाँति^१ कंक बढ्छ्यौ सु फेर ॥१३॥

तब कही प्रथम यह कल्प आदि ।

जल सेस सैन जब हूँ अनादि ॥

नहि धरणि चंद्र सूरज अकाश ।

नहि देव दनुज नर बर प्रकाश ॥१४॥

सब बीज वृक्ष^२ हरि संग मेलि ।

करि आप जोग निद्रा सकेलि ॥

करि सैन अंत निज शक्ति जानि ।

ऊरण सुतंत्र करि सूत्र मानि ॥१५॥

हूँ माया ईश्वर उभै नाम ।

करि महत तत्व गुण प्रगट जाम ॥

यह धरि चरित्र^३ लीला अपार ।

हरि नाभि कोस पंकज प्रचार^४ ॥१६॥

तिहि प्रगट भए ब्रह्मा सु आदि ।

वाराहकल्प यह कहि अनादि ॥

बहु काल ब्रह्म चिंता सु कीन ।

मैं कौन करों का कर्म कीन^५ ॥१७॥

अध उद्ध अम्यों बहु कमल नाल ।

नहि पार लह्यौ तदपि भुआल^६ ॥

१ बात । २ जुक्त । ३ धर्माचित्त । ४ बढ्यो पंकज अपार
असार । ५ कर्मचीन, कर्महीन । ६ भुआय ।

करि ध्यान स्वयंभू लख्यौ आय ।
 तप करो सृष्टि उपजै अमाय ॥१८॥
 तप करयौ स्वयंभू अति प्रचंड ।
 तब भयउ प्रजापति विधि अखंड ॥
 मानसी सृष्टि कीनी उदार ।
 सब वृत्त बीज किन्ने अपार ॥१९॥
 जल गगन तेज भुव वायु मानि ।
 सनकादि भए सुत चारि मानि^१ ॥
 तप पुंज भये नहि सृष्टि भोग ।
 तहाँ मध्य भए तब रुद्र जोग ॥२०॥
 सन तैं मरीचि भय तब सु आय ।
 उपजे पुलस्त ऋषि श्रवण पाय ॥
 इमि भए नाभि तैं पुलह और ।
 कृत भए ब्रह्म कर तैं जु मौर ॥२१॥
 भृगु भए स्वयंभू त्वचा थान ।
 भय प्राण नात वाशिष्ट मान ॥
 अंगुष्ट दत्त उपजे सु ब्रह्म ।
 नारद जु भए उतसंग ब्रह्म ॥२२॥
 भय छाया तैं कर्दम ऋषील ।
 अरु भए प्रष्टि अद्धर्म दीस ॥

अरु हृदय भए कामा उदार ।
 करदन तें भौ धर्मावतार ॥२३॥
 भय लोम अधर तैं अति बलिष्ठ ।
 बानी जु विमल मुख तैं प्रतिष्ठ ॥
 पद निरत मिण्ड^१ तैं सिधु जानि ।
 यहि बिधि जु प्रजापति ब्रह्म मानि ॥२४॥
 अब सुनहु वंश तिनके अपार ।
 यह भइय सृष्टि चहुँ खाँ निवार ॥
 शिव कै जु सती त्रिय बिन प्रसूत ।
 दिय दत्त शाप तातैं न पूत ॥२५॥
 इक कला नाम त्रिय धर मरीच ।
 द्वै पुत्र भए ताकै जु बोच ॥
 इक भए प्रथम कश्यप सुजान ।
 फिर उपजि धर्म जहँ पूर्णमान ॥२६॥
 भय कश्यप के सूरज सु आय ।
 सो भयो वश सूरज सुगाय ॥
 अरु सुनो अत्रि कै पुत्र तीन ।
 इक दत्त सोम जान्यो प्रवीन ॥२७॥
 ऋषि भए अपर दुर्वास नाम ।
 सोइ सुनो श्रवण तिहि वंश जाम ॥

सुत भयो सोम के बुद्ध आय ।
 पुरुरवा पुत्र ताकै सुभाय ॥ २८ ॥
 षट पुत्र भए ताके प्रसिद्ध ।
 भए सोम वंश तिनके जु सिद्ध ॥
 भृगु वंश सुनो अतिशय उदार ।
 चहुवान भए तिनते^{*} अपार ॥ २९ ॥
 इक ख्यात नाम तिय अति अनूप ।
 भय उमै पुत्र ताके जु भूप ॥
 इक कह्यो प्रथम धाता जु नाम ।
 फिरि भए विधाता धर्मधाम ॥ ३० ॥
 इक^१ अपर प्रिया भृगु कै कनिष्ट ।
 ए पुत्र भए ताके प्रतिष्ट ॥
 भय शुक्र जेष्ठ गुरु असुर जानि ।
 तिहि अनुज चिमन^२ तप पुंज मानि ॥ ३१ ॥
 भृगु के जु भए जग अति विख्यात ।
 जिहि शुक्र नाम बल तेज तात ॥
 तिनके रिचीक भय पुत्र आय ।
 जमदग्नि भए तिनके सुभाय ॥ ३२ ॥
 ऋषि जामदग्नि सुत परशुराम ।
 हनि क्षत्रि सकल द्विज तेजधाम ॥ ३३ ॥

दोहरा छंद

ब्रह्मा के सुत भृगु भए, भार्गव भृगु के गेह ।
 ऋषि रिचिचक ताके भए, तेज पुंज तप देह ॥३४॥
 जामदग्नि तिनके भए, परसराम सुत जाहि ।
 क्षत्रि मेंटि विप्रन दर्ई, भुंमि किती बर ताहि ॥३५॥
 कमलासन कुल मैं प्रकट, परसराम रणधीर ।
 सहस्राऽर्जुन बैर तें, हने जु क्षत्री वीर ॥३६॥
 बार इकीस जुद्धि जिन, दीना^१ उर्वी राज ।
 बच्यो न क्षत्री जगत तब, आए तप के काज^२ ॥३७॥

छंद मुक्तादाम

हने क्षिति के सब वीर अपार ।
 भरे बहु कुंड जु श्रोणित धार ॥
 करे तिहि^१ पितृन तर्पन नीर ।
 भए सब हर्षित पित्र सधीर ॥ ३८ ॥
 दए तब आसिष प्रेम समेत ।
 चले ऋषिराज तपःकृत हेत ॥
 रह्यो नहि^१ क्षत्रिय जाति विशेष ।
 भए निर्मूल जु क्षत्रि अशेष^३ ॥ ३९ ॥
 बचे कछु दीन मलीन सुवेस ।
 कहूँ तिनके अब रूप असेस ॥

धरै^१ तृणदंत कि दीन बयन्न^१ ।

किए तियरूप लखे जु नयन्न ॥ ४० ॥

नपुंसक बालक वृद्ध सु दीन ।

धरै^१ मुख नष्प सुबैन सहीन ॥

तजे तिन आयुध पिट्टि दिखाय ।

गहे तिन आय सुभाय सुपाय ॥ ४१ ॥

मिले सब पित्र सु^२ दीन असीस ।

भए सुअ निर्भय^३ पित्र जगीस ॥

तजो अब उग्र^४ असेस स्वभाव ।

करो सब उप्पर छोभ सु चाव ॥ ४२ ॥

तजे तब क्रोध भए सु दयाल ।

चले पद बंदि पिता पदु हाल ॥

भई कछु काल क्षत्रो विन भुंमि ।

नहीं जग रक्त रह्यौ सोइ पुंमि^५ ॥ ४३ ॥

बढे^६ रजनीचर वृंद अनेक ।

मिटे जप तप्प सुवेद विवेक ॥

करे उतपात सुघात अपार ।

तजे कुल धर्म सु आश्रम चार^७ ॥ ४४ ॥

मिटी मरजाद रहै सब भीत ।

तबै ऋषिराजन बाढ़न^८ चीत ॥

१ नयन्न । २ जु । ३ अनिरिय । ४ उग्र । ५ नहीं जग रञ्जिक
यो जग पुमि । ६ बढे । ७ चार । ८ बाढ़त, बडूढत ।

जुरे ऋषिवृंद सु अर्बुद आय ।

जहाँ ऋषि चाय बसै सत भाय ॥ ४५ ॥

सुर नर नाग मिले सह आय ।

रचे रजनीचर मेटि उपाय^१ ॥

मिले कमलासन और वसिष्ठ !

कियो^२ सुचि कुंड अनिल^३ सुइष्ट ॥ ४६ ॥

दोहरा छंद

चाय आय अर्बुद सुनग^४ , मिलेय सकल ऋषिराय ।

तब आराधिय शंभु तिन , दिना दरसन आय^५ ॥ ४७ ॥

जटा मुकुट बिम्भूत अंग , सीम गंग अहि अंग^६ ।

भूत संग अनभंग मन , हर्षित अधिक उमंग ॥ ४८ ॥

ऋषिसमूह अस्तुति करत^७ , करव^८ अचल नग^९ आय ।

बास करा तिहिं पर अचल , यज्ञ करै तव पाय ॥ ४९ ॥

छप्पय छंद

तब भव^{१०} भयउ प्रसन्न वास अर्बुद सिर किन्निव ।

कियव यज्ञ आरंभ विप्र सम्मूह सुलिन्निव ॥

द्वैपायन, वासिष्ठ, लोम, दालिभ,^{११} सब आए ।

जैमिनि हर्षन, धौम्य, भृगु, घटयोनि^{१२}, सुभाए ॥

१ मेंटन पाय । २ किए । ३ अनल । ४ गन । ५ धाय ।

६ संग । ७ करिव, करयव । ८ करत । ९ मन । १० भेष ।

११ दालिभ सु । १२ जोनि ।

कौसिक, वत्स, मुद्गल मिलिउ, उदालाक, मातंग, भनि ।
स्वर मिलिय स्वयंभुव शभुयुत लगे करन मख मुदित मन ॥५०॥

पुलह, अत्रि, गौतम्म, गर्ग, सांडिल्य महामुनि ।

भरद्वाज, जावालि, मारकंडेय, इष्ट गुनि ॥

जरतकार^१ जाजुल्लिय, पराशर परम पुनीतव ।

चिमन^२ चाइ सुरआइ, पिप्पलायनहिं, सुरचि^३ सब ॥

वोटा अनेक बरनूं किते, पंचसिखा पिक्खिय प्रगट ।

तप तेज पुंज भलहलत तहँ, दर्शन तैं पातक सुघट ॥५१॥

सिद्धि औषधिय सकल,^४ सकल तीरथ जल आनिव ।

जिते यज्ञ के योग्य तिते, द्रव सब मन मानिव ॥

जजन^५ जानि अध्याय होम ध्वनि होम सु उठ्ठे ।

सकल वेद के मंत्र विप्र मुख सुर जुत^६ जुठ्ठे ॥

ध्वनि सुनत असुर आए तुरत करन यज्ञ उच्छिष्ट थल ।

उत्पात अमित किन्ने^७ तबै तहाँ वृष्टि किन्निय^८ सबल ॥५२॥

पवन चलत परचंड घोर घन वारि सु बुठ्ठे ।

रुधिर माँस तृण पत्र अग्नि^९ रज देखत उठ्ठे ॥

गए तहाँ वाशिष्ट यज्ञ बहु विप्र सुनायो ।

करै^{१०} प्रथम बध असुर होय तब यज्ञ सुभायो ॥

वाशिष्ट कुंड किन्नो सुरुचि करन असुर निमूल तब ।

धरि ध्यान होम देवी विमल वेदमंत्र आहूति जब ॥ ५३ ॥

१ जरदकालु । २ च्यवन । ३ सुरच्छिय । ४ सकल तीर्थनु जल
आन्यौ, तिथ्यादिक आन्यौ, द्रव्य तितने मत मानिव । ५ यजन ।
६ बुट्टे । ७ कीने । ८ कीनिय । ९ अग्नि । १० करो ।

दोहरा छंद

ऋषि वशिष्ठ वेदिय विमल, सामवेद स्वर साधि ।
 प्रगट कियउ छत्रिय पहुमि, वेदमंत्र आराधि ॥५४॥
 तीन पुरुष उपजे तहां, चालुक प्रथम पँवार ।
 दूजै तीजै ऊपजै, क्षत्रि जाति पड़िहार ॥५५॥
 कियउ^२ युद्ध अतुलित तिनहिं, नहि खल जीते भूरि ।
 तब चतुरानन यज्ञ थल, कियो तुरत वह दूरि ॥५६॥
 आबू गिरि अग्नेव दिसि, चायस्थल सब आय ।
 आराधे तिहिं फरस धरि, आए शीघ्र सुभाय ॥५७॥
 कमलासन ब्रह्मा भए, होता भृगु मुनि कीन ।
 आचारज वाशिष्ठ भौ, ऋत्वज वत्स प्रवीन ॥५८॥
 परसराम जजमान करि, होम करन मुनि लाग ।
 महाशक्ति आराधि करि, अनलकुंड पटि^३ जाग ॥५९॥

छंद पद्धरी

विधि करी^४ परसु धर, बोलि ठौर ।
 यजमान कियौ भृगुकुल सुमौर ॥
 वरदेव शक्ति आराधि ताम ।
 चहुँ वेद बदन उच्चार जाम ॥ ६० ॥
 निज बारि कमंडल अग्नि सींच ।
 रज संख पानि होमें स बीच ॥

चहुँ^१ वेद मंत्र बल शक्ति पाय ।

तब अग्नि रूप प्रगटे सुभाय ॥ ६१ ॥

उत्तंग अंग सुचि तेज धाम ।

भलहलत क्रांति तन प्रभा काम ॥

भलहलत मुकुट भृकुटी करूर ।

पलहलत नेत्र आरक्त मूर ॥ ६२ ॥

हल हलत दनुज बहु त्रास मानि ।

भुज चारि दीर्घ आयुध सजानि^२ ॥

यम यज्ञ पुरुष प्रगटे अजोनि ।

कर खड्ग^३ धनुष कटि लसै तोनि ॥ ६३ ॥

कर जोरि ब्रह्म सो कह्यो धाय ।

मैं करूँ कहा लोकेस आय ॥

जब कह्यो कमलभू सुनहु तात ।

भृगुनाथ कहै सोइ करो बात ॥ ६४ ॥

भृगुनाथ कही खल हनो धाय ।

संग सक्ति दइय नृप कै सहाय ॥

दसबाहु उग्र आयुध बिसाल ।

आरूढ़ सिंह उर कमल माल ॥ ६५ ॥

मुनि देव मिले अभिशेष कीन ।

नृप अनल नाम कह तासु दीन ॥

नृप कियो युद्ध तिनतै अखंड ।
 हनि जंत्रकेत करि खंड खंड ॥ ६६ ॥
 हनि धूमकेत जो सक्ति आय ।
 नृप हर्ष सहित परसे सु पाय ॥
 बहु दैत्य नृपति मारे अपार ।
 उठि चली खेत तै रुधिर धार ॥ ६७ ॥
 उबरे सु गए पाताललोक ।
 भय दनुजहीन सब मृत्युलोक^१ ॥ ६८ ॥

दोहरा छंद

आसा पूरण सबन की, करी शक्ति तिहि बार ।
 याही तै आशापुरा, धरयो नाम निर्धार ॥ ६९ ॥
 चहुवानन^२ के वंश मै, परम इष्ट कुल देवि ।
 सकल मनोरथ सिधि तहाँ, पूजत पावै^३ सेवि ॥ ७० ॥
 परसराम अवतार भो, हरन सकल भुव भार ।
 जैत राव तिहि वंश मै, जन्म्यो परम उदार ॥ ७१ ॥

छप्पय छंद

जैत राव चहुवान सकल विद्या युत सोहै ।
 दान कृपान विधान अखिल भूपति मन मोहै ॥
 अमित थाट रजपूत वंश छत्तीस अमानौ ।
 सूर बीर उदार विरद बंदी जु बखानौ ॥

१ मर्त्यलोक । २ चाहुवान । ३ देव, देवि ।

दिन प्रति तेज^१ बढ़तो नृपति, शत्रु शंक निसि दिन रहैं ।
वीसलह^२ भूप अवतंस भुव, अर्थिन् मिले दारिद रहैं ॥७२॥

इक समय आखेट, राव खेलन बन^३ आए ।

सकल सुभट थट संग, बीर बानै जु बनाए ॥

लखिव^४ इक बाराह, बाजि पिच्छै नृप दिनिव ।

रहे^५ संग तै दूरि, सश्व बिन राव सु किनिव ॥

बन विषम बंक भूधर विरह, सुथल पदम भव तप करत ।

मृग त्यागि भागि मिल्ले सुश्रुषि, बंदि चरण सेवा धरत ॥७३॥

छंद लघुनाराच

करे प्रणाम रावयं, सुदिन पद्म पावयं ।

उभै सुपाणि जेरि कै, विनै सु कीन कोरि कै ॥ ७४ ॥

खुले सुभाग्य मोरयं, लखो दरस्स तोरयं ।

अखंड जोग भूपयं, नमः सजीव मोषयं ॥ ७५ ॥

त्रिकाल ज्ञान धामयं, रटंत नाम रामयं ।

समस्त योग धामयं, त्रिलोक पूर कामयं ॥ ७६ ॥

समोप स्वामि शंकरं, गणेशयं सुधं करं ।

धरौ सुशीस रथयं, प्रभू^६ सदा समथयं ॥ ७७ ॥

दोहरा छंद

प्रसन भए ऋषि पद्म तब, अस्तुति सुनत प्रमान^७ ।

जैत राज यहि थल करौ, राव राखि शिव ध्यान ॥ ७८ ॥

१ बड़दिय, बड़दिग । २ बिस्सलह । ३ आयउ, बनायउ ।

४ लख्यव । ५ रहयउ । ६ प्रभु सदा सर्थयं । ७ अमान ।

हर प्रसन्न भय राव पहाँ, मुनिवर पद्म प्रसाद ।
मिले भीलकुल सकल तहाँ, हर्षित मिटे विषाद ॥७६॥

छंद पद्वरी

ऋषिराज पद्म आज्ञा सुपाय ।
नृप जैत मित्र मंत्रिय बुलाय ॥
बड़ बणिक गणक कोविद सुजान ।
तिन पुच्छि मंत्र वास्तव प्रमान ॥ ८० ॥
सुभ दिए मुहूरत नीव हेत ।
रणथंभ नाम औ गढ़ समेत ॥
सब ग्यारह सै दस बरष और ।
सुइ संवत विक्रम कहत मौर ॥ ८१ ॥
इषु अर्द्ध अरंगा को प्रसिद्ध ।
रवि अयन सौम्य जान्यो प्रसिद्ध ॥
सब कला पाँच जानो सुइष्ट ।
त्रिय पुरुष लगन गढ़ कीन इष्ट ॥ ८२ ॥
गत इक्क अंश वृषभानु जानि ।
शशि वेद सार्द्ध मिथुनेस मानि ॥
तृन अंश वृश्चिक के इलानंद ।
शशि बीसनंद अजअंश मंद ॥ ८३ ॥
जष राशि जानि नव अंश शुद्ध ।
तम तीन अंश मूरति सु मुद्ध ॥

त्रिय धूमकेतु गुण अंश जानि ।

भृगु सप्त गुरु सत्रा सु मानि ॥ ८४ ॥

तन लग्न उभै जानो सु जानि ।

फल कह्यो वर्ष सत आयु मानि ॥

षय भाव भान तिहि भवनहीन ।

कछु घटे वर्ष तिन में प्रवीन ॥ ८५ ॥

तिहि समय अटल यूणी सु थप्प ।

गणनाथ पूजि शुभ मंत्र जप्प ॥

करि होम देव पुज्जे अपार ।

गो भुंमि रत्न हाटक सुठार ॥ ८६ ॥

दिय दान द्विजन बहु बिधि अनेक ।

नृप जैत सकल पुज्जे बिबेक ॥

तिय करत गान मंगल सरूप ।

धुनि दुंदुभि बज्जत अति अनूप ॥ ८७ ॥

सब करहि हर्ष नर नारि वृंद ।

यहि भाँति नीम रचना सुछंद ॥ ८८ ॥

दोहरा छंद

ग्यारा सै दस अगरो, संवत माधव मास ।

शुक्र तीज शनिवार कै, चंद्र रत्न अनयास ॥ ८९ ॥

यूणीगढ़ रणथंभ की, रोपी पदमप्रताप ।

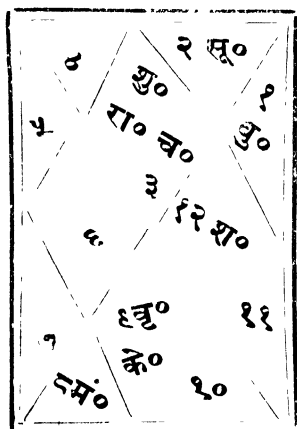
सुमिरि गणेश गिरीश को, नगर बसायो आप ॥ ९० ॥

वार्त्ता (वचनिका)

राव जैत पदम ऋषि की आज्ञा तें गढ़ रणथंभ की नीव दिवाई । ताही समय शहर बसावन की मन में आई ।
 ग्यारा^१ सैदसोत्तरा को संवत् बैशाख की आषै^२ तीज में शनी-
 श्चर में घड़ी पाँच दिन चढ़े मिथुन लग्न में नीव दीनी । गणेश
 पूजकर शिवजी की और पद्म ऋषि की आज्ञा पाय अनेक
 उछाह करि धन दीनो ।

चौपाई

जैत राव थिर थूणी रुष्टिय । भूसुर वृंद बंदि पद उष्टिय ॥
 ध्वजा पताक कलस अरु तोरन । मंगलरूप सुरूप निचोरन ॥६१॥



इष्ट लग्न सू० ५ ॥ २ । ८ ॥
 १ । ०० च० ३ । ४ । मं० ७ ।
 ३०० । २० । वृ० ८ । १७ । शु०
 २७ श० ११ । ८ । रा० २ । ६
 कं ८ । ३

छंद भुजंगप्रयात

पुरं मंदिरं चौहटं औ गवाण्यं ।
 भुजंगप्रयातं प्रबंधं सुभाण्यं ॥

पुरी इंद्र की शीस वै शुभ्र देखी ।

सबै मंदिरं सुंदरं उच्च लेखी ॥ ६२ ॥

परदां जरी बाफतं के बनाए ।

ध्वजा तोरणं सर्व के गेह छाए ॥

कपाटं सिरीखंड हाटक सोहैं ।

सबै चित्र सा चित्र सूचित्त मोहैं ॥ ८३ ॥

बितानं छए भल्लरी शोभ सानी ।

सबै ठौर सोहै मनौ काम गानी ॥

गृहं द्वार गोखा भरोखा सुहाए ।

चोवा सुगंध इत्र महकंत भाए ॥ ८४ ॥

यसो नग्र रम्यं रचो भूप करो ।

किते चारु चैकंत भावंत हेरो ॥

बसैं बर्ण च्यारगो यथा संखि बासैं ।

चहूँ आश्रमं औ तजं लोभ आसैं ॥ ८५ ॥

सबै आय आयं रहै धर्म माहीं ।

क्षमा शील दानं वृतं नीति^२ आही ॥ ८६ ॥

छप्पय छंद

महा बंक गढ़ हढूढ बुगजि कंगुर बर सोहैं ।

चहूँ कोध^३ अग अगम चारु दरवाजे मोहैं ॥

घाटी चतुरा सीति^४ विषम अति^५ पच्छि न पावैं ।

बनचर बंकट बेस पाय लागि यों गुन गावैं ॥

१ पड़दा । २ नित्य । ३ क्रोध । ४ घाटी चोइस साटि ।

५ और ।

तुम नाथ हमारे^१ कृपा करि गढ़ लज्जा यह धारिए ।
परबैस^२ मनहुँ रवि को प्रगट यह गढ़ हम प्रति पारिए ॥६७॥

दोहरा छंद

च्यारि दरा चहुँ ग्राम बसि, घाटी किती जु और ।
चहुँ और पर्वत अगम, विचरण थंभ सु जोर ॥६८॥

अथ पद्मऋषि तनपात प्रसंग

छप्पय

रणत भँवर ऋषिपद्म उग्रतप तेज कराए^३ ।
इंद्रासन डिगमिगिय^४ देवपति शंका खाए ॥
तब कामादिक बोलि शक्र ऋषि पास पठाए ।
करो विघ्न तब जाय भंग पर काज नसाए^५ ॥
तब चल्यव मार निज सेन युन^६ ऋतु बसंत प्रगटिय तुरित ।
बह त्रिविध पवन अद्भुत महा करहिं गान रंभा सुरति ॥६९॥

वसंत ऋतु वर्णन

छंद पद्धरी

तिहि समय काम प्रेरयौ सुगिंद्र ।

जुह्हारि^७ इंद्र उठि पाव बंदि ॥

१ हमार । २ बैस । ३ करायो । ४ इंद्र मन माहिं (मार्फि)
बरायो । ५ नठाए । ६ जुरि । ७ जुग ।

सब परिकर बोले^१ चढ़ि सुमार ।

ऋतु छहूँ संग धनु सुमन हार ॥ १०० ॥

रति परम प्रिया ऋतुराज जानि ।

नित रहत निरंतर रूप मानि ॥

बहु किन्नर गावत देव नारि ।

गंधर्व संग अति बल उदार ॥ १०१ ॥

संगीत भाव गावै अनंत ।

सुर नर सुनंत बसि हात मंत ॥

वन उपवन फुल्लहि अति कठोर ।

रहे जौर भौर रस अंब मौर ॥ १०२ ॥

कल कूजत कोकिल ऋतु वसंत ।

सुनि मोहत जहूँ तहूँ सकल जंत ॥

नर नारि भए कामंध अंध ।

तजि लाज काज परि काम फंद ॥ १०३ ॥

पहुँच्यौ सुमारि ऋषि निकट आय ।

प्रेरयो सु परम भट अगग जाय ॥

ऋषि लखे सुभट सेना सुकाम ।

ऋषि कह्यौ कहा करिहै सुबाम ॥ १०४ ॥

करि कठिन आप लाई समाधि ।

तिहि रहत काम क्रोधारि व्याधि ॥

ग्रीष्म ऋतु वर्णन

ऋतु ग्रीष्म को आज्ञा सु दिन्न ।

तिहि अति प्रताप जज्वलि किन्न ॥ १०५ ॥

रवि तपै विषम अति किरन धूप ।

रवि नैन खुलि दिक्खिय अनूप ॥

बट इक्क महा गह्वर सुजानि ।

तिहि निकट सरोवर सुर समानि ॥ १०६ ॥

इक आश्रम सुंदर अति अनूप ।

तिय गान करत सुंदर सरूप ॥

सौरभ अपार मिलि मंद पौन ।

मृग मद कपूर मिल करत गौन ॥ १०७ ॥

श्रीखंड मेद^१ कंसर उशीर ।

तिहिं परसि ताप मिटृत सरीर ॥

गंधर्व और किन्नर सुबाल ।

मिलि अंग रंग पहरे सुमाल ॥ १०८ ॥

चित चल्यो नाहिं ऋषि बज्रमान ।

रहि ग्रीष्म^२ ऋतू हिय हारि मान ॥ १०९ ॥

दोहरा छंद

लग्यो न ग्रीष्म कौ कछु, ऋषि प्रताप तप धीर ।

तब पावस परनाम करि, आयस काम गहीर ॥ ११० ॥

वर्षा चतु वर्णन

छंद भुजंगप्रयात

उठे बहलं धार आकाश भारी ।

भई एक बारं अपारं अँधारी ॥

बहै पौन चार्यों महासीतकारी ।

चहूँ ओर क्रोधंत दामिनि अँधारी ॥ १११ ॥

घने घोर गज्जंत वर्षत पानी ।

कलापी पपीहा रहैं भूरि बानी ॥

तहाँ बाल भूलंत गावंत भोनी ।

रही जाय आश्रम भई काम भीनी ॥ ११२ ॥

उड़ैं चीर सग्मीर लगंत अंगं ।

लसै गात देखंत जगै अनंगं ॥

करैं सोर भिल्ली घने दहुरंगे ।

तहाँ बाल लीला करैं काम संगे ॥ ११३ ॥

निकटं उघटंत संगीत बाला ।

बरं अंग अंग रची फूल माला ॥

कटाक्षं करैं मंद हासं प्रहारै^१ ।

तहाँ पद्म अंग लगै ना निहारै ॥ ११४ ॥

दोहरा छंद

पावस हारि विचारि जिय, ऋषि न तज्यो तप आप ।

तब सु मैन मन मैं कहिय, उपजे शरद सुताप ॥ ११५ ॥

शरद ऋतु वर्णन

छंद त्रोटक

तजिए तप पावस बित्ति सब ।

ऋतु शारद बादर दीस अब ॥

सरिता सर निम्मल नीर^१ बहैं ।

रस रंग सरोज सु फुल्लि रहैं ॥ ११६ ॥

बहु खंजन रंजन भृंग भ्रमैं ।

कल हंस कलानिधि ब्रेद भ्रमैं ॥

बसुधा सब उज्जल रूप कियं ।

सित वासन जानि बिछाय दियं ॥ ११७ ॥

बहु भाँति चमेलिय फूल रही ।

लषि मार सुमार सुदेह दही ॥

बन रास बिलास सुबास भरैं ।

तिय काम^२ कमान सुतानि धरैं ॥ ११८ ॥समणें पर तै^३ नर काम जगै ।बिरही सुनि कै उर घाव^४ खगै ॥

धर अंबर दीपक जोति जगी ।

नर नारि लखै^५ उर प्रीति पगी ॥ ११९ ॥

ऋषि पास त्रिया सर न्हान रच्यो ।

जल केलि अनेक^६ प्रकार मच्यो ॥

बिन चीर अधीर लषै नर वै ।

कुच पीन नितंब सुकाम तबै ॥ १२० ॥

कवरी छुटि नागनि सी दरसै ।

सुर संग भ्रमै रस सों सरसै ॥

अधिराज महा उर धीर अयं ।

रितु सारद हारि सुजात रयं ॥ १२१ ॥

दोहरा छंद

हारि मानि सारद गइय, उठि हेमंत सकोपि ।

महासीत प्रगटिय जगत, सबै लाज तजि लोपि ॥ १२२ ॥

हेमंत ऋतु वर्णन

छप्पय छंद

तब सु हेम करि कोप सीत अति जगत प्रकास्यौ ।

विषम तुखार अपार मार उपचार सुभास्यौ ॥

कंपत^१ चैतन रूप कहा जर जरत समूरे ।

तिय हिय लगि लगि बचन चरत मुख सैन सरूरे ॥

तिहि समय जीव सब जगत के भए इक नर नारि सब ।

उरबसी आय ऋषि निकट तक हिए लाय मोहि सरन अब ॥ १२३ ॥

दोहरा छंद

खुली न कठिन समाधि ऋषि, चली हिमंत सुहारि ।

सिसिर परस मन बरनि करि, उठी सुकाम जुहारि ॥ १२४ ॥

शिशिर ऋतु वर्णन

छंद मोतीदाम

कियो तब मार हुकम्म सु हेरि ।
 उठी ससियो^१ तब आयसु फेरि ॥
 किए नव पल्लव जे तरु वृंद ।
 प्रफुल्लित अंब कदब स्वछंद ॥ १२५ ॥
 बहै बहु भ.ति त्रिविद्धि समीर ।
 रहै नहि धीरज होत अधीर ॥
 लता तरु भेंटत संकुल भूरि ।
 भए त्रण गुल्म हरे जड़ मूरि ॥ १२६ ॥
 मिटै जग सीत न ताप न तोय ।
 सबै सुखदायक जीवन सोय ॥
 भुके फल फूल लतावर भार ।
 भ्रमै बहु भृंग जगावत मार ॥ १२७ ॥
 लगी लखि वायु सबै तिहि बार ।
 सुनै डफ ताज तजै नर नार ॥
 बजावत गावत नाचत संग ।
 अवीर गुलालरु केसरि रंग ॥ १२८ ॥
 भए मतवार सु खेलत^२ फाग ।
 महा सुख संग सजोगनि^३ भाग ॥

वियोगनि जारत मारत मार ।

अनेक सुगंध अनेक विहार ॥ १२६ ॥

वसंत ऋतु वर्णन

छंद लघुनाराच

असंत संत मोहियं, वसंत खोलि जोहियं ।

बजंत^१ बोन बांसुरी, मृदंग संग आसुरी ॥ १३० ॥

लियं सुवाल वृंदयं, जगत्त काम वृंदयं ।

अनेक रूप सुंदरी, मनोज राव की छरी ॥ १३१ ॥

स्ववेस केस पासयं, मनो कि मैत फासयं ।

गुही त्रिविद्धि वैनियं, कि मोह किन्न सैनियं ॥ १३२ ॥

महा सुवट्ट पट्टियं, सिंगार भूमि फट्टियं ।

विचै सुमंद^२ रेखयं, महा विशुद्ध देखयं ॥ १३३ ॥

विशाल भाल सोभियं, छपा सुनाथ लोभियं^३ ।

सु मध्य सीम फूलयं, दिनेश तेज तूलयं^४ ॥ १३४ ॥

भरी सु मुक्त मंगयं, मनो नछत्र संगयं ।

विशाल लाल बिंदयं, मिले सु भोम चंदयं ॥ १३५ ॥

जराव आढ भाइयं^५, मनो मिलन्न आइयं ।

दिनेस भौम बुद्धयं, शशि गृहे सु शुद्धयं ॥ १३६ ॥

१ सुदंग ताल खंजरी । उपंग संग असुरी । २ सुमंग, माँग ।
३ लोपियं । ४ तुल्यं । ५ भालयं ।

कपोल गोल आदसं, कि भौंह भौर सादसं ।
 प्रफुल्लि कंज लोचनं, मृगान्ति गव्वं मोचनं ॥ १३७ ॥
 त्रिविद्धि रंग गातयं, सु स्याम स्वेत राजयं^१ ।
 बनी कि कीर नासिका, सु गथ्य नथ्य भासिका ॥ १३८ ॥
 मनो सु काम ओपयं^२, दयो सुचक्र^३ कोपयं ।
 करन्न फूल राजयं, उमै कि भान साजयं ॥ १३९ ॥
 सुहंत स्याम अल्लकं, भ्रमत्त भौर वल्लकं ।
 अरुन्न रेख बेमयं, पियूष कोस देखयं ॥ १४० ॥
 अनार दंत कुंदयं लसंत वज्र दंतयं^४ ।
 बुलंत बाँणि कोकिला, विपंच की सुरं मिला ॥ १४१ ॥
 कपोति पोति कंठयं, सुठार हार गंठयं^५ ।

छप्पय छंद

कुच कंचन घट प्रगट, नाभि सरवर वर सोहै ।
 त्रिबली तापहँ ललित, रोम राजी मन मोहै ॥
 पंचानन मधि देस, रहत सोभा हिय हारी ।
 मनहुँ काम के चक्र, उलटि दुंदुभि दोउ डारी^६ ॥
 दोउ जंघ रंभ कंचन दिपत^७, घरी कमल हाटक^८ तनै ।
 गति हंस लखत मोहत जगत, सुर नर मुनि धीरज हनै ॥ १४२ ॥
 जिती उव्वसी संग, सकल सम्मूह मिलिय वर ।
 बिचि सु मैन सह सैन गए, ऋषि निकट मरुकर ॥

१ रातयं । २ वोपयं । ३ चक्र । ४ द्वंदयं । ५ तट्ठयं ।
 ६ निसान सुधारी । ७ उलटि । ८ हारक ।

गावत विविधि प्रकार, करत लीला मन भाइय ।
 हाव भाव परभाव, करत आश्रम में आइय ॥
 ऋषि निकट आय होरिय रची, वर्षत रंग अनंग गति ।
 १ न चलौ चित्त ज्यों भौ अचल, करत कृपा त्यों त्यों अमित ॥१४३॥

दोहरा छंद

रि विचार त्रिय कृत कृपा, कुसुम कुंद गहि लीन ।
 गीलाललित सु विष्टरिय, चंचल^२ वयसु नबोन ॥१४४॥
 शिमुख वृंद^३ स्वछंद मिलि, रति सम रूप अनूप ।
 ऋषि समीप क्रोड़ा करति, हरति धीर मुनि भूप ॥१४५॥

चौपाई छंद

वर्षत रंग अनंग सु बाला ।
 मनहुँ अनेक कमल की माला ॥
 चंचल नैन चलैं चहुँ आसा ।
 रूप सिंधु मनु मीन सु पासा ॥ १४६ ॥
 घूँघट ओट दुरत प्रगटत यों ।
 मनो ससि घटा दब्बि उघटत ज्यों ॥
 बिलुलित बसन अंग दुति सोहै ।
 निरखत सुर नर मुनि मन मोहै ॥ १४७ ॥
 अलक संलक^४ अतिसै चटकारी ।
 अमी पियत शशि नाग निकारी ॥

छुटै गुलाल मुठी मृदु मसकै ।

चूवै अघर^१ बिंब रस चमकै ॥ १४८ ॥

करै गान पशु पच्छी मोहै ।

कहो जगत इन पटतर को है ॥

लै लै गेंद परसपर मेलै ।

बाल वृंद मिलि मिलि सुख भेलै ॥ १४९ ॥

अघ^२ ऊरध चहुँ ओर सुमारै ।

लजति खिजति लगि^३ प्रेम प्रहारै ॥

मंद पवन लगि चोर^४ परयो धर ।

कुच अंकुर उर मनहुँ उभै हर ॥ १५० ॥

दमकति दिपति सलोनी दीपति ।

काम लता विहरै मनु गज गति^५ ॥

लगत गेंद कंपित उर भागी ।

मंद मुसुकि ऋषि निकट सुपागी^६ ॥ १५१ ॥

सुमन वृंद सौरभ उठि भारी ।

भ्रमर पुनीति^७ गुँजार उचारी^८ ॥

शरद उन्माद संधान सु किन्नौ ।

अति रिसि तानि श्रवन उर दिन्नौ ॥ १५२ ॥

१ अघर बिंब रसकै चसकै । २ अद्ध, उद्ध । ३ मिलि । ४ अंबर ।
 ५ स्त्री लंक अंग झलकत वर । नाभि गँभीर त्रिबलि अति सुंदर । ६ सुनि
 बादित्र गान कल लीला । काम कोपि सर धनुष सुमीला । ७ पुनिच ।
 ८ त्रिविधि समीर सुहावन जानी । प्रफुलित नूत बैठि धनु पानी ।

छुटि समाधि ऋषि नैन उधारे ।

अति सकोप सम्मर उर मारे ॥

चहुँ दिसि चितै चक्रित ऋषि भयऊ ।

लखि तिय वृंद अनंद सु भयऊ ॥ १५३ ॥

लोला गैद फागु मिसि^१ दौरी ।

ही हो करत उठी बर जोरी^२ ॥

बन अकैलि तिय पुरुष न कोऊ ।

लोला अमित देखि दृग दोऊ ॥ १५४ ॥

रंग अपार डारि ऋषि ऊपर ।

कल कल हंस बजत पद नूपर ॥

करै^३ कटाक्ष अनेक सु बाला ।

नैन सैन सर लागि चित चाला ॥ १५५ ॥

अंग अंग गहि फाग^४ सु मगै ।

परसि गात तव काम सु जगै ॥

मुख मी^५ डत^६ अंजन गहि दिनौ^७ ।

जग्यां काम ऋषि काम सु भिन्नौ^८ ॥ १५६ ॥

लखि मुसकानि भई मति भोरी ।

जीति सरस ऋषि कामनि हेरी ॥ १५७ ॥

१ मिलि । २ कंदुक केलि और मिसि होरी । भोरी निपट
लेत चित चोरी । डारि मोहिनिय मोहिव बाला । माया बसि भो ऋषि
तिहिं कालां । ३ फाग सुमागै, जागै । ४ माड़त ।

दोहरा छंद

का नहिं पावक जरि सकै, का नहिं सिंधु समाय ।
 का न करै अबला प्रबल, किहि जग काल न खाय ॥१५८॥
 कवि लाखन अबला कहत, सबला जोध कहंत ।
 दुबला तन मैं प्रगट जिहिं, मोहत संत असंत^१ ॥१५९॥
 जीति सिसिर बित्तिय^२ तबै, फिरि आयव ऋतुराज ।
 मिले उर्वसी पद्म ऋषि, सरे शक्र के काज ॥१६०॥
 बिबस भए मुनि अप्सरा^३, भुछिय तप व्रत नेम ।
 निसि वासर क्रीड़ा करत, बढ्यो जु तन मन प्रेम ॥१६१॥
 सुरति बढो चित में चढ़ी मढ़ी मोह मति भूरि ।
 छिन छिन तिय ऋषिरजत^४ दोउ, भयउ^५ प्रेम परि पूरि ॥१६२॥
 हृदय पुरंदर त्रास गनि, गइय उर्वसी त्यागि ।
 बिन माया ऋषिराज तव, मन सुत्तो^६ सो जागि^७ ॥१६३॥
 जाय जुहारे इंद्र कां, काम उर्वसी संग ।
 काज^८ सँवार्यौ रावरौ, करयो कठिन तप भंग ॥१६४॥

(वचनिका ' वार्त्तिक

तब इन्द्र कामादिक को सत्कार किया, यहाँ ऋषि पद्म
 सुतो सौ जाग्यौ । मन महुँ विचार करन लाग्यौ । मैं तो
 माया मैं पाग्यौ तप खोयां औ कलंक लाग्यौ । और अब
 दोनों गईं तपस्या तो खंडित भई, अरु उर्वसी हू जात रही

१ अनंत । २ बीती । ३ अन्धरिय । ४ राज । ५ भरे ।
 ६ सोवत सो । ७ त्यागि । ८ कज्ज ।

अब यातैँ यह शरीर राखनो योग्य नहोँ और मन की
बासना भौत ठौर भई तातैँ एक शरीर सूँ कछू बनि आवै
नहीँ । जब ऋषि होम करि शरीर त्यागो । जहाँ जहाँ
बासना रही तहाँ ही पाग्यो ॥

दोहरा छंद

तिय वियोग ऋषि तन तज्यौ, ग्यारा सै चालीस ।
माघ शुक्ल द्वादशि सु तिथि, वार बरनि रजनीस ॥१६५॥

छंद पद्धरी

तन पात किन्न ऋषि पदम आप ।
उर्वसी विरह तन मन सु ताप ॥
ग्यारा सौ चालीस जानि ।
नृप विक्रम संवत ताहि मानि ॥ १६६ ॥
तप^१ सिद्धि मास अरु बहुत पच्छि ।
ऋतु शिशिर द्वादशी तिथि सु रच्छि ॥
शिववार सोम जान्यौ प्रसिद्ध ।
जित प्रीति योग बिच करन अद्ध ॥ १६७ ॥
रवि अयन^२ अंश अठ बीस मानि ।
शशि जन्म त्रियोदश अंश जानि ॥
सुध मीन लग्न बिगृह सु त्यागि ।
करि हवन जवन सुख हृदय पागि ॥ १६८ ॥

निज प्रथम अंग पंचांग होम ।

जित रही बासना सरस धोम ॥

ऋषि मुद्रल गोती शिखाहीन ।

वहि तिलक हृदय आयो नवीन ॥ १६६ ॥

शिर भयो पृथ्वीपति जमन ईस ।

जिहिं राज्य करउ पूरण दिलीस ॥

वह रह्यो तिलक दिय परि अनूप ।

तहाँ भै हमीर चहुवान भूप ॥ १७० ॥

दोउ बाद कर्म किनो सु चाहि ।

दोउ भए भीर महिमा सु साहि ॥

अरु लग्न उर्वसी चरन संग ।

यह भए पंच ऋषि पदम अंग ॥ १७१ ॥

(वचनिका) वार्तिक

ऋषि पद्म उर्वसी को विरह तन त्याग्यौ । माह शुक्ल १२
द्वादशी सोमवार आद्रा नक्षत्र प्रीति योग बवकर्ण, सूर्य २८
अष्टाईस, चंद्रमा मिथुन को तेरा १३ अंश, मीन लग्न में देह
होमी । पाँच अंग होम्याँ जितनी वासना जितनी जायग हुई ।
ताही से पाँच स्वरूप एक शरीर का हुआ ॥

अथ रात्र हम्मीर को जन्म वर्णन

दोहरा छंद

ससि वेद रुद्र संवत गिनो, अंग खाभ्र पित साक ।
 दक्षिण अयन सु सरद ऋतु, उपजे गए न नाक ॥१७२॥
 गजनी गौरी शाह सुत, भय अलावदी साय ।
 ताही दिन रणथंभ गढ़, जन्म हमीर सु आय ॥१७३॥
 यह हमीर नृप जैत कै, अमर करण आचार ।
 मीणा भारू बंधु दोउ, भई नारि तिहिँ बार ॥१७४॥

छंद पद्धरी

शशि रुद्र वेद संवत सुजान ।
 षट सहस इक साको प्रमान ॥
 रवि जाम अयन दक्षिण सुगोल ।
 ऋतु शरद शुभ्र सुंदर अमोल ॥ १७५ ॥
 तिथि भान उज्ज बल पच्छि जानि ।
 रवि घटी तीस अरु दोय मानि ॥
 हिर वुन्न वेद घटि घटिय साठ ।
 व्याघात योग मुनि घटी आठ ॥१७६॥
 बालब्ब नाम सोइ कहत कर्ण ।
 यहि भाँति कह्यउ पंचांग वर्ण ॥
 रवि उदय इष्ट घटिका छतीस ।
 पल शून्य पंच जान्यूसदीस ॥१७७॥

पल षोडश अष्टाबीस दंड ।

दिन मान जान तिहि दिन सुमंड ॥

इकतीस चवाली रात्रि मानि ।

सब घटिय साठि दिन राति मानि ॥१७८॥

भौ जन्म लगन मिथुनेस आय ।

द्वादसह अंश गत भय बताय ॥

तुलभांन सप्तदस अंश मानि ।

सरि रुद्र अंश भख रासि मानि ॥१७९॥

मंगल सुबाल धरि एक अंस ।

बुध बारह वृश्चिक मै प्रशंस ॥

घटि जीव एक अंसह सुशुद्ध ।

भृगु कन्या विद्या सुभग उद्ध ॥१८०॥

शशि मीन तीस कटि एक अंश ।

तिय रासि कह्यो सुर भानु तंस ॥

सोइ कहे अंश चौबीस पूर ।

यह जन्म लगन हम्मीर सूर ॥१८१॥

सुनि राव जैत मन हर्ष किन्न ।

भंडार अमित सब खेलि दिन्न ॥

गुरु विप्र मंत्र मंत्रो सु बोलि ।

बड़ भीर भइय नृप आय पैलि ॥१८२॥

किय आद्व नंदि मुख वेद वृद्धि ।

सब जाति कर्म किन्नो सु सिद्धि ॥

गो भुम्भि अन्न कंचन सु दिन्न ।

द्विजराज सकल संतुष्ट किन्न ॥१८३॥

लिय बेलि सकल जाचक सु वृंद ।

हय हेम सुखासन दीन वंद ॥

बहु भूषन बाहन विविध रंग ।

जिहिं चाह लही सां दियो संग ॥१८४॥

दधि दूब हरद भरि कनक थाल ।

बहु गान करत प्रविसंत बाल ॥

दुंदुभि बजंत घर घरनबार ।

ध्वज कनक पताका द्वार द्वार ॥१८५॥

औछाह राजमंदिर अनूप ।

आनंदमग्न नर नारि भूप ॥

सब दान देत घर घर उछाह ।

सब भय अजाचि जाचत सुताह ॥१८६॥

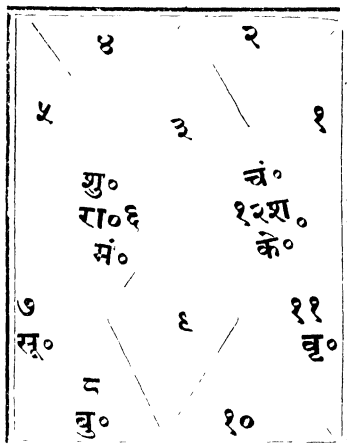
बहु मंगल गावत अति अनूप ।

जय जयति कहत चहुवान भूप ॥१८७॥

वचनिका

राव जैत कै गढ़ रणथंभवर तहाँ जैत घर हम्मीर जन्म्यौ
संवत ११४१ शाकौ १००६ दक्षिणायन, शरद ऋतु कार्तिक

शुक्ला १२ द्वादशी रविवार घटी ३२ उत्तरा भाद्रपद घटी ६ पल ५६ । कछु घर को धरगौ पायौ । एक सेवक लोह पत्र पाथर सों धस्यो तहाँ लोह सोनो (सुवर्ण) भयौ राव जैत को आणि दयो व्याघात यांग घटी १६ प० बालव कर्ण घटी २८ इष्ट घटी २६ पल ५ दिनमान घटी २८ पल १६ रात्रिमान घटी ३१ पल ४४ तुला शंक्रांति गतांश १७ भोगांश १३ चंद्रमा मीन को ११ अंश मंगल कन्या को



१ अंश बुद्ध वृश्चिक को १२ अंश बृहस्पति कुंभ को १ अंश शुक्र कन्या को १४ अंश शनि मीन का २६ अंश राहु कन्या को २४ अंश राव हम्मीर असी घड़ी जन्म लियो । सब को मनोर्थ पूर्ण कियो । सर्व वंश में ह^१ हुआ और अजमेर चित्तौर जु बोलि विप्र पोष्या जाचक संतोख्या^१ मंगल गाए बधावा^२ बजाया ॥

१ सरबस में (सर्वस्व में) दान दीन्हों जग यश लीन्हों ।

२ भए मन भाए ।

हम्मीरराव और अलाउद्दीन पातशाह का वैर वर्णन

दोहा

एक समय पातशाह बन, मृगया कहँ मन कीन^१ ।
सबै खाँन उमराव चढ़ि, हय गय वृंद सु लीन ॥१८८॥
हरम सबै पतशाह को, जो सिकार के जाग ।
साज बाज बनि बनि सकल, अरु अंदर कं लोग ॥१८९॥
सुंदरता सुकुमार निधि, बहै अपछरां अंग^२ ।
ताके गुन गन तँ बँध्यौ, निमिष न छाड़त संग ॥१९०॥

छंद भुजंगप्रयात

चले शाह आखेट^३ बज्जे निशानं ।
सबै भूप सश्र्यं सुपश्र्यं^४ सुजानं ॥
सजं डवरं अवरं साज बाजं ।
बनी पष्वरं बाजि साजं समाजं ॥१९१॥
किते बीर बाने अमानं अपारं ।
किते मीर धीरं सजे सार धारं ॥
नफीरी बजी भेरि बज्जे रवहं ।
वहै उर्वसी संग लीनी समहं ॥१९२॥
जके रूप सौं साह बंध्यौ सुजानं ।
यथा चंद्र की कांति चक्रोर मानं ॥

यथा पंकजं^१ वै दुरैफै^२ लुभाए ।

तथा शाह बंध्यौ सनेहं सुभाए ॥१-८३॥

चले हयदलं पयदलं सशथ रशथं^२ ।

किते खान चीता मृगं संग जुशथं^३ ॥

चले शाह गोसं सरोसं सुभानं ।

बजे नह नीसान नव्वीन^३ चावं ॥१-८४॥

उठी रेणु आकाश छाया सुहदं ।

मनो पावसं मेघ गज्जे सबहं^४ ॥

चले तेज ताजी सुबाजी अपारं ।

सबै खान सुलतान संगं जुभारं ॥१-८५॥

करै बीर लीला सुकीली^५ बिधानं ।

धरै बाँन कम्मान संधान पानं ॥

लखे जीव जेते सु केते जिहानं ।

भ्रमै जंत्र तंत्रं सु पावै न जानं ॥१-८६॥

बनै बेहरं गोत्र गंभीर नारी^६ ।

बहै नीर नहं सुभहं उन्हारी ॥

भरै निर्भरं नाद भारी असारं^७ ।

रहे फूलि संकूल वृत्तं अपारं ॥१-८७॥

जहाँ अंब नीवू भए और केलं ।

सबै वृत्त^८ फुल्ले फले भार मेलं ॥

१ पंकजं पै दुरैफे लुभाए । २ हथम् । ३ वानै सुचानं । ४ सुभहं ।
५ सकेली । ६ भारी । ७ पहारं । ८ वृच्छ फूले ।

भरी भार साखा रही भुग्मि लग्गी ।

लता संकुलं पाद पंतै उमग्गी ॥१६८॥

भ्रमै भृंग पुंजं सुगुंजं अपारं ।

मिली बेलि केती महीरूह डारं ॥

मनों मार अप्पार तानै वितानं ।

तिहूँ काल हेरै लखै नाहि भानं ॥१६९॥

रमै कोकिला कीर नबै मयूरं ।

कहै बैन मानों बजै कामतूरं ॥

बहै सीत मन्दं सुगंधं पवन्नं ।

करै काम उद्दोपने देखि वन्नं ॥२००॥

सुरं^१ सुंदरं पंकजं वन्न फुल्ले ।

करै कुंज भारी भ्रमै मोर भुल्ले ॥

चहूँ ओर कुंमोदिनी चारु फुल्लो^२ ।

महा मोद सों भार आनंद भुल्लो ॥२०१॥

किते जीव समूह देखंत भज्जै^३ ।

मृगं व्याघ्र चीते रिच्छं यत्र गज्जै^३ ॥

कहूँ कौलपुंजं कहूँ नील गाहं ।

कहूँ चीतलं पौडुलं^४ व्याघ्र नाहं ॥२०२॥

कहूँ भील बाँके^५ बसै ताऽस्थानं^६ ।

भगे सिंह स्यारं ससाश्रोन पानं ॥

१ सरम सुन्दरं पंकजं पुंज । २ फूली, भूली । ३ मृग भार चेति वृकछत्र गज्जै । ४ पाडलं । ५ वंक । ६ तास स्थानं ।

करै सिंह गुंजार भारी भयानं ।

सुनै प्रानहारी डरै जीव हानं ॥२०३॥

तहाँ शाह की सेन किन्हीं प्रवेसं ।

तजे खान पानं लए जो असेसं ॥

करै^१ बोर जेते सु केते उपावं ।

हनै जीव जे शाहि को बाज^२ पावं^३ ॥२०४॥

तहाँ शाह के यो भए जाय डेरा ।

चहुँ ओर कौ खाँन केते अनेरा ॥

कहुँ^४ बीन वादित्र बाजंत ऐसी ।

सुने राग मोह^५ मृगं माल बैसी ॥२०५॥

करै गान तानं पशु पच्छो मोहैं ।

सुनै जीव आवंत^६ जानै न को हैं ॥

सुनै बीन पव्नीन^६ सुर नाय रागै^७ ।

रहैं मोहि कै माल डारै न भागै^८ ॥२०६॥

कहुँ राग ऐसो करै मेघ आवै^९ ।

तबै साह ताको बढो मौज द्यावै^९ ॥

असी भाँति आखेट कै रंग भीनेँ ।

निसा द्यौस जातन काहू न चीनेँ ॥२०७॥

तिहीं ठार बित्त्यौ सुसारौ वसंत ।

रमै पातसाहं मनो रत्ति कंतं ॥

१ वाच । २ उपायं, जपायं । ३ बहू । ४ मोहै ।

५ आनंद । ६ पर्वान ।

तिहीं ठौर प्रोषम्म किन्नो प्रवेसं ।

महा संकुलं वृत्त राजं सुदेसं ॥ २०८ ॥

तहाँ तेज भानं न जानं न जानं ।

तिहीं हेत साहं रहे तांस थानं ^१ ॥

समो एक ऐसो तहाँ सोइ आयौ ।

महा पौन परचंड आ मेघ छायाँ ॥ २०९ ॥

कहूँ ओर पतमाह खेलै^२ सिकारं ।

करै^३ कलि जेती जलं बाल लारं ॥

भयो अंधकारं महाघोर ऐनं ।

गई सुद्धि सुझै नहीं अप्प^२ नैनं ॥ २१० ॥

फुरगौ^३ साह कां सत्थ भोजत्थ तत्थं ।

भयो घोर अंधार सुझै न हत्थं ॥

तजी बालक्रोडा जलं त्यागि भग्गी ।

जहीं ओर दौरी भयो मुख अग्गी ॥ २११ ॥

किहूँ ओर दासी किहूँ ओर ग्याजा ।

किहूँ ओर हुरमै कहूँ ओर काजा ॥

जसो हेनहारं बन्या आय जैसो ।

करो लाख कोऊ टरै नाहि तैसां ॥ २१२ ॥

लिखे लेख जो नाहि मिटै सुकोई ।

यही बात निश्चै सुनां सर्व सोई ॥

१ निही तेज भाननं जाने न जातं । तिहीं देश साहं रहे संक
वातं । २ आप । ३ फुट्यो ।

सरं त्यागि चत्ली सुहुरमैं सुभीतं ।

कँपै गात ताको रह्यो ब्यापि सीतं ॥ २१३ ॥

तहीं ठौर महिमाँ मिलै सेख आई ।

महा साहसी सूर उदारताई ॥

निजं धर्म साधै तजै नाहि राचं ।

कहै जो कछू^१ तो निबाहंत वाचं ॥ २१४ ॥

मिली बाल ताको कही दीन बानी ।

उभै^२ वाम सेखं मनां आप जानी ॥

डरो ना कहो आप है कौन कोही ।

कहूँ जो उढ़ावो यहाँ बैठि मोही ॥ २१५ ॥

तवै बाजि तै^३ सेख भू पै^४ जु आयौ ।

कछू वख हो अंग ताको उढ़ायो ॥ २१६ ॥

देहरा छंद

महिमा उत्तर बाजि तै^३, दियो वख तिहिँ हत्थ ।

सीत भीत ता ना मिटो, कही हुरम यह गत्थ ॥ २१७ ॥

पुच्छिय महिमा साहि तब, को तू आप बताय ।

मैं घरनी पतिसाह की, रूप बिचित्रा नाय ॥ २१८ ॥

जलक्रीड़ा हम करत सब, आयो पौन प्रचंड ।

तब डेरन को भजि चलों, तामै मेघ सुमंड ॥ २१९ ॥

भयो भयानक तिमिर बन, सबै सत्थ गय भूल ।

मैं इकली बन महँ यहाँ, डरति फिरति दुख मूल ॥ २२० ॥

छप्पय छंद

तब महिमा कर जोरि हुरम को सीस नवायो^१ ।
 चढ़यो अस्व की पिट्टि दैव पहुँचाव सुभायो ॥
 कहै हुरम सुन सेख देह कंपत है मोरी ।
 छिनक बैठि यहि ठौर सरन मैं लीनी तोरी ॥
 कहै सेख यह बात नहिँ, तुम साहिब मैं दास तुव ।
 यह धरम नाहिँ उलटी कहे, सरन सदा सेवक सुभुव ॥२२१॥
 सेख समो पहिचानि स्वामि सेवग न विचारो ।
 काम रूप तुम पुरुष वीर वानैत उदारौ ॥
 बहुत काल अभिलाष रही जिय मैं यह भारिय ।
 कान समो वह होय मिलै महिमा गुन वारिय ॥
 सुइ करिय आज साहिब सहल, सकल मनोरथ सिद्ध हुव ।
 दै यांग भोग संयोग यह, कोन दोस जग देहु तुव ॥२२२॥

चौपाई छंद

कहै सेख तुम बेगम सच्चिय ।
 ऐसी बात कहे मति कच्चिय ॥
 मैं अब लों तिय जग मैं जानत ।
 भगनी मात सुता सम मानत ॥ २२३ ॥
 ता महि तुम हजरति की बाला ।
 सब कै एक वहै हकताला ॥

^१ हुरूम कहि कहि सन बोयो ।

तातैँ कहा धर्म मैं हारूँ ।

यह तो कबहूँ जिय न विचारूँ ॥ २२४ ॥

सुनहु सेख बेगम तिय सबहीं ।

तुम हूँ धर्म सुन्यो है कबहीं ॥

तिय तजि लाज कहत रति जाचन ।

कोनहिँ धर्म जो पुरुष अराचन ॥ २२५ ॥

तन मन धन जाचे ते दीजे^१ ।

कह कुरान पूरन सोइ कीजे ॥

पुरुष धर्म यह भूर न होई ।

तिय जाचत कों नाटत कोई ॥ २२६ ॥

सोरठा छंद

तब जिय सोचि विचारि, मनहीं मन महिमा समुझि ।

साँची है यह नारि, धर्म उभै जग महँ प्रगट ॥ २२७ ॥

तब महिमा मुसुकाय, कर गहि आलिंगन दियौ ।

इक तरु कै तर जाय, दियो तुरंगम बाँधि तब ॥ २२८ ॥

जीनपोस तर डारि, सख खुल्लि रक्खिय निकट ।

करी सुमार सुमार, उत्कंठा तिय मिलन की ॥ २२९ ॥

छप्पय छंद

महा मोद मन बढ़यो परस्पर तन मन फुल्लिव ।

मिटिव बंक मन संक निसंक हूँ आसन भुल्लिव ॥

मानोँ कौक चकोर चंद लब्धव रविलंबे ।
 घन दामिनि मनु मिलेय काम रतिपति सुख फंवे ॥
 दुहुँ ओर शोर स्वातिक सुभो, गाढ़ो अति आलिंगन हियव ।
 नख खंड नाहि परसे सरहि, सकल कौक केनी कियव ॥२३०॥
 अंग अंग बिन अंग रंग बढूँ बढूँ ओरन ।
 कठिव विरह तन ताप परस्पर वर सत मोरन ॥
 हाव भाव रति अंग मुदित वर्षत अभिलाषै ।
 करत कटाच्छ प्रकाश बैन मधुरै मुख भाषै ॥
 गहि अंग संग आसन हियव, कौक कला रस विस्तरिय ।
 आनंद द्वंद उन्माद जुत, काम विवस दोउन भइय ॥२३१॥
 तिहिं छिन इक मृगराज आनि तत्काल सुगजिय ।
 प्रफुलित नयन प्रचंड चँवर सिर उपर सजिय ॥
 विकट दंत मुख विकट बाहु नख विकट सुरजै ।
 तिहिं भय वन के जीव सबै गजराज सुभजै ॥
 आवत देखि तेहि सिंह को, हूँ समीत इम तिय कहै ।
 विधि कौन समै यह का भई, दैव वारि मैं बपु दहै ॥२३२॥
 तब तिय कंपि समीति उछरि महिमा गरि लगिगय ।
 हे प्राणेश्वर कहा भई रसगत जो उमगिगय ॥
 तजहु भजहु अब वेगि, बचहु अब प्राण उबारौ ।
 मैं अब पलटै प्राण तजौ, तुम पर तन वारौ ॥
 मुखकाय मीर तब योँ कहै, न डरि न डरि अबला सुभुव ।
 तुटै जु आव रक्खेँ भुजन, कहा स्याल डर डरत तुव ॥२३३॥

छंद अर्द्धनाराच

गहै कमान बानयं, धरंत ताहि पानयं ।
 तज्यो न बाल आसनं, गह्यो सरं सरासनं ॥२३४॥
 सु सिद्धि राग वागयं, ठए म धीर पागयं ।
 कद्यो हँकारि बाचयं, सम्हारि स्वान साचयं ॥२३५॥
 करी सुगुज्ज पुंजयं, उर्यो सु क्रोध गुंजयं ।
 धरयो सु चौर सीसयं, भुजा उठाय रीसयं ॥२३६॥
 यथा सुक्रोध कालयं, उर्यो सु सिंह बालयं ।
 करं कमान लिन्नयं, कसी सतानि^१ दिन्नयं ॥२३७॥
 लग्यो सुबाण मत्थयं, लग्यो अकत्थ गत्थयं ।
 लग्यो सुबाण पार भां, गिरयो सुसिंह स्यार भो ॥२३८॥

दोहरा छंद

सिंह मारि इक बाण तै^१, भू मै^२ दिन्नौ डारि ।
 फिरि कमान तिहिं हथ^२ तै^१, धरी जु भूपर धारि ॥२३९॥
 यह माहस किन्नौ प्रगट, सम स्वभाव सम बुद्धि ।
 गर्व हर्ष हिय नहि कछू, प्रगटिय प्रेम प्रसिद्ध ॥ २४०॥
 मिलत मिलत मुसुकात मृदु, कंपत हर्षत गात ।
 उचकनि लचकिन मसकिबो, सीकर हूकर बात ॥२४१॥

कवित्त छंद

कंचन लता सी थहरात अंग अंग मिलि,
 सीकर समूह अंग अंगनि मै^१ दरसै ।

चुंबन कपोल नैन खंडन अरध नख,
 गहत पयोधर प्रचंड पानि परसै ॥
 आनंद उमंगन में मुसकात बाल तुत-
 रात बतरात सतरात रस बरसै ।
 लपटनि भपटनि मसकनि अनेक अंग,
 रति रंग जंग तै अनंग रंग सरसै ॥२४२॥

छप्पय छंद

मिटो पवन परचंड, मिटिव मनमथ मद भारिय ।
 हटेउ तिमिर तिहिं समय, प्रगट परकास सुधारिय ॥
 सकल सत्थ जथ तत्थ, मिले अप्पन^१ थल आइव ।
 साहि हुरम को सोध करिव तिहिं समय सुहाइव ॥
 दीनीजु सीख तब सेख को, आय आय डेरन गयव^२ ।
 पहुँची सुजाय पतिसाह पै, हुरम साह आदर दियव ॥२४३॥
 तब सु साहि करि कुच्च,^३ सकल दिक्षिय दिसि आयव ।
 चढ़िव मेन समूह, धूरि उड़ि अंबर छाइव ॥
 घुमरि घुमरि निस्तान, घोर दुंदुभि घन बज्जिय ।
 सकल खान उमराव, हरष संजुत मग रज्जिय ॥
 कीन्हें^४ प्रवेस निज निज घरन, साह महल दाखिल भयव ।
 सुख खान पान सौगंध जुत, आप आप^५ रस वसि^६ छयव ॥२४४॥

१ आपन । २ दिन्नो जु सिक्ख तब सेख को अप्प अप्प सिवरन
 गयव । ३ कूँच । ४ किन्हो । ५ अप्प । ६ बस भयव ।

एक^१ समय पतिसाह, हुरम सँग सेज बिराजे ।
 दंपति अति रस लीन, कोक की कला^२ सु साजे ॥
 रमत करत परकार, एक^३ आसन रस^४ भीने^५ ।
 सरस परस्पर मुदित, उदित कंद्रप तन चीने ॥
 तिहि समय दैव संजोग तैं, इक आखु आवत भयव ।
 देखत ताहि पतिसाहि को, मदन दंद उत्तरि गयव ॥२४५॥

दोहरा छंद

मूषक हजरति देखि कै, आसन तजि ततकाल ।
 लै कमान संधानि कै, हन्यां तीर लखि बाल ॥२४६॥

चौपाई छंद

हजरति हरषि तीर तिहि दिनौ ।
 चूहो^६ प्राण-हीन तब किनौ ॥
 तबहीं साहि हरषि मुसकाए ।
 तिय को ऐसे बचन सुनाए ॥२४७॥
 कायर जाति तिया हम जानी ।
 तातैं यह हम प्रथमहि ठानी ॥
 यह करनी अदभुत तुम देखी ;
 निज कर करी सु तुम अवरेखी ॥२४८॥
 हँसी हुरम सुनि हजरत बानी ।
 पुरुषन की तो अकथ कहानी ॥

१ इक । २ केलि । ३ इक्क । ४ रति । ५ भिन्ने ।
 ६ चूही प्राणहीन तिहि चीने ।

मारै' सिंह न तौ मुष भाषै ।

जाचै नाहिं प्राण वे राखै ॥२४६॥

मैं जग में ऐसा सुनि पाऊँ ।

कहै साहि मैं बहुत बधाऊँ ॥

बकसौ गुनह तो अबै बताऊँ ।

तुरत साहि कै पाइ लगाऊँ ॥२५०॥

सोरठा छंद

ऐसा मोहि बताय, सिंह मारि सिफत न करै ।

बकसौ औगुन आय, जां उन तात ज मारियो ॥२५१॥

हुरम तबै कर जोरि, बार बार सिर नाय कै ।

सुनहु गुनह अब मोरि, हजरति बीत्यो आपनो ॥२५२॥

छप्पय छंद

मृगया महुँ जिहि समय, सकल भूले बन माहीं ।

महा घोर तम भयो, तहाँ बरनी नहिं जाहीं ॥

तदिन सेख संयोग, आनि हमसै तब मिलिब ।

नहिन सेख तकसीर, देखि मन मोरहि चलिब ॥

संयोग भोग बिछुरन मिलन, लिख्यो बिधाता ज दिन जहँ ।

नहिं टरै लाख कोऊ करो, सुतौ होय वह तदिन तहँ ॥२५३॥

दोहरा छंद

मैं सेखहिं जानत नहीं, सेख न जानत मोहिं ।

होनहार संयोग जो, मिटै न उतनी होहि ॥२५४॥

सुरति करत सिंह जु उठ्यौ, लख्यौ सेख सति भाय ।
 ले कमान मार्यौ तुरत, तज्यौ न आसन आय ॥२५५॥
 सुनू स्वभाव ज सेख के, लच्छिन कहे जु आप ।
 मैं समीति भइ सिंह ते, कहे मोहि बिन पाप ॥२५६॥

त्रोटक छंद

सुनिए पन सेख करै निज ये ।
 घर बैठत पाँ जल सों रजए ॥
 नहिं भोजन सोहि गरम्म करै ।
 उकरू नहिं बैठत भुंमिं भरै ॥२५७॥
 सरणागत आवत नाहिं तजै ।
 पर बाम लखे मन माहि लजै ॥
 जहँ जाचत प्राण न राख तहाँ ।
 नहिं भूठ अकारन भाष तहाँ ॥२५८॥
 रण मैं नहिं पीठ दई कबहूँ ।
 लखि आरतिवंतनं सों अबहूँ ॥
 तहँ मेटत आरति वार तिहों ।
 बिन आसन बैठत है कबहों ॥२५९॥
 मुख से उचरै न टरै कबही ।
 सब ते मधुरे मुख बैन सही ॥
 द्रग लाज भरे रिक्कवार घनै ।
 रहनी करनी कविराज भनै ॥२६०॥

महिमा महिमा नहिं जात कही ।
 जस चाहक गाहक गाहक ही ॥
 वरबीर महारणधीर अरै ।
 खग खेत गहै अरि खंड करै ॥२६१॥
 सुनि साहि मनै अचिरज्ज भयो ।
 ततकाल जु सेख बुलाय लयो ॥
 छिरकाय धरा जल सों जु भरे ।
 बहु भोजन आनि गरम्म धरे ॥२६२॥
 तर गेरि पटंबर अंबरयं ।
 करि पालथि छोरिय कंमरयं ॥
 बहु भाति सिराहि सुभाय मनं ।
 करिए तब भोजन आप^१ अनं ॥२६३॥
 मिलिए सब जो कछु वाल कहे ।
 महिमा तिय जानि सनेह लहे^२ ॥
 प्रजुरे पतिसाह सु कोप कियं ।
 मनु ज्वाल विशाल सुघृत्त दियं ॥२६४॥
 द्रग लाल विशाल सुबंक भुव^३ ।
 रद दावत^३ ओठ सु ओठ दुव^३ ॥
 करि क्रोध तबै पतिसाह कहै ।
 उर मै अति क्रोध प्रचंड दहै ॥२६५॥

सुनि जामहि जो तकसीर परै ।

तिहि कोन कहो अब दंड धरै ॥

कर जोरि उठ्यो महिमा तब ही ।

हम तो तकसीर भरे सबही ॥२६६॥

तुव गर्दन बेग कबूल करो ।

है तकसीर जु सेख भरो ॥

तब सेख कहै कर जोरि तबै ।

करिए मन भावतु है जु अबै ॥२६७॥

तब बोलि हुरम्म कहै मुख तै ।

पहलै तकसीर परी हम तै ॥

गरदन्न कबूल करी अबही ।

पहलै हम तै तकसीर भई ॥२६८॥

समझे पतिसाह तबै मन मैं ।

अबला हठ नाहिं मिटै मन मैं ॥

इनको सब बेगम लोग कहैं ।

मन चाहत सो हठता जु गहै ॥२६९॥

दोहरा छंद

हुरम बचन सुनि साह तब, मन विचार तहँ कीन^२ ।

बेगम जाति जु तीय की, इन मरबे मन दीन^३ ॥२७०॥

जाहु सेख इत मति रहो, जहँ लागि मेरो राज ।

जो राखै^४ ताको हनूँ, प्रगट सुसाज समाज ॥२७१॥

कट्टन गरदन जोग तू, कीनो^१ कुबिध^२ खराब ।
को रखै या भूमि पर, राखि करै को जवाब ॥२७२॥

छप्पय छंद

यह महि मंडल जितो, आन मेरी सब मानै ।
खूनी रखै कौन, कांउ ऐसा तू जानै ॥
हम ते बली बताय, ओट जाकी तू तककै ।
बचै न काहू ठौर, एक बिन गए न मक्कै ॥
कर जोरि सेख इम उच्चरै, बली एक साहिब गिनुँ ।
निर्बीज धरा कबहूँ न है, मैं हमीर श्रवनन सुनुँ ॥२७३॥
तब सुसेख सिर नाय, रजा हजरति जो पाऊँ ।
जौ न गिने पतिसाह, सन मैं ताकी जाऊँ ॥
तुमहि न नाऊँ सीस, नहिंन फिरि दिल्लिय आऊँ ।
जुद्ध जुरै नहिं टरौ, हत्थ तुम कां जु दिखाऊँ ॥
यह कहत सेख सल्लाम किय, तबहि चला चलचित्त हुब ।
निज धाम आय अप अनुज सों, विबर विबर बातै जु हुब ॥२७४॥

छंद पद्वरी

आए जु सेख घर तब सरोष ।
जिय जान्यो अपनो सकल दोष ॥
मिलिए^३ जुमीर गबरू सुधाय ।
चल चित्त देखि तिहिं पूछि जाय ॥२७५॥

किहिँ हेतु आज चिंतत सुभाय ।
 किहिँ कियव बैर सो मुहिँ^१ बताय ॥
 तिहिँ मारि करूँ ततकाल टूक^२ ।
 हिय क्रोध अग्नि सो^३ उठत हूक^४ ॥२७६॥
 को^५ करै बैर बिन कर्म बीर ।
 मिट^६ गये अन्न जल को सु सार ॥
 तिहिँ^७ कोन रहै रक्खै सु कौन ।
 यह जानि मर्म तुम रहो मौन ॥२७७॥
 यह सुनत मीर गवरू सुभाय ।
 सो^८ परयो धरनि मुच्छा सु खाय ॥
 तदि करयो बांध बहु बिधि सु ताहि ।
 नहिँ करो सोच रहु निकट माहि ॥२७८॥
 तव कहै मीर गवरू सु ताहि ।
 सब तजो देश मक्के सु जाहि ॥
 कै रहो राव हम्मीर पास ।
 तन रहै खुशी नासै जु त्रास ॥ २७९ ॥
 तव चलिव सेख तजि माहि देश ।
 सब^९ सुभट संग लिन्ने^{१०} सुवेश ॥

१ मो । २ टूक । ३ ओं । ४ ऊक इक । ५ महिमा
 साह ने कहा । ६ मिटि अन्न जहाँ जाके समीर । ७ तव । ८ सुइ
 परयो धरनि मुच्छा सुखाइ । ९ निज । १० लीन्हे ।

सत पंच सैन गजराज पंच ।
 रथ सत्थ लिए निज नारि संच ॥२८०॥
 सब रखत साज निज संग लीन ।
 दामी^१ जु दास सुंदर नवीन ॥
 सजि साज वाज डेरे अनूप ।
 लदि ऊँट किते संग चलिय^२ जूप ॥२८१॥
 चढ़ि^३ सन मज्या निज संग बाम ।
 बज्जिव निशान गज्जिव सु ताम ॥
 भग चलत करत मृगया अनेक ।
 मिलि चलिय^४ सकल बर वीर एक^५ ॥२८२॥
 जिहिँ मिलै राव राजा सु जाय ।
 पतिसाह बैर सुनि रहै चाय ॥
 चहु चक्क फिर्यो महिमा सुधीर ।
 नहिँ कह्यो रहन काहू सुपीर ॥२८३॥
 ह्वै^६ दीन सेख देखे सुभारि ।
 बिन राव दसौँ दिसि फिग्व हारि ॥
 तब तक्कि^७ सेख हम्मीर राव ।
 सोइ आई सरन परसे जु पाव ॥२८४॥

१ सब । दासि दास । २ चले । ३ सजि सेख चढ्यो ।
 ४ चलै । ५ केक । ६ नन कह्यो । ७ ह्वै, दोड़ दीन दोय ।
 ८ तके ।

देहरा छंद

गढ़ बंका^१ बंको सुधर, बंका राव हमीर ।
 लखि प्रतीत मन महँ^२ भइय, हर्षे महिमा मीर ॥ २८५ ॥
 देखि जलाशय बिटप बहु, उत्तरि सु डेरा कीन^३ ।
 हय गय बंधे तरुन तर, खान पान बिधि लीन^४ ॥ २८६ ॥
 डेरा ड्योढ़ी कर खरे, करी विछायति वेस ।
 करि^५ मिसलति कौंसिल जुरी, सब भर सरस सुदेस ॥ २८७ ॥
 मंत्रो मंत्र सुपूछि^६ तब, इक चर लीन सु बोलि ।
 जाहु राव के पास तुम, कहो बात सब खेलि^७ ॥ २८८ ॥
 प्रथम सलाम कहो जु तुम, विरत^८ कहो सु विसेष ।
 हुकम होय जो मिलन को, तो हाजिर हूँ^९ सेख ॥ २८९ ॥
 इतने मैं जानी परै, पन ध्रम प्रीति प्रतीति ।
 हर्ष सोक यहिँ गति लख्यो, तुम जानत सब रीति ॥ २९० ॥
 तब सु दूत गय राव पहुँ, करी खबर दरबान ।
 बोलि हजूरि सु दूत को, पूछत कुसल सुजान ॥ २९१ ॥
 सकल बात सुनि दूत मुख, हर्ष राव बहु कीन^६ ।
 तबहि उलटि पठयो सु वह, सेख बुलाय सुलान^{१०} ॥ २९२ ॥

१ बंको । २ जिय में । ३ किन्न । ४ लिन्न । ५ करी
 कन्नहरी आर्य तब । ६ पुच्छि । ७ घुल्लि, खुल्लि । ८ वृत्त, वृत्तांत ।
 ९ किन्नय । १० लिन्नय ।

नाराच छंद

चल्यो जु सेख राव पहुँ बनाय साज कीनयं^१ ।
 तुरंग पंच नाग एक साज साजि लीनयं^२ ॥
 कमान दोय टंकनो सु देस मुल्लतान की ।
 कृपान एक बेस देस पालकी सुजान की ॥२८३॥
 लिये सु दोय बज्र लाल एक^३ मुक्त मालयं ।
 कही जु एक दोय बाज स्वान दोय पालयं ॥
 सवार एक आपही सबै पयाद चल्लियं ।
 रहे तनक्क पौरि जाय फेरि अगग हल्लियं ॥२८४॥
 सुबेतहार अगग^४ जाय राव को सुनाइयं ।
 हमीर राव बेगि आय^५ रावतं खँदाइयं ॥
 चलें लिवाय सेख केँ जहाँ जु राव बट्टियं ।
 सभा समेत राव देखि सेख को सु उट्टियं ॥२८५॥
 मित्रे उभै समाज सेँ कुसल्ल छेम पुच्छियं ।
 परस्ति पानि^६ पाव सेख हाथ जोरि सुच्छियं ॥
 करी जु अगग सेख भेट बुल्लियो सु बाचयं ।
 सरन्नि राव राखि^७ राखि मै सरन्नि साचयं ॥२८६॥
 फिरयो सु मै सु दीन दोय खान जाति सब्बयं ।
 जितेक राज रावताय छत्रि जाति सब्बयं ॥

१ किन्नयं । २ तुरंग पंच नाग इक्क सजि लिन्नयं । ३ इक्क ।

४ अगग । ५ आप । ६ हत्थ । ७ रक्खि रक्खि ।

दिशा दसों जितेक भूप और वीर बंक्र जे ।
 रहो कद्यो सु कौन हू रहूँ तहाँ सुधीर जे^१ ॥२८७॥
 हँसे हमीर राव बात सेख की सुने तँही ।
 कहा अलावदीन, पातसाह, सोभनंतही ॥
 रहो यहाँ अभै सदा हमीर राव यां कहै ।
 तजूँ जु तोहि प्राण साथि और बात यों कहै ॥२८८॥

चौपाई छंद

राव हमीर नजर सब रक्खिय ।
 बचन सेख को यहि विधि भक्खिय ॥
 तन धन गढ़ घर ए सब जावै^२ ।
 पै महिमा पतिसाह न पावै^३ ॥२८९॥
 कहै सेख प्रण समुझि सु किज्जिय^४ ।
 मेरी प्रथम अर्ज सुनि लिज्जिय^५ ॥
 दसो दिशा मों मैं फिरि आयव ।
 जिते खान सुलतान सु गायव ॥३००॥
 राजा रान राव जितने जग ।
 दीन होय देखे^६ सु अगम मग ॥
 बाँध तेग साहस करि कोई^७ ।
 तजै लोभ जीवन कां सोई ॥३०१॥

१ सुतंक जे । २ किज्जे । ३ लिज्जे । ४ दिक्खे ।
 ५ कोइय ।

यह जिय जानि वास मुहि दीजै^१ ।

सेख राखि^२ सरनै जस लीजै ॥

इतनी धरा सेस सिर होई ।

कहै साहि रक्खै नहिँ कोई ॥३०२॥

छप्पय छंद

बार बार क्यों कहै सेख उत्कर्ष बढ़ावै ।

एक बार जो कही बहुरि कछु और कहावै^३ ॥

प्रथम वंश चहुवान टेक गहि कबहु न छँडै ।

बहुरि राव हम्मीर हठ न छूटै तन खंडै ॥

थिर रहहु^४ राव इम उच्चरै न डरि न डरि अब सेख तुव ।

उगै न सूर जो तजहुँ^५ तोहि चलहिँ^६ मेरु अरु भुम्भि ध्रुव ॥३०३॥

बकसि सेख को बाजि^७ साज कंचन के साजे ।

मुक्त माल सिरपेंच जटित हीरा^८ छवि छाजे ॥

सकल सद्य सिरपाव शाल दिन्नव अति^९ भारिय ।

पंच लक्ख को पटो दियो आदर भुवकारिय ॥

दिन्नी सुठौर सुंदर इकै तेहि देखत हिय हर्षियउ ।

उच्छाह सहित उठि शेष तब आनंद मंगल वर्षयउ ॥३०४॥

दाहरा छंद

महिमानी पठई नृपति, सबै सद्य के हेत ।

खान पान लायक जिते, मधु आमिष सु समेत ॥३०५॥

१ दिजिय । २ रक्खि । ३ कढावै । ४ होहु । ५ तजै ।
६ चलै । ७ वाच । ८ हीरन । ९ असि ।

ज दिन शेख दिल्ली तजी, दूत सथ्य दिय ताहि ।
 को रक्खै कित जात यह, लखो जु तुम हूँ वाहि ॥३०६॥
 राख्यो राव हमीर तब, महिमा साह जु पास ।
 कहै राव सो दूत तब, मत रक्खो तुम पास ॥३०७॥
 अलादीन सू औलिया, फिरत चहुँ दिसि आनि ।
 निबल सबल के बाद सो, किन सुख पायो जानि ॥३०८॥

मुक्तादाम^१ छंद

कहै तब दूत सुनो नृप बात ।
 बड़ो तुव वंश प्रतापि सुहात^२ ॥
 तजो^३ रतनागर को सर हेत ।
 रतन अमूल्य तजो रज हेत ॥३०९॥
 कहौ गुन कौन रखै इहि सेख ।
 जरत जु बाल गहो^४ सुविशेष ॥
 अजान असी जु करै नहिँ राव ।
 सुनो तुम नीति जु राज स्वभाव ॥३१०॥
 तजो अब इक्क^५ कुटुंब बचाय ।
 तजो गृह एक सुग्राम सहाय ॥
 तजो पुर इक्क सुदेश बचाय ।
 तजो सब आतम हेत सुभाय ॥३११॥
 महा यह नीच अधम्मिय सेख ।
 टरयो नहिँ स्वामि-तिया गुन देख ॥

बढ़ै पतिसाह^१ दिलीपति बैर ।

लख्यो नहिं आनन प्रात सुफेर ॥३१२॥

प्रलै जिहिं^२ रोष तजै धर देह ।

हम्मीर सु राव सुनो रस भेव ॥

बढ़ै निति नेह तुमैं पतिसाह ।

अमीरस मैं विष घोरत काह ॥३१३॥

परौ^३ फिर आप नहीं दुख आय ।

तजो यह जानि प्रथम्म सुभाय ॥

जथा वह रावन जित्ति^४ त्रिलोक^५ ।

सुरन्नर नाग रहैं तिहिं ओक^६ ॥३१४॥

करयो तिन बै^७ जबै रघुनाथ ।

मिट्यो गढ़ लंक सुबंकम पाथ^८ ॥

कहै सर^९ कोन करै पतिसाह ।

करै तब जंग बचो नहिं ताहि^६ ॥३१५॥

छप्पय छंद

कह हमीर सुनि दूत वचन निज असत न भाख्यौ ।

मों बिन^{१०} और न कोय सेख को सरनै राख्यौ ॥

गहूँ खग^{११} सनमुख दुहूँ अति गर्व सुद्ध दड़ ।

लहै मुक्ति मग सत्य किधौ रणथंभ महागढ़ ॥

१ पुनि साह । २ इह । ३ परै । ४ जीति । ५ तिलोक ।

६ वोक । ७ साथ । ८ सिर । ९ आहि । १० मुक्त धिन ।

११ तेग ।

कहियो निशंक पतिसाह सों सेख सरनि हम्मीर किय ।
सामान युद्ध जेते कछू सो अनंत दुग्गह जु लिय ॥३१६॥

दातार छंद

सुनि हमीर के बचन, दूत दिलिय दिसि आयव ।
करि सलाम कर जेरि, साह को सीस नवायव ॥
पूरब दच्छिन देश और पच्छिम दिशि आयव ।
सबै शेख फिरि थकिक, कहूँ काहू न रखायव ॥
तब शेख आय रणथंभ गढ़, दीन बचन इम भक्खियो^१ ।
सुनि हमीर करुणा सहित, सेख बचन दै रक्खियो^२ ॥३१७॥

बहरम खाँ वजीर बोले

समद पार गय शेख, बार हजरति वह नाहीं ।
राव शेख क्यों रखै, रहत हजरत घर माहीं ॥
फिर न कहौ यह बचन, वृथा^३ कबहूँ^४ अनजानै ।
दूत साह के बचन, सुनै सत्कार सुमानै ॥
महरम्म खान इम उच्चरै, खबरदार नहिं बेखबरि ।
कहिए जु बात निज दृगन लिखि, असी बात नहिं कहौ फिरि ॥३१८॥

दोहरा छंद

महरम खाँ उज्जीर सों, कहै बैन पतिसाहि ।
इक फरमान हमीर को, लिखि भेजहु अब ताहि ॥३१९॥

छप्पय छंद

लिखि हजरति फरमान उलटि एलची पठाए ।
 हठ मति करो हमोर चोर मति रखौ पराए ॥
 हम दिल्ली के ईश राव तुमहूँ जु कहावो ।
 बढै अलसि जिय माहिं बैर में कहा जु पावो ॥
 माल मुलक चाहो जितो, कहै शाह बहु लिजिए^१ ।
 फरमान बाँचि^२ जिय राव तुम, चोर हमारो दिजिए^३ ॥३२०॥

दोहरा छंद

बाँचि राव फुरमान तब, दिएउ सेस तब अंग ।
 बचन दिए मैं शेख को, करों शाह सौं जंग ॥३२१॥
 दियउ^४ उलटि फरमान तब, राव साहि कौ ज्वाब ।
 रक्ख्यो महिमा साहि मैं, तजूँ न तिहि मैं आब ॥३२२॥
 यह फरमान जु बाँचि कै, करिव साह तब क्रोध ।
 खिज्यो देखि पतिसाह कौं, कियो उजीर सुबोध ॥३२३॥

छप्पय छंद

कित्तौ गढ़ रणथंभ राव जिस पहुँ गवाँए ।
 दसो देश बसि किए जोति करि पाँव लगाए ॥
 ईश कहौ अब कौन युद्ध जो हम सों मंडै ।
 देत दुनी तैं कट्ढि गर्व ताते क्यों मंडै ॥
 साहिब बचन हम उच्चरै अली औलिया पीर गन ।
 महिमा साह जु रक्खि तुव अजहूँ समुझि हमोर मन ॥३२४॥

दोहरा छंद

दृजा हजरति का लिखा, बाँचि राव फरमान ।
 बार बार क्यों लिखत है, तजूँ न हठ की बान ॥३२५॥
 पच्छिम सूरज उगवै, उलटि गंग बह नीर ।
 कहो दूत पतिसाह सों, हठ न तजै हम्मीर^१ ॥३२६॥

छप्पय छंद

दियो पद्म ऋषिराज करौं जब लग मैं सोइय ।
 जो गढ़ आया निमत साह रक्खै नहिं कोइय ॥
 अनहोनी नहि होय होय होनी है सोइय ।
 रजक मोत हरि हृथ्य डर सु मानव क्यों कोइय ॥
 नहिं तजूँ शेख कौ प्रण करिव सरन धरम क्षत्रिय तनों ।
 मन है विचित्र महिमा तनो सत्य बचन मुख तैंभनों ॥३२७॥
 चले दूत मुरभाय, दिखि दिसि कियो पयानों ।
 गढ़ रणथंभ हमीर साह कैसे कम जानों ॥
 हयदल पयदल सेन सूरवर बीर सवायो ।
 हठी राव चहुँवान वंश यहि हठ चलि आयो ॥
 यह बिधि सु तुमहूँ धर लखै हरे सकल तुम बार बर ।
 अब पतिसाह जु एक भुव कै तुम कै जु हमीर बर ॥३२८॥
 सुनत दूत के बचन साहि जब मन मुसकाए ।
 कितो राज हम्मीर करै हठ मोहि बुलाए ॥

कितेक गढ़ इक ठौर किते उमराव महाबल ।
 किते बाजि गजराज किते भट बंक महाबल ॥
 तुम कहो सकल समभाय मुहि किहि हेतु इतै गर्बहि बढै ।
 हम्मीर राव चहुवान कै कितो नृपनि दल संग चढै ॥३२६॥
 हजरति राव हम्मीर बार बहुतैं समभायव ।
 सुनि महिमा को नाम रोष करि राव रिसायव ॥
 करो जुद्ध तिर सुद्ध साह दल खंडि विहंडौ ।
 धरों सीस हर कंठ सुजस तिहि लोकहि मंडौ ॥
 हम्मीर राव इम उच्चरै गही टेक^१ छाँडौ नहीं ।
 तन जाय रहै जिय सोच^२ नहि लाज धरम खंडौ नहीं ॥३३०॥

चौपाई छंद

कहे साहि सुनु दूत सु बैन ।
 कहो राव को पन ध्रम एन ॥
 कितोक दल बल सूर समार्ज ।
 कित इक गढ़ सामाँ धर राज ॥ ३३१ ॥
 रहनी करनी प्रजा प्रताप ।
 बानी^३ बिरद^४ दान धन आपं ॥
 नीति अनीति ग्राम गढ़ कैसा ।
 सहर^५ सरोबर बाट जु जैसा ॥ ३३२ ॥
 सत्तरि सहस तुरंगम जानों ।
 दोय लक्ख पयदल भरमानों ॥

सत्तपंच गजराज अमानों^१ ।

होहि कीच मद बहत सुदानों^२ ॥ ३३३ ॥

रनथंभौर ग्वालियर बंका ।

नरवल^३ औ चित्तौड़ सु तंका ॥

रहै जखीरा गढ़ के जेता ।

अनगिन^४ वस्तु न जानत तेता ॥ ३३४ ॥

तुरी सहस इकतीस सु सज्जै ।

अरु गजराज असी मद गज्जै ॥

सूर वीर दस सहस अमानो ।

इते राव रणधीर के जानों ॥ ३३५ ॥

दोहरा छंद

मेटि मसीत जु सकल तहँ, कीनै मंदिर देस ।

बंग निवाज न होय जहँ, श्रवन कथा हरि बेस ॥ ३३६ ॥

नहिं कुरान कलमा नहों, मुसलमान नहिं बीर ।

चारि वरण आश्रम सुखी, देस हमीर सु धीर ॥ ३३७ ॥

अपनै^५ अपनै धर्म में, रहैं सबै नर नारि ।

राजनीति पन तेज जुत, करै राव^६ सुख कारि ॥ ३३८ ॥

कर काहु कै होय नहिं, दुखी न कोऊ दीन ।

आश्रम किते नवीन^७ हैं, ऊँचे मंदिर बीन ॥ ३३९ ॥

१ मानै । २ दानै । ३ नलवर मनु चित्तौड़ सुतंका । ४ अग-
णित । ५ अप्पन । ६ राज । ७ अनूप ।

पद्धरी छंद

रणथंभ दुर्ग बहु बिधि सु जानि ।

तिहिं दरा चारि मग सुगम मानि ॥

घाटी सु चारि अस्सी सु और ।

है गै न चलै अति कठिन ठौर ॥३४०॥

सरवर सु पंच जल अगम सोय ।

बहु रंग कमल फुल्ले सु जोय ॥

चहुँ ओर नीर को नहिन छेह ।

परबत अनूप जल भरै एह ॥३४१॥

सो इहै अगम पहुँचै न खग ।

गढ़ चढ़ै कवन जहँ इक्क मग ॥

अरु भरे दोय भंडार अन्न ।

दस लकख कोटि दस सहस मन्न ॥३४२॥

दस लकख सूत सन धरे संचि ।

दिप दोय लकख धरि धातु खंचि ॥

घृत सहस बीस मन भरे हौद ।

दोय लकख पैद चहुँ गढ़न कौद ॥३४३॥

बिन तैल नोन^१ पर्वत सु तच्छ ।

दस सहस अमल आफू समच्छ ॥

मृग मद कपूर केसरि सुगंध ।

भरि रहे भौन सौंधे सुबंध ॥३४४॥

नहिँ तौल तेल लोहा प्रमान ।

बारुद सुद्ध नव लच्छ जान ॥

अरु पतो जानि सीसो सु सुद्ध ।

नव लक्ख धरयो संचय समुद्ध ॥३४५॥

अरु इतौ राव कै नित्त दान ।

पच तोलि पंच मुहरै सुमानि ॥

दस दोय धेनु तरुणी सु बच्छ ।

सोवरन्न शृंग शृंगार सुच्छ ॥३४६॥

यह अधिक जानि दीजे सु विप्र ।

उगंत सूर दिज्जे सु छिप्र ॥

जीमंत विप्र सब राज द्वार ।

लंगर सु अनगिनित बटत सार ॥३४७॥

बहु अंध पंगु अरु बधिर कोय ।

सो करै^१ भोज नृप के सजोय ॥

दस दोय अन्न मन परै और ।

खग सकल चुगै तहँ ठौर ठौर ॥३४८॥

गणनाथ आदि सब लसै^२ देव ।

नृप आप करत करि नमत सेव ॥

शिव बसै^३ नंदि भैरव समेत ।

भव भवा सबै परिकर समेत ॥३४९॥

दृढ़ महा बंक गन्नेस गढ्ढ ।
 बिन मग्ग सकै पच्छो न चढ्ढ ॥
 बड़ तोप सतरि गढ़ पै अचल्ल ।
 तब छुटत शोर पर्वत सुहल्ल ॥३५०॥
 छुटत गर्भ सुकंत नीर^१ ।
 मन वज्रपात सुकत समीर ॥
 आसा सु नाम रानी सु एक ।
 पतिवृत्त धम्म देवी सु टेक ॥३५१॥
 रणथंभ नाथ सुत इक पूर ।
 चंड तेज मनू ऊगंत सूर^२ ॥
 रतनेस नाम जग है विख्यात ।
 चित्तौड़ दुग्ग पालै सु तात ॥३५२॥
 सँग रहै सुभट थट विकट संग^३ ।
 को करै तिनहिं तैं रणहिं रंग ॥
 तप तेज राव वृषभान जेम ।
 पर दुःख कटन विक्रम सु तेम ॥३५३॥
 देखंत रूप मनु कामदेव ।
 सुइ काछ बाछ निकलंक मेव ॥
 अरु खेत जुरे नहिं देत पिट्ठि ।
 अरि लखत देखि नहिं परत दिट्ठि ॥३५४॥

१ सूकंत नीर । २ चढ़ि तेज मनहुँ ऊगंत सूर । ३ विकट थट
 रहें सुभट संग ।

बहु बाग चहूँ दिसि सघन हेरि ।

गंभीर गहर उपवन सु भेरि ॥

बहु अंभ^१ वृत्त फल भुक्त भार ।

दाढ़िम समूह निबू अपार ॥३५५॥

बहु सेवराज जामुन समूह ।

नारंग रंग महवा समूह ॥

खिरनी सकेलि नारेल^२ वृंद ।

खीरा कि चिरूंजी मधुर कंद^३ ॥३५६॥

कटहल कदंब बड़हल अनंक ।

महुवा अनंत कदलि विशोक ॥

तहँ मोलसिरी सोहै^४ गंभीर ।

माघी सफेत सोहंत धीर^४ ॥३५७॥

फुलवारि गुंज अति भ्रमर होत^५ ।

प्रफुलित^६ गुलाब चंपा उदेत ॥

कहुँ^७ रही केतिकी वृंद फूलि ।

अहि भ्रमर गंध सहि रहे फूलि ॥३५८॥

कहुँ रहे कंवरा जुही जाय ।

संदुप्प^८ ओर संभो सु आय ॥

१ आम । २ नरियल्ल । ३ कंज । ४ मधि किते सरथूं
सोहंत कीर । ५ फुलवादि भौर गुंजार होत । ६ फुल्लित ।
७ बहु । ८ संदूप ।

आचीन नगगस औ असोक ।

पाटल^१ सचमोलिय बेलि कोक^२ ॥३५६॥

एला लबंग अंगूर बेलि ।

माधुज लता माधुरी भेलि ॥

तरु ताल तमाल रु ताल और ।

ता मध्य कमल अरु कुमुद भौर ॥३६०॥

चहुँ और सघन पर्वत सुगंध ।

जल जंत्र छुटै उच्चेस बंध ।

पिक मोर हंस चकवा विहंग ।

सुक चाक कोकिल रमत संग ॥३६१॥

चहुँ और बाग बारी अनूप ।

तिहि मध्य दुर्ग रणथंभ भूप ॥३६२॥

यह दूत के बचन सुनि दरबार किया ।

छप्पय छंद

क्या हमीर मगरूर पलक मैं पाय लगाऊँ ।

खुनी महिमा साह उसे गहि दिझिय लाऊँ ॥

जीति राव हमीर तोरि गढ़ धूरि मिलाऊँ ।

इती जो न अब करूँ^३ तौ न पतसाह^४ कहाऊँ ॥

१ पाटल । २ सतवर्ग और श्रीखंड कुंद, किंसुक सुहालती सेवितिहि मंद । मधुवन वसंत सिंगार हार, मौलिया मदन सर फुले-र । ३ हरौं । ४ मैं साह ।

केतेक राज रणथंभ को इतो कियो अभिमान तिहिं ।

कोपि साह भेजे^२ जबै दसो देस फर्मान जिहिं ॥३६३॥

सुने दूत के बचन शाह जिय शंका आइय ।

चढ़ो कोपि बिन समुझि वहां कैसी बनि जाइय ॥

हार^३ जीति रब हाथि^४ आप संमत जग होई ।

तार्तैं मंत्री मित्र मंत्र^५ द्रढ़ किजिय साई ॥

यह जानि साह दीवान किय खान बहत्तरि इक^६ हुव ।

यह हठ हमीर को सुन्यो तब रक्खे शेख सरन्नभुव ॥ ३६४ ॥

आम खास उमराव सबै पतिसाह बुलाए ।

राजा राणा राव खान सुलतान सु आए ॥

हठ हमीर मुझि करिव सेख सरनै निज रक्ख्यो ।

दियो दूत को ज्वाब बचन बहु अनबन भक्ख्यो ॥

सब तंत मंत जानों सु तुम देश काल बुधि, इष्ट धुव ।

जिहिं जाहु^७ जाहु जस बुद्धि ह्वै कहो^८ नीति उत्तम सु भुव ॥३६५॥

कहैं सकल उमराव ईस तुम सम नहिं कोई ।

तेज प्रताप^९ बुद्धि और दूजो नहिं कोई^{१०} ॥

फिर फिर जो फरमान राव को कहा जु लिखिय ।

जो उपजै यहि बार सोइ प्रभु आपनु अक्खिय^{११} ॥

चढ़िए सिकार गीदड़ तड़ी तऊ सिंह के बाँधि^{१२} सर ।

फिरि लड़ो मरो^{१३} संदेह नहिं तंत मंत यह ही सुवर ॥३६६॥

१ राव । २ पठए । ३ हारजिति । ४ हथ । ५ पूँछि ।
६ एक । ७ जाहि जाहि । ८ कहा । ९ साहि तुम जानत साई ।
१० करिय प्रभु अप्पन अप्पिय । ११ बाँधि । १२ मिलौ ।

महरम खाँ उज्जीर साह सोँ ऐसै भावै ।
 चहुवानन की बात सबै अगली^१ मुख भावै^२ ॥
 पहिले हसन हुसैन सयद^३ चहुवान सुपेले^४ ।
 सात बेर पृथिराज गहे गवरी गहि मेले^५ ॥
 वीसल दे अरु पित्थ ये जड पीर करे अजमेर हनि^६ ।
 महरम खाँ इम उच्चरै असो वंश चहुवान गनि^७ ॥ ३६७ ॥
 गीदड़ सिंह शिकार, साह^८ एको मति जानो ।
 रणतभँवर दिस फलि^९, आप मति करो पयानों ॥
 वहाँ राव हम्मीर, और रणधीर अमानों ।
 अरु सामंत अनेक, अधिक तै अधिक बखानों ॥
 बहु दुग^{१०} बंक रणथंभ गढ़^{११}, यह विचारि जिय लिजिए ।
 तुम अलावदी पीर अति, आप मुहिम्म न किजिए ॥ ३६८ ॥

दोहरा छंद

दुग बंक रणथंभ बड़, तुम अलावदी पीर ।
 दुहूँ करामाति सम गनों, आप और हम्मीर ॥ ३६९ ॥

छप्पय छंद

कालबूत का सेख, एक हजरति बनवावो ।
 ताहि मारि तजि रोष, कहा जिय क्रोध बढ़ावो ॥

१ अगली । २ अकवै । ३ सैद^१ । ४ पिछिय । ५ साह
 गोरी गह मिल्लिय । ६ वीसल दे अरु पित्थ बड़ पीर करिय अजमेर
 हनि । ७ पन । ८ सोई यह इक न जाना । ९ भुल्लि । १०
 दुर्ग । ११ बड़ ।

लगै प्राण धन दोउ, तबै बाजी कोउ पावै ।
 तजै खेत जस जाय, बहुरि कछु हाथ न आवै ॥
 खूनी सरन हमीर के, रह्यो दीन जानै दोऊ ।
 किज्जे मुहिम्म नहिं राव पै, या में तो सुख है सोऊ ॥ ३७० ॥
 मिश्र देश खंधार, खरे गज्जिनि दल आये ।
 अरु काबिल खुरसान, कोपि पतिसाह बुलाये ॥
 रूम स्याम कसमीर, और मुलतान सु सज्जे ।
 ईराँ तूराँ कटक, बलख आरब धर गज्जे^१ ॥
 सब^२ देस रहंग फिरंग के, भण्ड के सज्जे सुबल ।
 अल्लावदान पतिसाह के, चढ़े संग टिड्डी सु दल ॥ ३७१ ॥
 चढ़े हिंद के देस, प्रथम सोरठ गिरनारी ।
 दक्षिण^३ पुरब देस, लए दल बदल^४ भारी ॥
 अरु पहार के भूप, और पच्छिम के जानों ।
 दसों दिसा के बीर, कहा कोउ नाम बखानों ॥
 ग्यारा सै अठतीस^५ थे, चैत्र मास द्वितिया प्रगट ।
 चढ़े सुसाह अल्लावदी, करि हमीर पर कटक भट ॥ ३७२ ॥

भुजंगप्रयात छंद

चढ़े साहि कोपे^६ सु बज्जे निसानं ।

चढ़े मीर गंभीर^७ सशय सु जानं ॥

१ ईरान त्वैर और बलख ठठा भण्ड रस गज्जे । कटक बलक
 आरब धर गज्जे । २ सब देस रहेलरु फिरेंगे भण्डा के सज्जे सुबल ।
 ३ दक्षिण । ४ बदल । ५ अठसिए । ६ कोठ । ७ गम्हीर ।

उड़ी रेणु आकाश सुझै^१ न भानं ।

धरा मेरु डुल्लै सु भुल्लै दिशानं ॥ ३७३ ॥

सहै सेस भारं न^२ पारं न पावै ।

डगै कोल दिग्गज अगै सुध्यावै ॥

मनो छाडि^३ वेला समुहं उमंडे ।

किए^४ है दलं पयदलं रथ थ तंडे ॥ ३७४ ॥

चढ़े सत्त लक्खं सु हिंदू सयन्नं ।

सबै बीस लक्खं मलेच्छं^५ अयन्नं ॥

तहाँ डाक^६ एकं सहस्सं दुपंचं ।

चले वेलदारे लखं च्यारि संचं ॥ ३७५ ॥

चले एक^७ लक्खं सु अगं^८ सु सोलं ।

अलीखान हिम्मत्ति दोऊ हरोलं ॥

चले बानियाँ संग व्यापार भारी ।

सु तो दोय लक्खं गिनै संग सारी ॥ ३७६ ॥

चली लक्ख च्यारं सु संगं भिठारी ।

पकावै^९ सुनानं सबै काम बारी ॥

खरं गोखरं यो चले दोय लक्खं ।

फिरै^{१०} चारि लक्खं गसत्ती^{११} सु रक्खं ॥ ३७७ ॥

दुआ गीर इक्कं सु लक्खं सु चल्ले ।

सु तो लंगरं सो सदा खान मिल्ले ॥

१ सूझै । २ समहार न पावे । ३ छंडि । ४ कियं । ५ मेच्छं ।

६ तहाँपै कडाकं । ७ इक्क । ८ अग्रं । ९ गसती ।

अरब्बी लखं दोइ चल्ले सु संगं ।

रहै तोपखाने सदा जंग जंगं ॥ ३७८ ॥

भरे ऊँट बारूद डेरा सुभारी ।

सु तो तीन लखं सजो संग सारी ॥

चले सहस्र पंचं मतंगं सु गज्जं ।

मनो पावसं मेघमाला सु रज्जं ॥ ३७९ ॥

लसै बैरखं सो मनो बिज्व^१ भारी ।

वरै दान वर्षा मनो भूमि^२ कारी ॥

लसै उज्ज्वलं दंत वग पंक्ति मानो ।

इती साह की सेन सज्जी सुजानो ॥ ३८० ॥

गर्जत निसानं सु सज्जंत भानो ।

मनू पावसं मेघ गज्जै^३ सु मानो^३ ॥

सबै सेन सज्जी चढ्यो साहि कोपं ।

सबै पंच^४ चालीस लखं सु ओपं ॥ ३८१ ॥

तहाँ तीस^५ हजार निस्सान^६ बज्जै^३ ।

सु तो घोर सोरं सुनै^३ मेघ लज्जै^३ ॥

सताईस लखं महावीर बंके ।

टरै नाहिं जंगं भए ताम हंके ॥ ३८२ ॥

परै^७ जोजनं अट्ट^८ औ दाय फौजं ।

कटे बंक बन्न हटे नाहिं रोजं ॥

१ बीज । २ भूमि । ३ भानो । ४ पंच । ५ तीन ।

६ नीसान । ७ परी । ८ आठ ।

चढ़ं उब्बटं बाट थट्टे^१ सु चल्ले ।
 मनो सागरं छंडि बेला उगल्ले ॥ ३८३ ॥
 जल्ले सुक्कियं^२ नीर नाना सु थानं ।
 बहैं औघटं घाट दुट्टंत^३ मानं ॥
 कियो कूच कूचं^४ चले मीर धीरं ।
 परयो जोर हम्मीर के देस तीरं ॥ ३८४ ॥
 भजे भुम्मियाँ भुम्मि चल्लं अपारं ।
 गए पर्वतं^५ बंक मैवास भारं ॥
 सबै राव हम्मीर के देस माहीं ।
 भए वीर संधीर जुद्धं समाहीं ॥ ३८५ ॥
 तिही^६ बिच्च मलहारणो इक्क गढ्ढं ।
 लड़े राव के रावतं जोर दढ्ढं ॥
 दिना तीन लौं सो कियो जुद्ध भारी ।
 फते^७ पातसा की भई बैनकारी^८ ॥ ३८६ ॥
 चले अग्र^९ साहं सु सेना हकारी ।
 सुनी राव हम्मीर कुपे^{१०} सु भारी ॥
 किए रक्त नैनं सु भृकुटी करूरं ।
 लख्यो रावतं जोर उट्टे जरूरं ॥ ३८७ ॥

१ थाटे । २ सांखियं । ३ दूटंत । ४ कुच कुचं ।
 ५ पर्वतं, पर्वयं । ६ तही बिच्चि । ७ भते । ८ बनकारी ।
 ९ अग्र । १० कोपे ।

परी पक्खरं बाजि राजं सु सज्जे^१ ।

बजे नह निस्सान^२ आकाश लज्जे^३ ॥

तबै राव हम्मीर को सीस नाए ।

बिना आयुसं साह पै बीर धाए ॥ ३८८ ॥

जुरे आय जुद्धं न दीजो बनासं ।

चढे लक्ख चालोस औ पाँच तासं ॥

इतै राव हम्मीर के पंच^४ सूरं ।

अभयसिंह पम्मार रठौर भूरं ॥ ३८९ ॥

हरीसिंह बध्वेल कूरम्म भीरं ।

चहूवान सद्दूल^५ अजमत्त सीमं ॥

त्रिभागै करी सेन बागै उठाई ।

मिले बीर धीरं अमीरं हटाई ॥ ३९० ॥

दोहरा छंद

पंच सूर हम्मीर के, बीस सहस असवार^६ ।

उत सब दल पतिसाह को, बज्यो परस्पर सार ॥ ३९१ ॥

नदी बना सज उत्परै, रत्ति^७ बसिय पतिसाह ।

प्रात कुचच^८ नहिं कर सके, आय जुटे नरनाह ॥ ३९२ ॥

पद्धरी छंद

चढ़ि चले^९ साह हरबल सभीर ।

तिहिं जुटे राव कूरम सबीर^{१०} ॥

१ साजे । २ नीसान । ३ लाजे । ४ पाँच । ५ साद्दूल । ६ अश्वार ।

७ रात । ८ कुच । ९ चलिय, चल्यव । १० तहँ जुटि राव कूरंभ बीर ।

बग्घेल हरीसिंह अनिय वंधि ।
 चंदेल पयादे भिरिव संधि ॥ ३८३ ॥
 बिच गोल साह को जितो सुद्ध ।
 त्रिन सूर राव के करि^१ न जुद्ध ॥
 यहि भाँति पंच रावत अभंग ।
 पतिसाह सेन सों जुटे जंग ॥ ३८४ ॥
 कम्मान श्रवन लागि करि कसीस ।
 मनु प्रगट पश्य भारथ्य सीस ॥
 सर बरसत पावस मनो नीर ।
 बहु वेधि कवच धर परत धीर ॥ ३८५ ॥
 लागि सेल अंग नहि पार होत ।
 ससि कोरि घटा मैं करि उदेत ॥
 किरवान बहैं करि करिव क्रोध ।
 धर परत सीस धर डठत^२ जोध ॥ ३८६ ॥
 लागि होत कटारिय अंग पार ।
 प्रासाद उच्च के खुजे द्वार ॥
 बहु खंजर पंजर करत पार^३ ।
 ऊँची जु उठी सु तो रुहिर^४ धार ॥ ३८७ ॥
 मनु पर्वत तै^५ गेरू पनार ।
 बहि^६ चली अंग तै^५ सोन^६ धार ॥

बहु घायल घुम्मत बहुत घाव ।

मनु केसिव किसुक तरु सुहाव ॥ ३८८ ॥

चल परी साह दल मैं अपार ।

हा हंत सद्^१ भो दल मैंभार ॥ ३८९ ॥

दोहरा छंद

भगिय^२ सेन पतिसाह की, लुटी जु रिद्धि अपार ।

तब महरम खां साह सों, अर्ज करी तिहिं बार ॥ ४०० ॥

हजरति देश हमीर को, निपट अटपटो जानि ।

भिल्ल कांल तस्कर सबै, और किरात सुमानि ॥ ४०१ ॥

सजग रहै निसि द्यौस सब, गाफलि रहो न मूर ।

हनिय सेन सब अप्पनिय^३, तीस हजार सपूर ॥ ४०२ ॥

घायल को लेखो नहीं, हथिय^४ परे सु बीस ।

परे बाजि सब ड्यौढ़^५ सत, सुनि जिय अचरिज दीस ॥ ४०३ ॥

परे राव के बीर दस, घायल पंच पचीस ।

अभय^६ सिंह पम्मार कै, भयो घाव दस सीस ॥ ४०४ ॥

जाय जुहारे राव कों, कही चमू की बात ।

तब हमीर सब तै कही, बाहर लरो न तात ॥ ४०५ ॥

छप्पय छंद

तब सु साह करि कुच्च^७, चले^८ रणथंभहि आए ।

सकल सु संकित हिये^९, भीर उमराव सुभाए ॥

१ सब्द । २ भगी । ३ आपनी । ४ हाथी । ५ डेढ़ सौ ।

६ अभयसिंह परमार इक । ७ कुच्च । ८ दुग्ग । ९ हीय ।

जल थल पाधरि सैन ऐन^१ चहुँ ओर सु दिक्खिव ।
 चढि अगार इक उच्च^२ राव बहु भाँति न लक्खिव ॥
 चहुवान राव हड़ हड़^३ हस्यो^४ हेरि सैन इम उच्चरयो^५ ।
 पतसाह किधौ सोहा जु गर मानो एक टाँडो परयो^६ ॥४०६॥

दोहरा छंद

फिरि पतिसाह हमीर को, लिखि पठए^७ फरमान ।
 अजहूँ हिंदू समुझि तुव, मिलि तजि सब अभिमान ॥४०७॥

छप्पय छंद

मैं मक्के^८ को पीर दिली पतिसाह कहाऊँ ।
 हिंदू तुरक दुराह^९ सबै इक सार चलाऊँ ॥
 बीर चारि अरु पीर रहै मुझ पर चौरासी ।
 महिमा साहि न रक्खि राव मति करं जु हाँसी ॥
 तुम समुझि सोच^{१०} जिय आपनै^{११} कहा तोहि फल ऊपजै ।
 परचंड लाभ उठै^{१२} जु सिर इक^{१३} सेख को नहिं तजै ॥४०८॥
 फिर हमीर फरमान साहि को उलटि पठायो ।
 हजरति छत्री धर्म सुन्यो नहिं श्रवनन गायो ॥
 तुम मक्के के पीर सूर सुरलोक कहाऊँ ।
 तुम सरभर नहिं हसम साहि पल मैं^{१३} जु नसाऊँ ॥

१ ऐन । २ उँच । ३ हर, हर । ४ हसिय । ५ उच्चरिव ।
 ६ परिव । ७ भेजिय । ८ मक्का का । ९ दोउ राह । १० देखि ।
 ११ आपनै । १२ एक । १३ माँझ ।

नहिं तजौ टेक छंड़ूँ^१ न पन यह विचार निहचै^२ धरयो^३ ।
छिन भंग अंग लालच कहा सुजस खोय जीवन करयो^४ ॥४०६॥

दोहरा छंद

जैत छाडि जोगी कहा , सत छंडै^५ रजपूत ।
सेख न सोंपौ साह को , जब लग सिर साबूत ॥४१०॥

छप्पय छंद

हजरति नई न करूँ करूँ जैसी^६ चलि आई ।
मुसलमान चहुवान सदा तैसी^७ बनि आई ॥
ख्वाजै मीराँ पीर खेत अजमेरि खिसाए ।
असी सहस इक लख बहुरि मक्का न दिखाए ॥
बीसल दे अजमेर गढ़ सो नगरा साको कियव ।
नन बरिय सुंदरी कँवरि सो साह बहुत^८ लालच दियव ॥४११॥
प्रथीराज बर सात साहि गवरी गहि छंड्यौ ।
कर चूरी पहिराय^९ दंड करि कछुव न मंड्यौ ॥
ता पिच्छै गढ़ दिली साहि गौरी चढ़ि^{१०} आयव^{११} ।
रेण कुमार अपार जुद्ध करि सुर पुर धायव^{१२} ॥
चहुवान वंश अवतंस जो खग^{१३} त्यागि नाहिन मुरयो^{१४} ।
छंड़ूँ^{१५} न टेक यह विरद मम सेख रक्खि^{१६} जंगहि करयो ॥४१२॥

१ त्यागूँ । २ निश्चय । ३ धरिव । ४ करिव । ५ छंडै ।
६ ऐसी । ७ तैसे । ८ बहु । ९ पहिराव । १० चलि ।
११ आए । १२ धाए । १३ खाग । १४ मुरखव । १५ छाडूँ ।
१६ राखि ।

तजै सेस जो भुम्भि मेरु चल्लै घर उप्पर ।
 उलटि गंग बह नीर सूर उगै^१ पच्छिम भर ॥
 ध्रुव चल्लै आकास समद मर्जाद सुखंडै ।
 सतीसंग पति कटै बहुरि घर आयसु^२ मंडै ॥
 थिर रह्यो न यह संसार कोइ सुनो साहि साखी सु ध्रुव ।
 दसकंध धरणि अज्जुन जिसा स्वप्नहि^३ मम दिक्खंत^४ भुव ॥४१३॥

दाहरा छंद

कलि मैं अमर जु कोइ^५ नहिं, हँसम देखि नहिं भूल ।
 तुम से किते अलावदी, या धरती^६ पर धूलि^७ ॥४१४॥
 अपने को सूर न गिनै, कायर गिनै न और ।
 अपनी कीरत आप^८ मुख, यह कहबो नहिं जोर ॥४१५॥
 लिखे लेख करतार के, हजरति मेट न काय ।
 को जानै रणथंभ गढ़, अब यह कैसो होय ॥४१६॥

चौपाई छंद

लिखे हमीर साहि सब बंचे ।
 करि मन कोप जंग को नंचे ॥
 तीन सहस नीसान सु बज्जे ।
 घर अंबर मग सोर सु गज्जे ॥ ४१७ ॥
 रणतभँवर चहुँ ओर सु घेरिव ।
 दल न समात पुहमि सब हेरिव ॥

१ उगहि । २ आपुस । ३ सुपन । ४ दीखंत । ५ को ।
 ६ धरती । ७ धूरि । ८ अप्प ।

किन्न^१ निरोध क्रोध करि बुल्लिव ।

देखो कुबुधि हमीर सु भुल्लिव ॥ ४१८ ॥

जब हमीर हर मंदिर आए ।

बहु विधि पूजि सु बचन सुनाए ॥

धूप दीप आरती उतारी ।

शंकर की अस्तुति उच्चारी ॥ ४१९ ॥

नाराच छंद

नमामि ईश शंकरं, जटी पिनाकयं हरं ।

शिवं त्रिशूलपाणियं, विभुं प्रभुं सुजानियं ॥ ४२० ॥

त्रिनैन अगि^२ भालयं, गलै^३ सु मुंडमालयं ।

भवानि^४ बाम भागयं, ललाट चंद्र लागयं ॥ ४२१ ॥

धरै^५ सु सीस गंगयं, कपूर गौर अंगयं ।

भुवंग^६ संग फुंकरै, सु नीलकंठ हूँ करै ॥ ४२२ ॥

गणं गणेश सांबुयं, कि वीरभद्र जांबुयं ।

प्रसीद नाथ वेगयं, करा कृपा सु मे जयं ॥ ४२३ ॥

सहाय नाथ किजिए, अभय सुदान दिजिए ।

अलावदीन आइयं, मलेच्छ^७ संग ल्याइयं ॥ ४२४ ॥

सुलक्ख बीस सातयं, चढ़े सु कुपि^८ गातयं ।

प्रताप तेज आपके, मिटे कुकर्म पाप के ॥ ४२५ ॥

सरन्न शेख आययं, करा सहाय पापयं ।

१ कीन । २ अग्नि । ३ गरै । ४ भवा सुभाव भागयं ।

५ ढरै । ६ भवंग । ७ मलेच्छ वंश भाइयं । ८ कोपि ।

उमा सु नाथ नाथयं, गहो सुमोर हाथयं ।
छुटंत लाज गढ्ढयं, सरन्नपन्न द्रढ्ढयं ॥ ४२६ ॥

दोहरा छंद

शिव स्वरूप उर धारि कै, मूँदि^१ नयन धरि ध्यान ।
यह अस्तुति नृप की सुनी, भय प्रसन्न बरदान ॥ ४२७ ॥
कहै संभु हम्मीर सुन, कीरति जुग जुग तोर ।
चौदह वर्ष जु साहि सौं, लरत विन्न नहि श्रीर ॥ ४२८ ॥
बारै अरु^२ द्वै बरष परि, सुदि असाढ़ सुनि सोइ ।
एकादसी जु पुष्य कौ, माकौ पूरण होइ ॥ ४२९ ॥
यह साको अरु जस अमर, फवै तोहि कलि माँहि ।
छत्रो को जुग जुग धरम, यह समान कछु नाहि ॥ ४३० ॥
हरष सहित^३ हम्मीर तब ईश चरण दिय सीस ।
तब मंदिर तै^४ निकसि कै, करी जुद्ध कौं रीस ॥ ४३१ ॥
शंकर कछौ हमीर सों, सुनहु राव धुव साषि ।
सहस सूर तेरे जहाँ, परें मलेच्छ सु लाष ॥ ४३२ ॥

चौपाई छंद

राव हमीर दिवान कराए ।
मंत्री मित्र बंधु सब आए ॥
सूर वीर रावत भट^४ वंके ।
स्वामि धर्म तन मन तिन हंके ॥ ४३३ ॥

काछ बाछ दढ़ बज्र सरीरं ।
 माया मोह न लोभ अधीरं^१ ॥
 अमृत बचन सबन तै^२ भषे^३ ।
 जाचत आपुन प्रान न रषे^४ ॥ ४३४ ॥
 नाना^५ बिरद बंदि बिरदावै^६ ।
 लक्ख लक्ख के पटा जु पावै^७ ॥
 काको बीर राव रणधोरह ।
 करगौ जुहारे राव हमीरह ॥ ४३५ ॥
 आयस होय करो^८ मैं सोई ।
 देखो राव हाथ^९ मम जोई ॥
 काकै कन्ह करी जस आगै ।
 कनवज कमध्वज सो^{१०} रँग पागै^{११} ॥ ४३६ ॥
 कहै हमीर धीर सुनि बानी ।
 तुम जु कहो सो मोहि न छानी ॥
 अब गढ कोट हसम पुर जेते ।
 तुम रक्तक हम जानत तेते ॥ ४३७ ॥

दोहरा छंद

मैं पहलै पतिसाह सो^१, करी बात^२ अब टेक ।
 सो अब चौरै^३ साहि सो, करो जंग अब एक ॥ ४३८ ॥

१ अभीरं । २ भाषे । ३ राषे । ४ बाना । ५ हथ ।
 ६ सिर पागै । ७ वत्त । ८ चौरह ।

त्रोटक छंद

चढ़िए करि कोप हमीर मनं ।
 करि दिढ़ सगढ़ सन्हारि पनं ॥
 बहु तोप सुसिद्ध सँवारि^१ धरी ।
 बुरजैं बुरजैं धर धूम परी ॥ ४३६ ॥
 बहु कंगुर कंगुर बीर अरे ।
 सब द्वारन द्वारन धोर^२ परे ॥
 सब ठौरन ठौरन राखि^३ भरं ।
 चढ़िए गजपै चहुवान नरं ॥ ४४० ॥
 बहु बीर हमीर सु संग चढ़े ।
 गजराजन उपपर द्वंद बढ़े ॥
 करि डंबर अंबर सीस लगे ।
 मनु सोवत धीर सबीर जगे^४ ॥ ४४१ ॥
 बहु चंचल बाजि करत खुरी ।
 तिन उपपर पण्णर सोज परी ॥
 नर जान जवान लसै^५ दल मैं ।
 रन मैं उनमत्त लसै^५ बल मैं^५ ॥ ४४२ ॥
 बहु दुंदुभि बज्जत^६ घोर घनं ।
 निकसे तब राव करअ रनं ॥

१ सँभार । २ बीर धरे । ३ रक्खि । ४ गजे । ५ नर
 धीर मनां दरसै बल मैं । ६ बाजत ।

बहु बारन बारन बीर कढ़े ।
 गज बाजि सु सिंदन जान चढ़े ॥ ४४३ ॥
 लखि साह सनमुख कोप कियं ।
 रणथंभ चहूँ दिसि घेरि लियं ॥
 मिलि राव हमीर सु साहि दलं ।
 धिफरे वर बीर करंत हलं ॥ ४४४ ॥
 सर छुटत फुटत पार गजं ।
 सु मनो अहि पच्छय मध्य रजं ॥
 तरवार बहूँ कर पानि बलं ।
 धर मध्य धरै धर हक्क^१ खलं ॥ ४४५ ॥
 मुख अग^२ बढै रणधीर लरै^३ ।
 तिनसो पतिसाह के बीर अरै ॥
 अजमंत महुम्मद इक अली ।
 तिन संग असीसु सहस्त चली ॥ ४४६ ॥
 तिहिं द्वंद अमंद बिलंद कियो ।
 रणधीर महा रण भेलि लियो ॥
 करि कोप तबै रणधीर मनं ।
 वर बैन कहै पन धारि घनं ॥ ४४७ ॥
 महिमंद^३ अली मुख आय जुरयो ।
 दुहुँ बोर तहाँ तब जुद्ध करयो ॥

अजमंत कमान लई कर मैं ।
 रणधीर कै तीर कल्यौ डर मैं ॥ ४४८ ॥
 रणधीर सुकोपि कै साँगि लई ।
 अजमंत कै फूटि कै पार गई ॥
 परियो अजमंत सु खेत जबै ।
 महमंद अली फिरि आय^२ तबै ॥ ४४९ ॥
 रणधीर सु कोपि के बैन कहै ।
 कर देखि अबै मति भुल्लि^३ रहै ॥
 किरवान सु धीर के अंग दई ।
 कटि टोप कल्लू सिर माँझ^४ भई ॥ ४५० ॥
 तब कोप कियो रणधीर मनं ।
 किरवान दई महमंद तनं ॥
 परियो महमंद अमंद बली ।
 तब साहि कि सैन सबै जु हली ॥ ४५१ ॥
 लुथि^५ लुथि परै बह बोर अरै ।
 बहु खंजर पंजर पार करै ॥
 धर सीस परै करि रीस मनं ।
 कर पाँव कटै बहु कीन पनं ॥ ४५२ ॥
 यहि भाँति भिरे चहुवान बली ।
 मुरि साह की सेनि सु भगि चली^६ ॥

बलखी जु परे जु हजार असी ।

लखि^१ कालिय अट्ट सु हास ईसी ॥ ४५३ ॥

चहुवान परे इक जो सहसं ।

सुरलोक सबै बर बीर बसं ॥ ४५४ ॥

दोहरा छंद

असी सहस^२ बलखी परे, महमद अजमत खान ।

तहाँ राव रणधीर के, परे सहस इक ज्वान ॥ ४५५ ॥

भजी^३ फौज सब^४ साह की, परे मीर दोइ बोर ।

करे याद पतिसाह तब, गज्जनि गढ़ के पीर ॥ ४५६ ॥

चौपाई छंद

भजिय^५ फौज साह की जवही ।

फिरो फिरो बानी कह सबही ॥

तहाँ साह करि कोप सु बुल्लिव^६ ।

समर भुम्मि अब छंडि सुचल्लिव ॥ ४५७ ॥

सरवसु^७ खाय भोग करि नाना ।

अबै परम प्रिय लागत^८ प्राना ॥

समर विमुख तै^९ जानव जोई ।

हनूँ आप कर तजों न सोई ॥ ४५८ ॥

सुने साह के कोपि^६ सु बैनं ।

फिरी सैन इम मत्र सु एनं^{१०} ॥

१ ललि । २ हजार । ३ भगी । ४ जव । ५ भागी । ६ बुल्लिय ।

७ सर्वस्व । ८ लगत । ९ कोप । १०, फिरी सैन इक मत्त सु एनं ।

बखतर पक्खर टोप सु सज्जिय ।

जुरे जंग बहु मीर सु गज्जिय ॥ ४५८ ॥

दोहरा छंद

बाँदित^१ खाँ पतिस्याह सों, करी सलाम सु आय ।

हजरत देखहु^२ हाथ^३ मम, कैसी करूँ^४ बनाय ॥ ४६० ॥

पद्धरी छंद

करि^५ कोप बादित खाँ जुरे^६ जंग ।

मनो प्रलै पावक उठे अंग ॥

गुंजत निसान फहरात धुज्ज ।

जुटि जिरह टोप तन नैन सज्ज ॥ ४६१ ॥

किए हुकम साह तन मैं रिसाह ।

किन्हों सु जंग फिर बीर आइ ॥

छूटंत तोप मनु बज्रपात ।

जल सुक्कि धरा छुटि गर्भ जात ॥ ४६२ ॥

बहु बान चलत^७ दोउ ओर घोर ।

अररात^८ अमित मच्यो सु सोर ॥

भए अंध धुंध सुज्झै न हथ्थ ।

बीर चहुवान तहँ करि अकथ्थ ॥ ४६३ ॥

१ बाँदितपां । २ पक्खहु । ३ हाथ । ४ करो । ५ करि कोप
जुरे बादित्य जंग । ६ जुराँयो, जुरिग, जुरिव । ७ छुटि । ८ अर्राट
अमित मचि महासोर ।

रणधीर उतै बाघन्ति खान ।

बजरंग अंग जुट्टे सु पान ॥

हज्जार बीस बादित्य साथ^१ ।

सब जुरे आय रणधीर हाथ^२ ॥ ४६४ ॥

बज्जंत सार गज्जंत अब्भ ।

रणधीर सथ्य आये स सब्भ^३ ॥

करि क्रोध जोध बाहंत सार ।

दूटंत अंग फूटंत^४ पार ॥ ४६५ ॥

करि खेल सेल दोउ^५ ओर बीर ।

बाहंत बीर किरवान धार ॥

हज्जार बीस बद्धत साह^६ ।

धर परे बीर करि अकथ गाह ॥ ४६६ ॥

रणधीर मीर दोउ भिरे आइ ।

बाधत्त गाहि तब रोस बाइ ॥

लगी सुढाल भू दूटि^७ ताम ।

फिर दई सीस किरवान जाम ॥ ४६७ ॥

लगी सु सीस धर परगौ जाय ।

दुई दुक्क^८ होय भुमि अद्ध काय ॥ ४६८ ॥

१ सथ्य । २ हथ्य । ३ सब्भ । ४ दूटंत, फुटंत । ५ दोऊ,
दुहुँ । ६ साथ । ७ टुटि, टुटि । ८ टूकि, टुकि ।

देहरा छंद

भयो सोच जिय साह कै, जीतिय^१ जंग हमीर ।
 बादित खाँ से रन परे, बीस हजार सु बीर ॥ ४६८ ॥
 महरम खाँ कर जोरि कै, करै अर्ज तिहिं बार ।
 लै कर शेख हमीर अब, किमि मिल्यो यहिं बार ॥ ४७० ॥
 गही तेग तुम सौं अबै, हठ नहिं तजै हमीर ।
 सेख देय मिछै नहीं, पन सच्चो^२ बर बीर ॥ ४७१ ॥

छप्पय छंद

कर कुरान गहि साह सीस साहिब का नायो^३ ।
 गढ़ दिस^४ दल चहुँ ओर घेरि रज अंबर छाया ॥
 देखि अलावदि साह कहै दल बहल भारी ।
 अब हमीर की अदलि आय पहुँचीह सुमारी ॥
 महरम्म खान इम उच्चरै अदलि हाथ^५ साहिब तनै ।
 का होनहार हूँहै अबै को जानै कैसी बने ॥ ४७२ ॥

देहरा छंद

हजरति अपने इष्ट पर, पावक जरत पतंग ।
 यह हमीर कबहुँ न तजै, सेख टेक रणथंभ^६ ॥ ४७३ ॥
 साह दसौं दिसि जित्ति कै, अब आए^७ रणथंभ ।
 कहै राव^८ रणधीर सौं, जुरो सूर रण रंग ॥ ४७४ ॥

१ जित्यो, जित्यउ, जीत्यो । २ साँचौ । ३ नाये । ४ देसल ।
 ५ हत्थ । ६ गढ़ जंग । ७ आइय । ८ हम्मीर ।

अप्पन धर्म न छंडिए, कहूँ बात रणधीर ।

निसि बासर अब साह सों, किजिय जंग हमीर ॥ ४७५ ॥

छप्पय छंद

को कायर को सूर चौस^१ बिन दृष्टि न आवै ।

बिन सूरज की साखि सार छत्रो न समावै ॥

बीर गिद्ध^२ अरु संभु सकल फलहारी जेते ।

घर पर धरै^३ न पाँव रैन में दिनचर जेते^४ ॥

इम कहै राव रणधीर सों मैं अधर्म नाहिन^५ कहूँ ।

अब अलावदी साह सों रैन सार कबहूँ न गहूँ ॥ ४७६ ॥

दोहरा छंद

घाटी घाटी साह के, माटी मिलत अमीर ।

राव जंग दिन में करै, राति लड़ै रनधीर ॥ ४७७ ॥

तारागढ़ के पीर को, करै याद पतसाह ।

एतभँवर की फते^६ दे, कदमँ आऊँ चाह ॥ ४७८ ॥

छप्पय छंद

जबहीं मीरा सयद साह की मदत पठाए ।

सिर उतारि कर लिए राव परि सम्मुख धाए ॥

जब हमीर की भीर च्यारि सुर सुद्ध सु आए ।

... .. ॥

गणनाथ शंभु दिन कर अबर छेत्रपाल मन रजिए ।

रणधंभ खेत दुहूँ ओर सों बीर पीर दुव सजिए ॥ ४७९ ॥

१ दिवस । २ गृद्ध । ३ तेते । ४ नहीन । ५ विजय ।

छंद भुजंगप्रयात

लरै नो सयहं रणथंभ^१ देवा ।

करै क्रोध भारी पिलै हर्ष भेवा ॥

गरज्जंत^२ घोरंत आतंक भारी ।

घनै घोर^३ वर्षत वर्षा कगारी ॥ ४८० ॥

कभू हल्लवै भुम्भि गज्जंत वीरं ।

कभू घोर अंधार वर्षत पीरं ॥

गणनाथ हथ^४ लिए तिलि फसी^५ ।

पिनाकी पिनाकं किए आप दर्सी ॥ ४८१ ॥

धरै मुद्गरं हथ^६ भैरव अमानो ।

इसे दैव जुटै सु कट्टे अमानो ॥

इतै पीर हजरत के सथ पिल्ले ।

अबदल्ल एकं^७ हुसैनं सुमिन्ते ॥ ४८२ ॥

रहीमं सयद^८ सुलतान जक्की ।

अहमद कानीर सूलं सु मक्की ॥

इतै बीर जुटै सु कट्टे पुरानं ।

भयो जुद्ध भारी सु भूले^९ कुरानं ॥ ४८३ ॥

परे खेत नो सैद^८ दट्टे धरत्री ।

हैसे शंकरं भैरवं की करत्री ॥

१ रणथंभ । २ मर्जंत, गज्जंत । ३ घाय । ४ पसी ।

५ हाथ । ६ इकं । ७ भुल्ले । ८ सयद, सह ।

परे पीर यूँ नौ रसूलं सु अल्लो ।

परगौ पीर दूजो कुतब्बं सु चल्ली ॥ ४८४ ॥

परगौ जो हुसैनं करगौ जुझ^१ भारी ।

परे हेरि हिम्मत्ति अल्लो सुधारी ॥

सयहं सुलत्तान आयो जु मक्का ।

अदल्ली परे और तुक्की सु बंका ॥ ४८५ ॥

परगौ दूसरो जो रसूलं सु खेतं ।

तबै बादस्याहू भयो सो अचेतं ॥

परे मीर नौ सैद जानंत साहं ।

लरे अट्ट वीरं हटै बैन काहं ॥ ४८६ ॥

अजंमत्त भारी हमीरं सु जानी ।

तबै कुच्च किन्नो दरै छाड़ि कानी ॥

उलट्टे परं जाय किन्नो दिवानं ।

जुरे खान जेते सु तेते अमानं ॥ ४८७ ॥

वजीरं अमीरं सबै खान बुल्ले ।

सबै बात मंत्रं सु मंत्री सु खुल्ले ॥ ४८८ ॥

दोहरा छंद

महरम खाँ उज्जोर तब, अरज करी सब खेलि^२ ।

लख बलखी उमराव तो, सकै भए हरोल ॥ ४८९ ॥

अरु बकसी के बचन सुनि, साह कियो^३ अति सोच ।

निबही राव हमीर की, गिनो हमै सब पोच^४ ॥ ४९० ॥

महिमा साह हमीर गढ़, ये तीनो^१ साबूत ।
बाजी रही हमीर की, मैं कायर जु कपूत ॥ ४६१ ॥

छप्पय छंद

महरम खाँ कर जोरि साह^२ कोँ ऐसै^३ भाख्यौ ।
इक हिकमत तुम करो नीक जानो तो राख्यौ^४ ॥
महल^५ छाड़ि करि फते बहुरि गढ़ सेँ जुध^६ किजिय ।
तेरि छाड़ि गणधीर मारि कै^७ पकरि सु लिजिय^८ ॥
आतंक संक गढ़ मैं परै मिलै राव हूठ छंडि^९ कै ।
गहि सेख देय मिलि सुतवै करौं कुच जब उलटि कै ॥ ४६२ ॥

चौपाई छंद

कहै साह महरम खाँ सुनियौ ।
यह मत खूब किया तुम गुनियौ ॥
छाँणि दरा को प्रथम दिली^५ जे ।
चंद रोज महाँ फतह जु कीजे^६ ॥ ४६३ ॥

दोहरा छंद

महरम खाँ पतसाह कोँ, हुकम पाय तिहि बार ।
सकल सेन तजबीज करि, घेरी छाड़ि हकारि ॥ ४६४ ॥

छंद बियक्खरी

कोप पतिसाह गढ़ छाड़ि लगै ।
सहस^{१०} सत्र तीन नीसान बगै ॥

१ दोऊ । २ तबै हजरति सेँ भाख्यौ । ३ रक्खौ । ४ पहलै ।
५ जंग कीजे । ६ लीजे । ७ छाड़ि । ८ दिलिज्जे, दिलिजिय ।
९ किजिय । १० तीन सहस नीसान दल माहि वगै ।

सहस^१ दस सात आरब्ध छुट्टै ।

गरज गिरि मेरु पाषाण फुट्टै ॥ ४८५ ॥

उठत गुब्बार महि तोप लग्गै ।

गए बन छंडि^२ मृग सिंह भग्नै ॥

लाख^३ पचोस दल ओर फेर्यौ ।

यह भांति पतिसाह गढ़ छाड़ि घेर्यौ ॥ ४८६ ॥

कहै पतिसाह नहिं बिलम^४ किज्जे ।

चंद दिन^५ बीचि गढ़ छाड़ि लिज्जे ॥

कहै रणधीर मन धीर धरिए ।

आय चहुवाँन^६ सफजंग^७ करिए ॥ ४८७ ॥

निस्सान^८ सों सह^९ सुंदर सुबज्जै ।

राव रणधीर आयुद्ध^{१०} सज्जै ॥

बोर रस राग सिंघूर बज्जै ।

सहस इकतीस दल संग लिज्जै^{११} ॥ ४८८ ॥

सहस दस सूर कुल तेग खेलै^{१२} ।

अप्प जिय रक्षिपरमाल^{१३} पिल्लै ॥

यही^{१४} भांति रणधीर चौगान आए ।

उड़ि जमीं गर्द असमान छाए ॥ ४८९ ॥

१ दो सहस आरवौ तेज छुट्टे । २ छाड़ि । ३ लाख । ४ विल-
वन्न, विलंब । ५ रोज । ६ चौगान । ७ सफजंग । ८ नीसान सो
साज सुर सह गज्जै । ९ शब्द । १० आयुद्ध । ११ सज्जै । १२ खिलै ।
१३ परमार । १४ इस ।

अबदुल्ल^१ कीरम्म^२ पतिसाह पंले^३ ।

मीर रणधीर चौगान खिल्ले ॥

बहै वान किरवान^४ औ चक्क^५ चल्लै ।

रणधीर कह सूर तुम होहु भल्लै ॥ ५०० ॥

साह सों सूर संमुक्ख जुरिए ।

हवस के मीर दस सहस परिए ॥

टुट्टि सिर मीर धड़ पहुमि लण्घै ।

पंच सत सूर उड़ि गिद्ध^६ भण्णै ॥ ५०१ ॥

राव रणधीर अप्पन^७ सिधारे ।

अबदुल्ल करम खाँ पहुमि पारै ॥

साहि रणधीर सफजंग^८ जुरिए ।

साह दल उलटि दो कोस परिए ॥ ५०२ ॥

कहै रणधीर नहिं विलंम किज्जै^९ ।

वीति चंद रोज गढ़ छाड़ि लिज्जै^{१०} ॥

गढ़ कोट हू भाँति नहिं हृष्ट्य^{११} आवै ।

यूं ही पतिसाह दल क्यों खिसावै ॥ ५०३ ॥

दोहरा छंद

बर्ष पंच^{१२} गढ़ छाड़ि को, नहिं संवत् पतिसाह ।

द्वादस वरष रणथंभ सों, निधरक लरि अब साह ॥ ५०४ ॥

१ अबदुल, अबदुल्ल । २ कीरम, करीम, करीम । ३ पिल्लै ।

४ कैयार । ५ चक्क । ६ गिर्ज । ७ आपन । ८ सफजंग ।

९ कीजे । १० लीजे । ११ हाथ । १२ पाँच ।

छप्पय छंद

धनि सु राव रणधीर साह मुख आप सराहै ।
 मुभ दिसि सम्मुख आय कोप करि सार समाहै ॥
 साह बचन इम कहै मीर महरम खाँ सुनिजे^१ ।
 जीति^२ जंग रणधीर धन्य वह राव सुभनिजै ॥
 पतसाह राडि सफजंग^३ की मनै करिय आपन^४ सबै ।
 चहुँ ओर जोर उमराव सब किए मोरचा दढ़ अबै^५ ॥५०५॥
 जबै^६ राव रणधीर कहै हम्मीर सुनिजै^७ ।
 सबै^८ हिंद को साथ बेलि रणथंभ^९ सु लिजै ॥
 लिखि फर्मानह^{१०} राव बंश छत्तोस बुलाए ।
 जुरे जंग चौगान उमंग दल बदल छाए ॥
 कर जोरि सबै हाजिर भए^{११} राव बचन विधि या^{१२} कहै ।
 मै गही तेग पतिसाह^{१३} सो घरि जाहु जौन जीवो चहै ॥५०६॥
 कह काको रणधीर राव सुन बचन हमारे ।
 अबै छंडि^{१४} कित जाहिं^{१५} खाय करि निमक तिहारे ॥
 अलीदीन सों जुद्ध छंडि गढ़ चौर मंडौ
 जिती साहि की सेन मारि खग खंड विहंडौ ॥
 चाटू^{१६} सुनीर या वंश का अकथ गश्य^{१७} ऐसी करूँ ।
 रवि लोक भेदि भेटूँ सुभट अप्प^{१८} सीस हर हिय धरूँ ॥५०७॥

१ सुनिए । २ जित्ति । ३ सफजंग । ४ अप्पन । ५ सबै ।
 ६ जब सुराव । ७ सुणीजै । ८ सबै । ९ राखिरणथंभ । १० फुर-
 माना । ११ अहै । १२ हम । १३ हजरति । १४ छाड़ि ।
 १५ जाय । १६ चाटूँ । १७ गाय । १८ आप ।

दोहरा छंद

कहै राव हम्मीर सौँ, मंत्र एक रणधीर ।
जमीति गढ़ चित्तौर की, अजहुँ न आइय धीर ॥ ५०८ ॥
लिखि फर्मान हम्मीर तब, पठए गढ़ चित्तौर ।
बंछि^१ खान बल्हन^२ कुँवर, हर्ष कीन नहिँ थोर ॥ ५०९ ॥

चौपाई छंद

हर्षे उभय कुँवर चहुआनं ।
चतुरंग के तुरंग^३ सजि आनं ॥
सोला सहस चमूँ सजि सारी ।
सजे खाँन बल्हन^४ सी भारी ॥ ५१० ॥
सहस तीन^५ कमधज सु जानैँ ।
सहस अट्ट^६ चहुवान बखानैँ ॥
सहस पंच पम्मार^७ अमानैँ ।
सोला सहस सजे करिवानैँ^८ ॥ ५११ ॥

मोतीदाम छंद

मिले तब आय कुमार सु दोय ।
हमीर सुचाव कियो बहु जोय ॥
बढ़यो हिय हर्ष दुहूँ^९ उर सोय ।
कहै^{१०} तब बैन सु राव सु होय ॥ ५१२ ॥

१ बाँछि । २ बाल्हन । ३ चतुरंग । ४ बाल्हन । ५ तीस ।
६ आठ । ७ पच्चार पै आने । ८ किरवाना । ९ दहूँ ।
१० किया सु जुहार मिले वर दोय ।

कियो सनमान सुराव अपार ।

मिलंत कुँवार^१ दयो सिर भार ॥

रख्यौ तुम सेख भए जग धन्य ।

रहै नहि कोय सदा जग अन्य ॥ ५१३ ॥

रहै जग कितिय^२ निति अभंग ।

सदा यह देह कहै^३ छिनभंग ॥

जिते हम सेवक ज्यों अब ठढूढ ।

रहो निहचित्त अभै यह गढूढ ॥ ५१४ ॥

करै हम जंग लखो अब हथ^४ ।

उठे दुहुँ बीर कही यह गथ ॥

चढ़े चतुरंग कियो तन काप ।

मने अरुनोदय भान सु ओप ॥ ५१५ ॥

बजे रणतूर सु भेरि सबद ।

भए पद गामुख बीर सु सद ॥

चढ़े कुँवरेस तबै चतुरंग ।

बढ्यो हिय हर्ष करै रणरंग ॥ ५१६ ॥

कहै तब खान सु बालहन सीह ।

करे सफजंग अवैदल^५ वीह ॥

रतन कुमार रखो गढ़ ओर ।

नरबल^६ ग्वालिर ओर चितोर ॥ ५१७ ॥

१ कुमार । २ कीरति । ३ नहीं । ४ हाथ । ५ अवहल ।

६ नरवर, नरबबर ।

नठै तब अन्न करो सफजंग ।

तजो मति टेक लरो^१ अनभंग ॥

असी सुनि बैन हमीर सुभाय ।

भरे^२ जल नयन रहे मुरभाय ॥ ५१८ ॥

कही^३ तब कौर नहीं थिर कोय ।

चलै गिर मंरु नहीं थिर सोय ॥

मिले सुरलोक ससोक सकौन ।

सुनी यह राव रहं गहि मौन ॥ ५१९ ॥

गए रनबास जहाँ दोउ^४ वोर ।

कियो परनाम जुहार सुधीर ॥

सबै रनबास भरे जल नैन ।

कही^५ तदि आसमती यह बैन ॥ ५२० ॥

करो तुम उच्छह है यह^६ वार ।

कहं तदि^७ बैन हँसे जु कुमार ॥

धरो तुम सीस हमारे जु^८ मोर ।

लरै^९ सिर सेहर बांधि^६ सजोर^{१०} ॥ ५२१ ॥

बँधौ तब मोर कुमारन सीस ।

दर्इ बहु भाँतिन आसु असीस ॥

कियो बहु हर्ष कुमार अपार ।

गए हर मंदिर सो तिहिं बार ॥ ५२२ ॥

१ लरो जु अनभंग । २ डरे । ३ कहे । ४ दुब । ५ कहे ।
६ बुह । ७ तब । ८ सो । ९ बंधि । १० मोर ।

गनेसुर शंकर पूजि^१ सुभाय ।

करै बहु ध्यान गहे जब^२ पाय ॥

चढे बरबीर बढ्यो हिय चाव ।

बजे बहु बाजि^३ निसानन घाव^४ ॥ ५२३ ॥

गजे असमान धरा बहु भाय ।

गजे घनघोर घटा मनु छाया ॥

तुरंग अनेक सुफेरत सूर ।

बनी तिन उपपर पष्पर पूर ॥ ५२४ ॥

भलककत नूर चमकत सेल ।

चढे मुख ओप^५ बढे मुख मेल ॥

उडै^६ रज अंबर सुझन न भान ।

हँसे हर देखत^७ छुटिय ध्यान ॥ ५२५ ॥

चली सँग अच्छरि जुगनि ताम ।

मिली बहु पंखनि^८ गिद्धनि जाम ॥

मिले बहु भूचर खेचर हूर ।

चले पल चारिय भूत सुभूर ॥ ५२६ ॥

करे सु जुहार हमीरहिं ध्याय^९ ।

करो यह बात परस्सि^{१०} सुपाय ॥

१ पुजि । २ तव । ३ वाद्य । ४ हाव । ५ नूर । ६ उठी ।
७ पेखत, पिखवत, दिप्पत । ८ पंखनि । ९ धाय । १० पस्सि,
परस्सिय, परसिय ।

मिले भव आनि^१ सुनो बहुवान ।

करै कल रीति तजै नहिं बान ॥ ५२७ ॥

तजौ^२ धन धाम रु लोभ सु मोह ।

धरौ मनु टेक सरअ सुजोय ॥

इती कहि सीस नवाय हमीर ।

कियो रणथंभहि बंदन^३ धीर ॥ ५२८ ॥

चले सनमुख उभै कुमरेस ।

सजे चतुरंग तनय करि रेस ॥

जहाँ पतिस्त्राह अलावदि और ।

चली^४ बर बीरति^५ बाँधि सुमैर ॥ ५२९ ॥

दोहरा छंद

करि असवारी कुमर दोउ, उतरे पैलि सु छाँन ।

डेरा करे उछाह जुत, बजि नोबति नीसान^६ ॥ ५३० ॥

सुनि नोबति के नाद^७ तब, बहु उछाह गढ़ जान ।

तब अलावदी हसम दिसि, चाहत भयो^८ निदान ॥ ५३१ ॥

बोलि खान सुलतान तब^९, मसलाति करी जु^{१०} साहि ।

गढ़ में कहा उछाह अति, कहा सबब यह आहि ॥ ५३२ ॥

है यह राव हम्मीर के, लघु भय्या^{११} के पूत ।

लरन^{१२} काज^{१३} इन सेहरो, सिर बाँधयो मजबूत ॥ ५३३ ॥

१ मिलै भव आनि । २ तजै । ३ चंदन । ४ चले, चढ़े ।

५ वीरसु । ६ अप्रमाण । ७ नह । ८ भयो । ९ सब । १० सु ।

११ आता । १२ कौन । १३ कज ।

भइय संक पतिसाह उर, कीनो बहुत विचार ।
जौ न सिंह के मुख चढ़ै, सो भिल्लै इन सार ॥ ५३४ ॥

चौपाई छंद

कहै वजीर साह सुनि बत्तं ।
मीर अरब्विय^१ जॉनि सु तत्तं ॥
मर्कट बदन^२ सूकर सम^३ कानं ।
द्रग मंजार बेस खल^४ जानं ॥ ५३५ ॥
तुम^५ सोँ मत प्रथिवराजसु अगै^६ ।
गढ़ गज्जनि आए^७ गहि खगै^८ ॥
तुमहिं दिल्ली के तख्त बसाए^९ ।
गोरीसा के भए सहाए ॥ ५३६ ॥
बे^{१०} दोउ कुमर पकरि अब लावै ।
सन्मुख होइ तो भारि गिरावै^६ ॥
सुनि वजीर के बचन सुहाए ।
मीर जमालखान बुलवाए ॥ ५३७ ॥
कहै साह सुनि मीर जमालं ।
है यह काम तुम्हारै हालं ॥
आगै तुम गहियो प्रथिराजं ।
त्यां^{१०} तुम गहो कुँवर दोउ आजं ॥ ५३८ ॥

१ आरबी । २ बदंत, मुख । ३ इव । ४ वपुख । ५ तिहि
सामत । ६ लाये । ७ बैसाये, बैठाये । ८ वै दुइ कुमर पकरि गहि
ल्याऊँ । ९ गिराऊँ । १० तिम

छप्पय छंद

सुनि जमाल खाँ मीर हथ्य धरि मुच्छ सँवारिय ।
 पाँव परसि कर जोरि कवन बड़ काज निहारिय^१ ॥
 जो आयुस अनुसरोँ सकल हिंदू गहि लाऊँ ।
 सम्मुख गहै^२ जुसार मारि तिहिँ धूरि मिलाऊँ ॥
 इम^३ कहि सलाम कीनी^४ तुरत सज्जि सथ्य सब^५ अप्पबल ।
 सजि^६ कवच टोप कर खग गहि उभै ओर किन्निय सुहल^७ ॥ ५३६ ॥

भुजंगप्रयात छंद

इतै^८ कुमर^९ चित्रंग^{१०} के जंग जुटै ।
 उतै^{११} मीर आरब्ब के बीर छुटै ॥
 दुहूँ ओर घोरं निसानं सु बज्जं ।
 मनो पावसं मेघ घोरं सु गज्जं ॥ ५४० ॥
 दुहूँ ओर खंडं प्रचंडं सुभारी ।
 छुटे नाल गोला बंदूकं सुभारी ॥
 भयो सोर घोरं धुँवा घोर घोरं ।
 गई सुद्धि सुज्झै नहीं^{१२} नैन ओरं ॥ ५४१ ॥
 करै^{१३} सेल खेलं महाबीर बंके ।
 फुटै अंग अंगं करै दोय हंके ॥

१ निकारिय । २ गहँ । ३ यह । ४ किन्नी । ५ सह ।
 ६ सज्जे । ७ बज्जे सुबीर सिंदूर, (सिंधुर) बदन उभै ओर किन्निय
 सुहल । ८ कौर । ९ चतुरंग । १० मही ।

बहै तेग अंगं करै टुक दाई ।

हँसी कालिका देखि कौतुक सोई ॥ ५४२ ॥

बहै २ जम्म दंडं करै बाहु जोरं ।

कहै ३ अंत अंतं कहूँ सीस तोरं ॥

कहूँ हथ मथं परं बार बंके ४ ।

उठै रुंड मुंडं करै जोर हंके ५ ॥ ५४३ ॥

उतै मीर जामील ध्यायाँ हँकारं ।

इतै खान धायाँ भिरगौ इक बारं ॥

उतै मीर तोरं चलायाँ हँकारो ।

लग्यो बाजि कै सो भयो बारि पारो ॥ ५४४ ॥

परगौ खान को बाजि फुटौ सु अंगं ।

चढ़े और बाजी करगौ फेरि जंगं ॥

दई खान जम्मील ६ कै अंग बच्छाँ ।

परगौ भुम्मि मीरं सुतो आय मुच्छाँ ॥ ५४५ ॥

दोउ सैन देखै भिरं बोर दाई ।

भए लथ वथं कुमारं सु सोई ॥

परगौ जोर भारो कुमार सु जान्यौ ।

तबै राव हम्मीर उपर सुठान्यौ ॥ ५४६ ॥

नियो बोलि संखोदरं सूर सोऊ ।

करो ऊपरं ७ जाय कुमार दोऊ ॥

१ दिख पिख । २ चहै । ३ गहै । ४ बक्के । ५ हक्के ।

६ जम्माल । ७ उपरं ।

महावीर^१ अज्जान वालगु सूरं ।
 महायुद्ध जानै इतो बै करूरं ॥ ५४७ ॥
 चले सूर संखोदरं खेत आए ।
 उतै आरबीसेत द्वै लख धाए ॥
 उडै बान गोला गजं वाजि फुटै^२ ।
 बहै बान कम्मान ज्यो मेघ उटै ॥ ५४८ ॥
 धरै^३ आयुध^४ बीर सौं बीरबुल्लै ।
 परै सीस भू मै^५ किती सीस भल्लै ॥
 कहै खान कुम्मार बैन हँकारी ।
 सुनो सर्व मथ्यं^६ करे जुद्ध भारी ॥ ५४९ ॥
 रहै नाम लोकं महा मुक्ति मिल्लै ।
 रहै नाहि कोई सदा आय^७ मिल्लै ॥
 चलाए गजं कोपि^८ कुम्मार सोई ।
 उतं आरबी मीर जम्माल^९ होई ॥ ५५० ॥
 तवै बीर बालनसी कोप किन्नां ।
 महा^{१०} तेग जम्माल कै मथ्य दिन्नो ॥
 कट्यौ टोप ओपं लगी जाय मथ्यं ।
 तवै मीर बालन भय लुथ्य वथ्यं ॥ ५५१ ॥

१ महावीर २ अज्जान बाइ लघु सुसूरं । ३ दौड । ४ करै ।
 ५ आवचै । ६ भुम्मी । ७ सत्यम् । ८ आय । ९ कार्य्य ।
 १० जम्मीर । १० तवै तेग जम्मील के अंग दीनो ।

कटारं कुमारं चलायो^१ सु भारी ।

परगौ मीर जम्मील भू मै सु थारी^२ ॥

सबै सय्य जम्माल की कोपि धायो ।

तहाँ बालन मारि धरनी गिरायो^३ ॥ ५५२ ॥

तबै खान कुमार धायो^४ रिसाई ।

घनी सेन आरब्ब धरनी मिलाई^५ ॥

तबै बीर संखेदरं जंग^६ कीनो ।

किते आरबी खेत पारगौ नवानो ॥ ५५३ ॥

किते सेल खेल^७ करै^८ वार पारं ।

भभक्कै^९ घटै^{१०} वाव छुटै^{११} पनारं ॥

बहै तेग वेगं परं^{१२} सीस भारी ।

उड़े^{१३} घोर रुडं परै^{१४} मुंड कारी ॥ ५५४ ॥

परे दोय कुमार किन्नी अकथं ।

बरी अच्छरी सूर लोकं सु मथं ॥

परे मीर आरब्ब के पोत लक्खं ।

तहाँ हिंद की भीर सौरा सुभक्खं^{१५} ॥ ५५५ ॥

परे दो कुमारं महाबीर बंके ।

परे एक संखेदरं कीन हंके ॥

तहाँ आठ^{१६} हज्जार चहुवान जानं^{१७} ।

परे तीन हज्जार कमधज्ज मानं ॥ ५५६ ॥

१ लगायो । २ धारी । ३ मिलायो । ४ धाये । ५ गिराई ।
६ जुद्ध । ७ परी । ८ सुमथं । ९ अट्ट । १० ज्वानं ।

पँमारं परे पाँच हज्जार सोई ।

परे बीर सोला सहस्रं सुजोई ॥

परे स्वामि के कज्ज^१ कुम्मार दोई ।

सुनी राव हम्मीर जीते सु सोई ॥

भजे आरबी ज्यों बचे^२ जंग तेयं ।

कहै साह देखो सु हिंदू अजेयं ॥ ५५७ ॥

दोहरा छंद

परे सहस्र सत्तरि तहाँ, मीर अरबिय^३ संग ।

हय गय पाँच हजार परि, सत जमाल से अंग^४ ॥ ५५८ ॥

छप्पय छंद

तब सु राव रणधीर साहि पै^५ तेग समाही ।

समो^६ सु पहेँच्यो आय सु तो मिट्टै नहिं काही ॥

चढ़े खेत रणधीर साहि दोनूँ^७ बतराए ।

तजै न हठ हम्मीर कहा जो तुम सत^८ आए ॥

रणधीर राव इम उच्चरै समुझि साहि चित लिजिए ।

गढ़ रणथंभ हमीर को हजरति हट्ट न किजिए ॥ ५५९ ॥

१ काम । २ रहे । ३ अरबी । ४ तहाँ परे सोरह सहस्र
दुई कुँवर के संग । ५ साहि सौं । ६ संमत । ७ दोऊ ।
८ बतराए ।

कहै साहि रणधीर राव को किन समझावो ।
 करो राज रणथंभ सेख^१ को कदमों लावो ॥
 होनहार सो भई मिटे मेटी न मिटाई ।
 घटै हटै हठ राव तबै हमरी पतिसाई ॥
 नहिँ तजै राव हठ मै^२ तजौ कौन साह मो सौँ कहै ।
 यह प्रगट बत्त^३ संसार^३ महि भिरै^४ दोय एकै^५ रहै ॥५६०॥
 कहै राव पतिसाह सुनौ रणधीर अमानों ।
 इतो राज तुम करो जितो हम सौँ नहिँ छानों ॥
 ये^६ गढ़ चार सु धीर हुकुम किसके तुम पाए ।
 कबहुक^७ फिर रकेब सीस कबहु नहिँ^८ नाए ।
 गिरि सूरज पलटै पहुँचि कोटि बचन कह कोय किन ।
 सेख छाड़ि उलटौ फिरै यह कबहुँक सु होयहि न ॥ ५६१ ॥

दोहरा छंद

चढ़े साहि दल विपुल जब छंकिव^९ गढ़ रणधीर ।
 तब चहुवान रिसाय के, सन्मुख जुड़े^६ सु बीर ॥ ५६२ ॥

छंद त्रोटक

रणधीर चढ़े करि कोप मनं ।

सब सामत सुर सजे अपनं ॥

गजराजन उपर डुंबरयं ।

उछले^{१०} लगि बीर सु अंबरयं ॥ ५६३ ॥

१ सेख गहि कदमु लाओ । २ बात । ३ सारी मही । ४ इकै । ५ यह ।
 ६ कबहुन । ७ बनवाए । ८ छिक्किव । ९ जुटिग, जुटिय । १० उससे ।

बहु चंचल बाजि सु बगग^१ लियं ।

किय अगग^२ सु पैदल लाग कियं ॥

गढ़ तै^३ बहु भाँति^३ सु तोप चली ।

पतिसाह समेत सु कोप चली ॥ ५६४ ॥

रणधोर सु बंधन दुगग^४ कियं ।

करि मंगल विप्रन दान दियं ॥

रवि का परनाम सु कीन तबै ।

कर जोरि सु आयसु मांगि^५ जबै ॥ ५६५ ॥

अरु राव हमीर जुहार कियं ।

हर्षे^६ चहुवान सु मोद हियं^७ ॥

बहु दुंदुभि ढोल सुभेरि बजे ।

कसि आयुध सायुध बोर सजे ॥ ५६६ ॥

हलका करि बोर चढ़ै दल पै^८ ।

मनु राघव कोपि कियो खल पै^८ ॥

उत साहि हुकम्म कियो रिस मै^९ ।

सब सेन जु आय जुरयो छिन मै^९ ॥ ५६७ ॥

विफरे सब बीर सुधीर मनं ।

सब स्वामि सु धर्म सु कीन पनं ॥

दुहुँ ओर सु तोप सु कोप^८ छुटे ।

गढ़ कोट न रूँधत^६ पार फुटे ॥ ५६८ ॥

१ बाग । २ अग्र । ३ भाँतिन । ४ दुर्ग । ५ मंगि । ६ बरषे ।
७ दियं । ८ कोपि । ९ रुक्कत ।

बरपै धर आगि^१ सु धूम उठा ।

भर अंबर भुम्भ कराल बुठा ॥

बहु गोलन गोलन गोल परे ।

गजराजन सों गजराज जुरे^२ ॥ ५६८ ॥

हय सों हय पयदल पयदल सों ।

जुरिए बहु जोध महाबल सों ॥

बहु^३ बान दुहूँ दल माँभ परै ।

धर सीस कहूँ कर पाँव भरै ॥ ५७० ॥

बहु शोर अंधार सु घोर भयो ।

निसि वासर काहु न जानि^४ लयो ॥

कर कुंडिय^५ बोर कमाँन कसै^६ ।

गज बाजिन फुटत पार लसै^७ ॥ ५७१ ॥

बरपै मनु पावस बुंद अयं ।

बहु फुटत पक्खर^८ कंगलयं ॥

तहँ लागत^९ सेल सु पार हियं ।

मनु श्रोन पनारन तै^{१०} बहियं ॥ ५७२ ॥

लगि तेग करै^{११} दुव दुक्क^{१२} तनं ।

जिमि^{१३} सीस परै^{१४} तरबूज धनं ॥

तहँ साह सु सेन मुरकि चली ।

चहुँवान तवै करि कोप बली ॥ ५७३ ॥

१ अगि । २ भिरे । ३ चहुँवान । ४ ज्ञान । ५ कुंगिल ।

६ पाखर । ७ लगात । ८ टूक । ९ गिन ।

मुरकी पतिसाह तनी जो अनी ।

मुख^१ बात सबै पतसाह भनी ॥

करि कोप तबै पतिसाह कहै ।

मुहि जीवत सेन सु भजि^२ चहै ॥ ५७४ ॥

बकसी तब आय सलाम कियं ।

लख रुमिय अप्प^३ सु संग दियं ॥

रणधीर तबै सनमुख पिले^४ ।

बकसी करि कोप सु ओप मिले ॥ ५७५ ॥

गुरजै^५ रणधीर के सीस दई^६ ।

तिन ढल्ल सु उपरि^७ ओट लई^८ ॥

बरछा रणधीर सु अंग दियं ।

धर फुटि^९ सु बाजि^{१०} को पार कियं ॥ ५७६ ॥

हय^{११} तै^{१२} बकसी धर माँहि पर्यौ ।

तेहि^{१३} संग सु मीर पचास गिर्यौ ॥

इक रुमिय धीर सु आय जुर्यौ ।

किरवान लिए मन नाहिँ मुर्यौ ॥ ५७७ ॥

रणधीर इतै उत खात वलं ।

लथ वत्थ हुए भय देख दलं ॥

१ मुख वाह सुवाह सु साह भनी । २ भाजी । ३ आप ।

४ लिए । ५ ऊपर । ६ फुटि । ७ सवाज कै । ८ गज तै ।

९ तब सोंगि सुधीर सु मीर अर्यौ ।

रणधोर कटार सूँ पार कियो ।

बलखान सु तेग जु कंध दियो ॥ ५७८ ॥

सिर दुट्टत धीर उठ्यो धड्यं ।

बलखानहि आय गह्यो करयं ॥

भरि बथ सु हथ पछारि बलं ।

हिय पार कटार किए सु खलं ॥ ५७९ ॥

लख एक सरूमिय खेत परे ।

रणधोर सुरुंड भरे खपरे ॥ ५८० ॥

चौपाई छंद

परयो खेत बकसी बड़ भारी ।

और संग दल बोस हजारी ॥

मीर पचास संग तेहि सूते ।

इक लख रूमि बिहस्त^१ पहुँचे^२ ॥ ५८१ ॥

तीस सहस रणधोर सु^३ संगी ।

परे खेत वर वीर उमंगी ॥

धीर^४ रुंड द्वै पहर सु नच्च्यौ ।

एक सहस हनि गज जस संच्यौ ॥ ५८२ ॥

दूठ्यो गढ़ सु छाड़ि कौ सोई ।

सुनी श्रवण हम्मीर सु जोई ॥

तब आपन तन मन पन जान्यौ ।

छत्री मंगल मरन बखान्यौ ॥ ५८३ ॥

१ भिस्ते । २ पहुँचे । ३ के । ४ धीर युद्ध कर रुंड न चंच्यौ ।

दोहरा छंद

पक्ख ऊजरो चैत्र सुदि , तिथि नौमी शनिवार ।
 बोस सहस छत्री परे , अबला जरीं हजार ॥ ५८४ ॥
 जो कनवज काकै करी , करी छाटि रणधीर ।
 हरष सोच सम करि दोऊ , चक्रत भए जु मीर ॥ ५८५ ॥
 गज इकसठि दो लष तुरी , छप्परि बीस अमीर ।
 जो कहता सोई करी , धन्य राव रणधीर ॥ ५८६ ॥

छप्पय छंद

इतं मीर रण परे साहि षट मास सम्हारे ।
 तवै दृत इक आय साहि सौं बचन उचारे ॥
 जिते देव हिदैवान डिगत को धीर बंधावै ।
 जिनको पूजन करै राव निस दिन मन लावै ॥
 बर दियो राव हम्मीर को आपन मुख शंकर सरिम ।
 टूटै न गढूढ रणशम्भ सुनि अभै किए चौदह बरस ॥ ५८७ ॥

दोहरा छंद

दल लख सत्ताइस तहाँ , धरनि समावत मीर ।
 सूखत^१ सर सरिता बिमल , कूप बावरी नीर ॥ ५८८ ॥
 तिथि नौमी आसौज सुदि , कर गहि तेग रिसाइ ।
 सुरमंदिर करि कोप सब , चढूढि^२ अलावदि साइ ॥ ५८९ ॥
 हाथ जोरि गनेश कूँ , कहै राव हम्मीर ।
 करो मदति चाहत जवन , अलादीन दलभीर ॥ ५९० ॥

चौपाई छंद

सुनत^१ बचन हम्मीर के सोई ।

कोपे^२ जुद्ध देव को जोई ॥

जब शंकर काली हरषानी ।

निज^३ समाज बोले मृदु बानी ॥ ५८१ ॥

चौसठि जोगनि भैरव नचै ।

कर धरि चक्र त्रिशूल सु रचै ॥

वाजे^४ डिमरू बोर चढ़ि^५ आए ।

तबै साहि सौं जंग रचाए ॥ ५८२ ॥

चल्लै चक्र त्रिशूल सु नेजा ।

शक्ति पाश धनु बान धरेजा ॥

हल मूमल अंकुल मुद्गरवर ।

परिघ सेल लै धाए परिकर ॥ ५८३ ॥

कीनो जुद्ध बीर सब सज्जे ।

शंकर सरस कतूहल^६ सज्जे ॥

सबै साहि की सैन सुभाई ।

सबै परस्पर करै^७ लराई ॥ ५८४ ॥

बजि बाजंत्र अनेक स बोरं ।

डौरुव शंख भेरि पट हीरं ॥

१ सुन तब वक्त राव की सोई । २ कुपिय । ३ निज मुख सुवृ-
त्तिय मृदु बानी । ४ वाज्जिय, बजित्र । ५ उरि । ६ कुतूहल ।

मार मार चहुँ दिस सुनि बानी ।

कटे लाख^१ आल्हन पुर जानी ॥ ५८५ ॥

छप्पय छंद

तब सब देव गणेश विघ्न बड़ दल में किन्नव ।

कितौ म्लेच्छ कौ संग शस्त्र अप अप्प सु किन्नव ॥

उठे सकल ललकारि कीन्ह धमसान सुभारिय ।

हंड मुंड परि दंड सेन दो लक्ख सँघारिय ॥

देखंत नयन पतसाह तब अति अद्भुत कौतुक भयउ ।
हिम्मत बहादुर अली पर उभय लक्ख सेनह हयउ ॥ ५८६ ॥

यह चरित्र लखि साहि कूँच^२ आल्हन पुर^३ ते करि ।

तब फिर पलटे आय घेरि रणथम्भ सरिस भरि ॥

करि देवन से दोष कहो कौन सुख पाए ।

आगे^४ लख दल किते मारि हरि असुर खिपाए ।

अव लरै मनुष मानुषन सोँ देव दैत्य आगे^५ किते ।

यह जानि साहि सिर नाय करि आय^६ किए^७ डेरा उते ॥ ५८७ ॥

दोहरा छंद

हठ^८ हमीर छाड़ै नहीं, हजरति तजै^९ न टेक ।

सात भीर पतसाह के, गए बिसरि करि तेक ॥ ५८८ ॥

१ लक्ख आल्हन । २ कुच्च । ३ अल्लनपुर । ४ अगौं ।
५ अगौं । ६ आनि । ७ किन्न, कियउ, किते । ८ हठ हम्मीर
न छंडही । ९ तजी ।

महरम खाँ तब इम कही, अब पिछतावति साहि ।
 हम बरजत रणथम्भ गढ़, चढ़ि आए तुम चाहि । ॥ ५८८ ॥
 हजरति हिमति न छाड़िए, धरिए मन मेँ धीर ।
 गढ़ नरगढ़ चहुँ दिसि करो, कब लग लरै हमीर ॥ ६०० ॥

पद्धरी छंद

महरम्म आपनोँ^२ तजि सुसाहि ।
 ध्याए सुदेव हिँदवान जाहि ॥
 बहु बोलि विप्र मृजा कराहिं ।
 करि धूप दीप आरति बनाहिं ॥ ६०१ ॥
 पद परसे दरसे सकल देव ।
 नैवेद्य पुज्य नाना सु भेव ॥
 कर जोरि साहि बंदन सुकीन^३ ।
 यह भाति गवन डेरा सु लीन^४ ॥ ६०२ ॥
 करि आल्हण^५ पुर तैँ कूच ध्याय ।
 रण के पहार डेरा कराय ॥
 गढ़ की निगाह कीनी^६ सु साहि ।
 आसंग नाहि कीनी सनाहि ॥ ६०३ ॥
 करि मंत्र एलची दिय पठाय ।
 तुम को सुकहत समुभाव^७ राय ।

१ साहि । २ आपनोँ । ३ किन्न । ४ दीन । ५ अल्लख ।
 ६ किन्नी । ७ समुभाव ।

दै सेख छाँड़ि हठ मिलि सुराव ।

परसो सुआय पतसाह पाँव ॥ ६०४ ॥

इम सुनत राव प्रजरयो सु अंग ।

व्रत तरै कमि छत्री अभंग ॥

तुव कहा कहूँ दूतै सुजानि ।

नन तरै बैन . छत्री सुवानि ॥ ६०५ ॥

नहि देहु सेष घन^१ करै केमि ।

पशु पंछी जे तजि सरण जेमि ॥

रणधीर कुँवर दोउ अति उदार ।

वालणसी तीजो षान सार ॥ ६०६ ॥

ते परे खेत रावत अभंग ।

अब कोन मिलि^२ राख्यो प्रसंग ॥

तब दूत द्रव्य लै जाहु ओर ।

कहँ रही बात^३ फरमान तार ॥ ६०७ ॥

मति आव फेरि भेजे सुसाहि ।

अवार्वना जुद्ध नहि उचित ताहि ॥

लै चल्यौ दूत ये खबरि ऐन ।

जा कहे शाहि सौँ सकल बैन ॥ ६०८ ॥

सुनि बचन बाँचि फरमान सोइ ।

कहि साहि राव समुझै न कोइ ॥

उज्जीर देखि तजबीज कीन ।

रण को पहार अपनाय लीन ॥ ६०६ ॥

चढूढाय तोप तिहि पर प्रचंड ।

कीनी तयार गढ़ को अखंड ॥

पतसाह कहै महरम सुबत्त ।

तुम सुनो एक हम करी^१ चित्त ॥ ६१० ॥

हम्मीर राव की तोप देखि ।

दगो सु आपनी तोप लेखि ॥

यह तोप फुटे गढ़ फते होय ।

संदेह कौन या में न सोय ॥ ६११ ॥

गालम्मदाज तब करि सलाम ।

दागी^२ सुतोप लखि ताव ताम ॥

लगो सुतोप के गोल जाय ।

नुकसान भए तिहिं कछुक जाय^३ ॥ ६१२ ॥

यह सुनी श्रवण हम्मीर राय^४ ।

ततकाल तोप पै गयो धाय ॥

देषी सुतोप साबूत जानि ।

तब कह्यौ राव तुम सुनो कानि ॥ ६१३ ॥

पतसाह तोप खंडै सुकोय ।

हाँ करौं बडो ताको सुसोय^५ ॥

गालनदाज कीनीं^१ जुहार ।

पतसाह तोप फूटी सुपार ॥ ६१४ ॥

तब कही शाह महरम सुदेखि ।

गढ़ विषम बीर छंडै न टेक^२ ॥

अब करो^३ क्यों न तजबीज और ।

किहि भाँति हाथि आवै सुजोर ॥ ६१५ ॥

कर जोर कही महरम्म खान ।

पुल बाँधि^४ तोरि गढ़ करा आन ॥

तब महरम्म खाँ तजबीज कीन ।

इक राह बाँधि गढ़ को जु लीन ॥ ६१६ ॥

पुल^५ बाँधि कीन गढ़ की जु राह ।

सुनि राव चित्त चिंता सु आह ॥

नहि रह्यौ मरम^६ गढ़ को सकोइ ।

बहु फिकर राव कीनों सु जोइ ॥ ६१७ ॥

तिहिँ रैन पदम सागर सुआय ।

दीनो सुसुप्न हम्मीर धाय ॥

नहिँ करो कोन चिंता हमीर ।

सब नदी समुद्रन को सुसीर ॥ ६१८ ॥

तुम रहे अभै गढ़ अभै^७ आय ।

इक छिन्न माहिँ पुल द्यो बहाय ॥

१ किन्नर । २ पेखि । ३ करै । ४ बाँधि । ५ पुल बाँधि
किहूँ गढ़ को सराहि । ६ मगज । ७ अभै ।

तब प्रात राव जगो हम्मीर ।

फूटि गयो सकल बंध्यो सुनीर ॥ ६१८ ॥

सुनि साह बात^१ अचरिज मानि ।

टूटै न गढ्ढ जिय विषम जानि ॥

पुच्छिउ^२ तबै उजीर सुबोलि ।

कीजे इलाज किम कहों खेलि ॥ ६२० ॥

रण^३ के पहार कहा कीन आय ।

डेरा सुकीन्ह उजीर थाय ॥

मजबूत मोरचा तहाँ कीन्ह ।

बहु परी रारि दुहुँ ओर चीन्ह ॥ ६२१ ॥

हम्मीर राव ऊपरि प्रसाद ।

तहाँ करयो अखारो इन्द्रबादि ॥

तहाँ चंद्रकला पातुर प्रवीन ।

सो नृत्य करै सुंदर नवीन ॥ ६२२ ॥

बाजत मृदंग बीना सितार ।

कट तार तार सहनाइ सार ॥

महुवरी सुंख जरि तास संग ।

श्रीमंडल सुर औ जल तरंग ॥ ६२३ ॥

षट तीस राग रागिनि सुसुद्ध ।

सो सुनै नृपति बहुआन उद्ध ।

गंधार देव भैरव सुजान ।

अरू राम कली विम्भा समान ॥ ६२४ ॥

वजि ललित विलावल गिरी देव ।

सुर आसा टोडी सकल भेव ॥

हिंडोल और सारंग अनूप ।

नट और श्रोयुत राग भूप ॥ ६२५ ॥

करि गौरी कौ अलाप आनि ।

तब दीपग अरू सगरे कल्यान ॥

सुर गावत पंचम अति प्रवीन ।

सुनि केशरो मारो सुम्नीन ॥ ६२६ ॥

खंभाच रू मारू परज पाइ ।

सुम सोर उडैसी जैत गाइ ॥

प्रड्याणी कन्हर बहु सुभेव ।

बंगाल गौड़ मालव सुदेव ॥ ६२७ ॥

सिंधुव बिहाग षट राग पेषि ।

काफी अनूप सुर मधुर लेखि ॥

सब कला जीति संगीति रीति ।

नृतंत बाल गावंत गीति ॥ ६२८ ॥

सुर सप्त ग्राम तीनूं सु भेव ।

इक्कीस मूर्छिना करत^१ एव ॥

बहु लाग डाक^१ गावत प्रबंध ।

तिहि^२ सुनै होत आनंद फंद ॥ ६२८ ॥

हम्मीर राव राजत मसंद ।

दुहुँ ओर चौर ढारै^३ अमंद ॥

यहि^३ देखि साहि गरि गयो गब्र ।

हम्मीर इंद्र पदवी सु सब्ब ॥ ६३० ॥

अभिमान तजत नहि^४ मिल्यौ मोहि ।

नहिं शेख देय संका न कोहि ॥

यह चंद्रकला पातुर सुभेव ।

बरु हाव भाव हस्तक सुदेव^५ ॥ ६३१ ॥

वर्षत कटाक्ष ऊपरि सुराव ।

मोहि गिनत नाहिं कछु रहत चाव ॥

तब तान गान गावंत मानि^६ ।

एडिय सुबाल मोहिं फिरत^७ बानि ॥ ६३२ ॥

अपमान बाल कीन्हो^८ अनंत ।

एडी दिखाय मुभ^९ को हसंत ॥

करि कोपि कहै पतिसाह एम ।

मै^९ करौ बड़ो^{१०} जेहि कां सुप्रेम ॥ ६३३ ॥

जो हनै बाल कहि तीर पाहि ।

रसभंग करै मैं गिनो ताहि ॥

१ डाठ । २ ठौर । ३ तिहि । ४ मिल्यौ न मोहि । ५ सुभेद ।

६ जानि । ७ करत । ८ किन्हौ । ९ महि सों । १० बड़ा ।

सुनि बचन मीर गभरू सुशेख ।

कर जोरि कीन्ह बानी विशेख ॥ ६३४ ॥

यह धर्म पुरुष को कितहु^१ नाहिं ।

तिय ऊपर ऊचो करत^२ बाँहि ॥

तब कहत साहि इम सजो बान ।

नुकसान होय अरु बचै ज्यान ॥ ६३५ ॥

सुनि बचन श्रवन कम्मान लीन ।

सो ऐ^३चि श्रवन तिय चरन दीन ॥

तब परी बाल हूँ बिकल भूमि ।

रसभंग भया सब लखत प्रेम ॥ ६३६ ॥

लगि तीर सभा में परी^४ जाव ।

तब बढ्यो सोच हम्मीर राव ॥

अब लो न तीर दुगहि पहुँचि ।

यह कौन औलिया आय सच्चि^५ ॥ ६३७ ॥

देहरा छंद

देखि मीर अचिरज हुए,^६ गढ़ में आवत सीर ।

चक्रत चहुँ दिसि चाहि कै, रह्यो^७ राव हम्मीर ॥ ६३८ ॥

मुरझि तिरिय^८ धरनी परी, भए राव चित भंग ।

राव कहै^९ ऐसे बली, किते साह के संग ॥ ६३९ ॥

१ कहत । २ कर बसाँहि । ३ परतौ । ४ उँचि ।

५ भए । ६ रहे । ७ त्रिया । ८ कहह ।

महिमा साहि हमीर सै, कही बात कर जोर ।
 सकल साह के हसम मेँ, है लघु भैया मोर ॥ ६४० ॥
 नहिं दूजो कोउ साह कै, सबरे दल मेँ और ।
 मीर गभरु अनुज मम, जामेँ इतनो जोर ॥ ६४१ ॥

छप्पय छंद

नाहिं जती बिन जोग सूर बिन तेग^२ न होई ।
 इते साह के संग मीर सरभर नहिं कोई ॥
 करो हुकम मोहि राव साह को हनौ ततच्छिन ।
 मिटै सकल उतपात भाज सब सेन जाय बिन^३ ॥
 हँसि कही राव हम्मीर तब यह खुदाय दूजो दुनी ।
 सिर बचै साह छत्र जु उडै यह कौतुक कीजे गुनी ॥ ६४२ ॥

करि^४ साहिब को याद सीस हम्मीरहिं नायो ।
 कियो हुकम तब^५ राव कोपि के बान^६ चलायो ॥
 अनल^७ पंष जनु परिय दृष्टि^८ आकास धरन्निय^९ ।
 भयो सोर बर शब्द परयो महि छत्र बरन्निय^{१०} ॥
 मुरभाय साह भू में परे^{११} उड्यो छत्र आकाश ७ दिस ।
 तब कह उजीर पतसाह सौं तजी ज्यान परिहरि सुरिस ॥ ६४३ ॥

१ सिगरे । २ तेज । ३ घन । ४ कर जगदीसहि याद इष्ट-
 देव निज सुमिरि । ५ हम्मीर । ६ बरसु । ७ अनिल । ८ दृष्टि ।
 ९ बरन्निय । १० धरन्निय । ११ भुम्मी गिरउ ।

दोहरा छंद

पिछल निमक^१ की दोस्तो, करी जान बकसीस ।
जो दूजो सर छंडिहै, हनिहै बिश्वा बौस ॥ ६४४ ॥
जा गढ मै^२ महिमा रहै, किम आवै वह हृथ ।
अहि ज्युँ गहि छछूंदरी, यों हजरत की गथ ॥ ६४५ ॥

छप्पय छंद

कह महारम पाँ बात इसी^२ हजरति सुनि आवै ।
वह महिमा बर बीर राव का हुकम जु पावै ॥
गहै तुम्हें ततकाल पाँव लंगर गहि मेलै ।
उसै दिली बैठाय जोर मरजाद सु पेलै ॥
हठ छाँड़ि साहि रणथंभ का करो कूच चलिए दिली ।
जै रही राव हम्मीर की पतिसाही सारी गिली ॥ ६४६ ॥
तब^३ सु साह हठ छाड़ि उलटि दिल्ली दिस आए ।
पिता बैर कर याद साह सुरजन पछिताए ॥
रतन पंच लै संग^४ साह के पाँव सु लग्यौ ।
तात बैर हिय जानि कोप उर मैं अति जग्यौ ॥
कर जोरि साह सुरजन कहै सुगम दुगग मो हृथ गनि ।
यह जित्यो राज^५ रणधीर को मोहि दैन की बाच भनि ॥ ६४७ ॥

१ निमष । २ इती । ३ तब अलावदी छंडि हह दिल्ली दिस आए । ४ भेंट । ५ राव हम्मीर कौ ।

दाहरा छंद

हँसि हजरत ऐसो कही^१, सुरजन आगं^२ आव ।
 दियो राज रणधीर को, करूँ बडा उमराव ॥ ६४८ ॥
 करि सलाम सुरजन तबै, बीरा खायो कोपि ।
 आप भवन हिकमति रची, स्वामि धर्म सब लोपि ॥ ६४९ ॥
 जौरा भौरा खास मोर^३, भरे जु कोरे चाम ।
 फजरि आनि हाजिरि भयो, सुरजन करी^४ सलाम ॥ ६५० ॥
 हाथ^५ जोरि हम्मीर सों, सुरजन कही सुजान ।
 मिलो राव पतिसाह सों, गढ़ बीयो^६ सामान ॥ ६५१ ॥
 बिनती सुनत हमीर तब, कियो कोपि रत नैन ।
 छंडि टेक छत्रा तनी, रे कपूत गनि ऐन^७ ॥ ६५२ ॥

चौपाई छंद

कहैं राव हँसि सुरजन सुनिजै ।
 मिलो छाड़ि^८ पन^९ यह न गुनिजै ॥
 सुनि कापुरुष कपूत अयानै ।
 छाड़ि टेक को^{१०} छत्रा जानै ॥ ६५३ ॥
 फिर हमीर सुजन सों पृछी^{११} ।
 तेरी बात लगत मोहि छूछी^{१२} ॥
 जौरा भौरा खास सु दोई ।
 कैसे^{१३} निबरै जानत सोई ॥ ६५४ ॥

१ कहै । २ अगु । ३ द्वै । ४ किन्न । ५ हथ । ६ बियो ।
 ७ गति ऐन । ८ छंडि । ९ ग्रण । १० नहिं । ११ पुच्छी । १२ छुच्छी ।

कहै साह यह तो है^१ छानी ।

प्रगट देखि निज नैनन जानी ॥

पाथर^२ डारि खास मैं जोई ।

सुनिए श्रवन सह^३ सब कोई ॥ ६५५ ॥

दोहरा छंद

पाथर डारयो खास महँ, खुड़क्यो चाम^४ अपार^५ ।

जिस सब्ब^६ नीचै रही, राव यहै^७ निरधार ॥ ६५६ ॥

खुड़क्यो^८ सुनि दुव^९ खास को, चढ़यो सोच उर राव ।

महिमा तब हम्मीर सो, कहै बचन गहि पाव ॥ ६५७ ॥

छप्पय छंद

कहै जु महिमा संष राव मुहि हुकुम सु दाजै^{१०} ।

मिलो साह को जाय फिकर इतनो नहिं कीजै^{११} ॥

अब^{१२} दिल्ली को कूँच साहि को तुरत कराऊँ ।

तुम राजो रणथंभ जुद्ध मैं सकल सिराऊँ ॥

हम्मीर राव हँसि योँ^{१३} कहै^{१४} सदा कौन जग थिरि रहै ।

छिन^{१५} भंग अंग लालच कहा सुजस एक^{१६} जुग जुग रहै ॥ ६५८ ॥

१ तहिं । २ पथर । ३ शब्द । ४ चर्म । ५ आधार ।
 ६ सबै । ७ येह । ८ खुड़को । ९ दोउ । १० दिज्जै, दिज्जिय ।
 ११ किज्जै, किज्जिय । १२ अबै दिल्ली । १३ इमि । १४ क्यो ।
 १५ क्षण । १६ इक्क ।

दोहरा छंद

अलादीन पतिसाह सौं, गद्दी^१ खग^२ करि टेक ।
 दुख में बिरले मित्त^३ हैं, सुख में मित्त अनेक ॥ ६५८ ॥
 हठ तौ राव हमीर कौ, औ^४ रावण की टेक ।
 सत राजा हरिचंद को, अर्जुन बाण अनेक ॥ ६६० ॥
 गद्दी टेक छाड़ै नहीं, जीभ चौंच करि जाय ।
 मीठो^५ कहा अँगार कौ, ताहि चकोर चुगाय^६ ॥ ६६१ ॥

छप्पय छंद

राव^७ बात यह कही शेख अपने घर आयो ।
 भई राति सुरजन्न निकट हजरति कै आयो^८ ॥
 हाथ^९ जोरि सिर नाय कहै छल राव भुलायो ।
 द्वादस के सामान रक्खि गढ़ तोरि हलायो ॥
 ये^{१०} कहिय बात^{११} सुर्जन सकल रणतभँवर दूट्यो अबै ।
 हजरति प्रताप महा बंक गढ़ सहल भयो सदकै सबै ॥ ६६२ ॥

दोहरा छंद

चंदकला देवलि कुँवरि^{१२}, पारसि महिमाँ साह ।
 माँगत साह अलावदी, अब लै मिलयो आय^{१३} ॥ ६६३ ॥

छप्पय छंद

सुनि हजरति कै बचन राव हम्मीर रिसाए ।
 कहा अलावदी साहि गर्व के बचन सुनाए ॥

१ गहिय । २ तेग । ३ मीत जुग । ४ अरु । ५ मिठो । ६ जु
 खाय । ७ सबै बत्त ए कहिय शेख अपने घर आयो । ८ धायो ।
 ९ हथ्य । १० यह । ११ बत्त । १२ कुँमरि । १३ आहि ।

मैं हमीर चहुवान साह सों हम कछु चाहैं ।
 चिमना बेगम एक और चिंतामणि साहैं ॥
 पाइस्क च्यारि पीराँ^१ सहित कहै^२ साह ये दिजिए ।
 छुटै न हट्ट हम्मीर कौ कुचव दिली को किजिए ॥६६४॥
 ये हमीर के बचन^३ बाँचि पतिसाह रिसानो ।
 रे हराम कमबख्त किसो गढ़ फते करानो^४ ॥
 सुरजन भूठो कहै राव हम्मीर न मानै^५ ।
 नहिं महिमा को देइ मिलै नहिं हठी अमानै ॥
 यह कहो साहि सुरजन^६ तब देखिय अब कैसी बनै ।
 रणथंभ राव हम्मीर जुत मिटै होहि कौतुक घनै ॥ ६६५ ॥
 तब करि बदन मलीन राव रनवासहिं आए ।
 उठि रानी कर जोरि राव को सीस नवाए ॥
 गढ़ बीत्यो^७ सामान भयो भंडार सु रीतो ।
 टेक छाड़ि^८ करि सेख देहु अब माँगु न बीत्यो^९ ॥
 बिलखाय बदन रानी कहै द्वादस वर्ष जु तुम लरे ।
 बिप्रोति बुद्धि कौने दई हीन बचन^{१०} मुख निक्करे ॥ ६६६ ॥
 चौपाई छंद
 रानी कहै सुनो महाराव ।
 ऐसे बचन उचित नहि भाव ॥

१ पीरन । २ कहत राव । ३ ज्वाब । ४ करि जानां । ५ मन्त्र ।
 ६ सुरजन तबै । ७ बीत्यौ । ८ छंडि । ९ बीत्यौ, रीतौ, वित्यौ ।
 १० बत्त ।

या तन बचन सार श्रुति भाषै^१ ।

तन मन धन दै वचन जु राखै^२ ॥ ६६७ ॥

तन धन भ्रात पुत्र अरु नारी ।

हरि विधु त्यागि बचन प्रतिपारी ॥

राज पाट अनित्य^३ सु जानो ।

रहै नित्य इक सुजस बखानो ॥ ६६८ ॥

केकड़ ध्वज अधविग्रह दीनों ।

विद्या भवन जीति जस लीनों ॥

भव जो कही सत्य वह जानो ।

और न होय कोटि बुधि ठानो ॥ ६६९ ॥

दोहरा छंद

कव हठ करै अलावदी, रणतभँवर गढ़ आहि ।

कबै सेख मरनौ रहै, बहुरौ^४ महिमा साहि ॥ ६७० ॥

सूर सोच मन में करो^५, पदवी^६ लहौ न फेरि ।

जो हठ छंडो राव तुम, उतन लजै अजमेरि ॥ ६७१ ॥

सरन राखि सेख न तजो, तजो सीस गढ़ देश ।

रानी राव हमीर को, यह दीन्हो उपदेश ॥ ६७२ ॥

छप्पय छंद

कहाँ पँवार जगदेव सीस आपन कर कट्यौ ।

कहाँ भोज विक्रम सु राव जिन पर दुख मिट्यौ ॥

१ भवष्यै । २ रक्ख्यै । ३ अन्नित । ४ बहुरयौ । ५ करै ।

६ पदई ।

सवाभार नित करन कनक विप्रन को दीनो^१ ।

रह्यो न रहिए कोय देव नर नाग सुचीनो ॥

यह बात^२ राव हम्मीर सँ रानी इम आसा कही ।
जो भए चक्कवै मंडली सुनो^३ राव दीखै नहीं^४ ॥ ६७३ ॥

दोहरा छंद

धन जोवन नर की दसा, सदा न एक विहाय ।
पाष^५ पाँच शशि की कला, घटत घटत^६ बढ़ि जाय ॥ ६७४ ॥
राखि सग्न शेख न तजो तजो सीस गढ़ बेगि ।
हठ न तजो पतसाह सोँ, गहि कर तजो न तेगि ॥ ६७५ ॥
जितो ईश तुम्ह वर दियो, अब फिर चाहत काय ।
करो जंग पतसाह सोँ, सनमुख सार समाय ॥ ६७६ ॥
जीवन^७ मरन सँजोग जग^८, कौन मिटावै ताहि ।
जो जन्मै संसार में, अमर^९ रहै नहिं आहि ॥ ६७७ ॥
कोड सदा नहिं थिर रहै, नर तरु गिरवर प्राम ।
करयो राज रणथंभ को, अपना^{१०} तन परमान ॥ ६७८ ॥
कहाँ जैत कहँ सूर कहँ, कहँ सोमेश्वर राण ।
कहाँ गए प्रथिराज जे, जीति साह दल आण ॥ ६७९ ॥
कहाँ जैत कहँ सूर पृथि, जिन गह गौरी शाह ।
होतब जग में प्रबल है, चिंता किज्जिय काह ॥ ६८० ॥

१ दिन्नव । २ वक्त । ३ कहाँ । ४ कही । ५ पख, पख, पाषि ।
६ बढ़त । ७ जामन । ८ जे । ९ अमर न कोई आए । १० हम
अपने तप नाम ।

होतब मिटै न जगत में, कीजे चिंता कोहि ।
 आसा कहै हमीर सौं, अब चूको मति सोहि ॥ ६८१ ॥
 बिछुरन मिलन सँजोग जग, सब में यह विधि सोह ।
 आसा कहै हमीर सँह, हम तुम भया बिछोह ॥ ६८२ ॥
 धन्य वंश जिहि जन्म तव, राव सराहत ताहि ।
 और कौन तुम बिन त्रिया, बचन कहै समुभाय ॥ ६८३ ॥
 धन्य पतिव्रता नारि तू, राव सराहत आय ।
 अवर कौन तुम बिन त्रिया, कहै बचन बिन पाय ॥ ६८४ ॥
 राखि शेख शरनों तजों, कुल लाजै चहुवाण ।
 तुम साकौ गढ़^१ कीजिए^२, निरखि साह नीसाँण ॥ ६८५ ॥
 लीन^३ परिचा बहुत मैं, तू छत्रो कुलबाल ।
 तुव मत मैं देख्यौ^४ सुदढ़, यही बात^५ यहि काल ॥ ६८६ ॥
 सुने राव के बचन तब, परी धरनि मुरभाय ।
 निठुर बचन मुख ते जु कहि, तजि रनवासि रिसाय ॥ ६८७ ॥
 हम पतिभरता पुरुष बिन, कौन दिसा चित को धरै ।
 आसा कहै हमीर सौं, तुम पहला साको करै ॥ ६८८ ॥

छप्पय छंद

खोलि सकल भंडार तुरत^६ जाचिक सु बुलाए^७ ।
 विप्र भली विधि पूजि^८ दिए बंदी मन भाए ॥

१ गढ़ में करौ । २ किजियौ । ३ लिख । ४ दिख्यौ ।
 ५ वक्त । ६ सबै । ७ बुलाए । ८ पूज्य ।

भवन त्रिया गढ़ ग्राम तजे हम्मीर मोह बिन ।
 मन क्रम वचन सु त्यागि भए निज धर्म लीन खिन ॥
 तत्काल रनवास तजि सभा आप दरवार किय ।
 आय जु मित्र मंत्री सु बुध सूर बीर आदर सुदिय ॥ ६८८ ॥
 कहै राव हम्मीर सुनों चतुरंग महा वर ।
 तुम्है रतन की लाज जुद्ध^१ हम करें नियम करि ॥
 तुम सब बात समर्थ^२ करौ जैसी तुम भावै ।
 रणतभँवर^३ को लोग तहाँ कुछ दुःख न पावै ॥
 गढ़ सजो जाय चित्तौड़^४ का प्रजापालि सुख दिजिए ।
 सब साम दाम दंडह सहित भेद नित्य^५ सब किजिए ॥ ६८९ ॥
 कहै तबै चतुरंग उचित^६ यह हम कौं नाहीं ।
 आप^७ रहो हम^८ रहैं लरैं हम जस के ताहीं ॥
 कहे राव यह प्रजा सकल चित्तौड़^९ समावै ।
 यह परिकर सब जितो राखि^{१०} आपन^{११} जु सुहावै ॥
 चतुरंग राव ले रतन कौं गढ़ चित्तौड़ सुचल्लिए ।
 प्रथम जाय अल्हाणपुरह करुणा जुत डेरा किए ॥ ६९१ ॥
 दोहरा छंद
 पंच सहस चतुरंग लै, चले^{१२} रतन के साथ ।
 सकल मीर दरबार किय, कहा सबन यह गाथ^{१३} ॥ ६९२ ॥

१ बुद्ध । २ समर्थ । ३ यह परिकर सब जितौ, राख आपन जु सुहावै । ४ चित्तौड़ । ५ नीति । ६ उचित । ७ अप्प । ८ सब । ९ चित्तौड़ । १० रक्खि । ११ अप्पन । १२ चलिय, चल्यउ ! १३ सत्य गथ ।

जीवै सो धर भुगिवै^१, जुभुम्हे^२ सुरपुर वास ।
 दोऊ जस कित्तो^३ अमर, तजौ मोह जग आस ॥ ६८३ ॥
 जीवन चाहत जो कोऊ, ते सुखैन घर जाहु ।
 कहै राव सबके सुनत, हम सँग मरन उछाह ॥ ६८४ ॥

छप्पय छंद

सुनत वचन ये सेख भवन अपने को आए^४ ।
 कुटम सेख करि खेस करद लै अदल पठाए ॥
 कहै राव सो वचन नैन जल सो भरि आए ।
 सुख संपत रणथंभ त्यागि करिए मन भाए ॥
 सुर नर कायर^५ सूरमां कहै सेख थिर नहिं कोई ।
 हम्मीर राव चहुवान अब करै साहि सो जँग सोई ॥ ६८५ ॥

दोहरा छंद

जीवन को सब कोउ कहै, मरन कहै नहिं कोय ।
 सती सूरमा पुरुष को^६, मरतहिं मंगल होय ॥ ६८६ ॥

छप्पय छंद

केसर सौंधे वसन सकल उमरावन सज्जे ।
 अलादीन पतिस्याह फेरि कहि कब कब गज्जे ॥
 सहस गऊ करि दान राव सिर मौर सु बंध्यौ ।
 करयव^७ जुद्ध को साज छत्र कुल सुजस सु संध्यौ ॥

१ भोगिवै । २ जूम्हे । ३ कीरत । ४ कै धायो । ५ कातर ।
 ६ कै । ७ करिव ।

निस्सान^१ पान बज्जे सु घन हर्ष^२ बोर बानै पढ़े ।
चहुवान राव हम्मीर तब जुद्ध काज चौरै चढ़े^३ ॥ ६८७ ॥

दोहरा छंद

पंच सहस रतनेस सँग, गढ़ चीतोड़^४ पठाय ।
पंच सहस रणथंभ गढ़, द्रढ़ रावत रह आय ॥ ६८८ ॥
असी सहस सेना सकल, चढ़ी राव के संग ।
माया मोह विरक्त मन, जुरन साह सौं जंग ॥ ६८९ ॥

छप्पय छंद

कमध्वज कूरम गौड़ तेंवर परिहार^५ अमानो ।
पौरच वैस पुँडोर वीर चहुवान सु जानो ॥
जहव^६ गोहिल धीर चढ़े गहिलोत गरुरं ।
सैंगर और पवार भिल्ल^७ इक भोज मरुरं ॥
छत्तोस वंश छत्री चढ़े जिम पावस बदल बढ़े ।
हम्मीर^८ राव चहुवान तब जंग कज्ज^९ चौरै कढ़े ॥ ७०० ॥
जेठ मास बुध वार सप्तमिय पक्ख^{१०} अँध्यारी ।
करि सूरज को नमन राव कर खग^{१०} सम्हारी ॥
हर्षे सुर तेंतीस और हर्षे जु कपाली ।
नारद सारद हर्षि वीर बावन जुत काली ॥

१ नीसान । २ कढ़े । ३ चितौड़ । ४ पड़िहार । ५ जाहम ।
६ भील । ७ दल हरषि राव हम्मीर के साह जीव अचरिज बढ़े ।
८ काज । ९ पाख । १० तेग ।

हर्षी जु हरषि अच्छर^१ हरषि जुगिनि वृंद सु नच्चियव ।
जंबुक कराल गिद्धनि हरषि सूर हरषि हिय रच्चियव ॥ ७०१ ॥

हनूफाल छंद

सजि सूर राव हमीर । विरदाय^२ वीर सु धीर ॥
जनु छत्र कुल की लाज । रन सिंधु की मनु पाज ॥ ७०२ ॥
दातार सूर सु अंग । निस दौस जुटत जंग ॥
धरि स्वामि धर्म सुरंग । बढि^३ रहे तिल तिल अंग ॥ ७०३ ॥
गढ़ कोट ओटत एक । तोरंत करि करि टेक ॥
सिर खैरि चंदन सोह । रवि बंदि बंदि सुजोह ॥ ७०४ ॥
गति उद्ध^४ कुहत भट्ट । ज्योँ खेवन उत्तो^५ नट्ट ॥
अंग वर्म चर्म सु कीन । सिर टोप ओप सु दोन^६ ॥ ७०५ ॥
दस्तान रच्चि सु हथ । करि चहै गथ^७ अकथ^८ ॥
बहु न्हान दान सु कीज । गो स्वर्ण विप्रन दोन^६ ॥ ७०६ ॥
रवि शंभु विष्णु सुपुजि^{१०} । मन साह सैं करि दुजि^{११} ॥
आचार भार फबंत । दोउ पच्छ सुद्ध सुभंत ॥ ७०७ ॥
बहु बंदि विरदत जाय । बढि वृंद हर्ष सु आय ॥
असमान लगि^{१२} सु शीश । भल हलैं तेज सु दोश ॥ ७०८ ॥
सँग चह्यव^{१३} वंश छतीस । संग्राम अचल सु दोस ॥ ७०९ ॥

१ अच्छरि । २ विरदार । ३ रहिव । ४ उर्ध्व । ५ उत्तरेड ।
६ किन्न, दिन्न । ७ गथ । ८ अगथ । ९ दिन्न, किन्न । १० पूजि ।
११ दूजि । १२ लगिय । १३ चढ़े ।

दोहरा छंद .

स्वामि धर्म धारै^१ सदा, माया मोह विरक्त ॥
होन कपान उदार मति, अचल अद्रि हरिभक्त ॥ ७१० ॥
साखत साज सुबाजि सजि, कीन बनाव सु ऐन ॥
चंचल चपल विचित्र गति, राग बाग लखि सैन ॥ ७११ ॥

छंद हनूफाल

तब^२ साहनी नृप बोलि । हय सहस सोलह खोलि ॥
सब वंश उच्च सु बाज^३ । लखि^४ रूप मोहत राज^५ ॥ ७१२ ॥
मनु उच्चश्रव के बंधु । आवत्त^६ चक्र सु कंधु ॥
तुरकी हजार सु पाँच । मग चलत करत सु नाच^६ ॥ ७१३ ॥
ताजी हजार सु रुद्ध । गुन सील रूप समुद्ध ॥
सब बीर ताजि^७ कुलीन । नृप बंदि^८ बाजि सु दोन ॥ ७१४ ॥
बनि जीन जटित जराव । नग हीर पन्न सु हाव ॥
सिर बनिय कलगिय ऐन । मनु सजे बाजि सु मैन ॥ ७१५ ॥
गज गाह बाह अथाह । जो करै^९ जल पर राह ॥
नग मुक्त माल सुमाल । गुम्फी^{१०} सु रुचि बहु काल ॥ ७१६ ॥
मखमलिय सिंगरे, साज । मनु सबै रवि के बाजि ॥
जिन परिय पण्डरि अंग । लख भ्रमत दिट्ठि^{११} भ्रमंग ॥ ७१७ ॥
बहु सिरी सीसन सोहि । उड़ि चलै भरि जो कोहि ॥

१ धारहिं । २ तब साह लिय नृप बुल्लि । ३ बाजि । ४ लख ।
५ राजि । ६ पंच । नच्च । ७ धीर । ८ बाँटि । ९ करहि ।
१० गूँथी । ११ दिठि ।

गति चलै^१ चंचल एमि । जिनि पवन पहुँचै केमि ॥७१८॥
 धर धरत सुमयौ मानि । मनु जरत अगि^२ सु जानि ॥
 जल चलै धल जिमि बट्ट^३ । लखि उडै औघट घट्ट^४ ॥७१९॥
 मृग गहत डार कमान । नहिँ पच्छि पावहिँ^५ जान ॥
 गति पवन देखि लजात । जनु मुकुर कांति सगात ॥७२०॥
 दोउ वंश शुद्ध प्रकाश । बड़ि डील पील सु जास ॥
 यह बिधि सु लिन्ने^६ मौलि । नग हेम सर भर तौलि ॥७२१॥
 कोउ बने कच्छिय ऐन । सब^७ उडै पच्छिय गैन ॥
 ऐराक वंश सुशील । गुन भरे भलकत डोल ॥७२२॥
 खंधार उपजि स सुद्ध । जनु लखत रूप सु उद्ध ॥
 कावलिय डोल अनूप । तिहिँ देखि^८ मोहत भूप ॥७२३॥
 अरु चीन के जु नवीन । ताजी सगुन गन लीन ॥
 वर बीर अनक जु डोल । जो लिए साटै^९ पील ॥७२४॥
 रँग रँग अंग बनाव । सो लिये पंकति^{१०} दाव ॥
 सिरगा सुरंग समंद । संजाफ सुरख अमंद ॥७२५॥
 कुम्भैत कुमुद कल्यान । मोती सु मगसी आन ॥
 सब्जारू सब रँग भौर । चंपा सु चीनिय चौर ॥७२६॥
 अवलख सु गरड़ा रँग । लक्खी जु उपजिहि मंग ॥
 हंसा हरेई बाजि । तीतुरिय ताँबो साजि ॥७२७॥

१ चलहिँ । २ अग्नि । ३ बाट । ४ घाट । ५ पावै । ६ लीने ।

७ संग । ८ दिक्ख, पिकख । ९ सटै । १० लगे पंकज ।

भिन भिन्न टुकड़ो साजि । चढ़ि चलिय रावत गाजि ॥

चहुवान राव हमीर । रँग रँग सु रचचन धीर ॥७२८॥

छंद त्रोटक

गजराज सबै सत पंच सजे ।

गिरगात^१ मनो घन भट्ट गजे ॥

सु महावत जंत्रन मंत्र रजे ।

करि बंधन^२ पीरसुधीर कजे ॥७२९॥

परि पांय सजाय निकट्ट षरे ।

पग खेलि जंजीर सुवीर अरे ॥

बिरदाय भत्ते मन हृथ्य^३ कियं ।

असनान कराय सिंगार लियं ॥७३०॥

तन तेल सिंदूरन चित्त कियं ।

सिर चंद अमंद सुरंग लियं ॥

जनु कज्जल बहल पावसयं ।

तड़िता घन^४ चंद की मावसयं ॥७३१॥

सजि डंबर अंबर सो लगियं ।

घन घोर घटा सु पटा गिनियं^५ ॥

कसियं हवदा ध्वज धार वली ।

मनु पंगति पढवय की जु चली ॥७३२॥

वर्षा घन घोर सु जानि परै ।

कवि रूप स्वरूप समान करै ॥

बहु बहल बारन वृंद बढे^१ ।

ध्वज वैरष लाल निसान कढ़े ॥७३३॥

तड़िता घन में दमकंत मनों ।

बगपंत सुई गजदंत भनों ॥

गरजै बहु गाज सु गाज मनं ।

मिलियो शशि सूरज गोन भनं ॥७३४॥

बघैं हृद मद सुभद सदा ।

सु बहैं बहु भाँति सुभद^२ मुदा ॥

सिर ढाल ढलककत एमि लसै ।

शशि जीव धरासुत एक बसै ॥७३५॥

अधधुंध चलै मग उम्मगयं ।

मनु काल कराल उठे जगयं ॥

चरषी बहु बान जु नेज लियं ।

धरि सेन सु अग्र^३ सुभाय कियं ॥७३६॥

पद लंगर और जंजीर जुटे ।

नहिं खुल्लत आदुव न्याय लुटे^४ ॥

बल राशि अमान^५ सुकोह भरे ।

नन चालत मग अमग अरे ॥७३७॥

बहु दुंदुभि घोर सुनै श्रमनं^६ ।

विरदाय सुनंत करै गमनं ॥

१ चढ़े । २ नद्ध । ३ अग्र । ४ लुटे । ५ अमावन ।

६ श्रवनं ।

सिर चौर दुरंत इसे दरसैं ।
 तम दाबि दिनेश मरीचि लसै ॥७३८॥
 चतुरंगनि राब हमीर तनी ।
 सब भाँतिन सोभ अनंत बनी ॥
 सब रावत आय जुहार कियं ।
 चहुवान सबै सिर भार दियं ॥७३९॥
 धरि अग्र सु पिल्लन डिल्ल पिले ।
 बहु चंचल बाजिन लाज^१ पिले ॥
 बहु दुंदभि बाजत^२ घोर घनं ।
 पट गोमुख भेरि सु चंग मनं^३ ॥७४०॥
 सहनाइय सिंधुर राग हरं ।
 विरदावत विंद कविंद तरं ॥
 उमगे चहुवान विकट दलं ।
 अप अप सु वीर कराय हलं ॥७४१॥
 चहुँ ओर कितेक सु पुंगल के ।
 करिहा^४ सजि संग चले बलके ॥
 तिनकी सज मानव चित्र रचे ।
 धर दूर नजीक करै सु नचै ॥७४२॥
 असवारिय सज्ज बनी तिनतैं ।
 खबरै बहु लेत घने बन तैं ॥

बहु तोप जलेबिन^१ अग्र बनी ।

सब सिंदुर लेप करी जु घनी ॥७४३॥

तिन ऊपर बैरख वृंद सजी ।

जम की मनु जीभ अनेक गजी ॥

बलि देत चलै अरिवृंद भपै ।

मद बक्कर भष्पर^२ कोप धपै ॥७४४॥

हथनारि जंबूर सु चदरय^३ ।

छुटिया तुबकै बहु अदरियं ॥

धरि अग्र सबै चहुवान चढ़े ।

बहु बंदि कबिंद सुछंद पढ़े ॥७४५॥

इहि भाँति उभै दल कोप किय^४ ।

हरषे बर वीर सुधीर हिय^५ ॥७४६॥

दोहरा छंद

श्रवन सुनै बर वीर रस, सिंधव राग अपार ।

हरषि उठे दोउ तिहिं समै, मिलन वीर शृंगार ॥७४७॥

छंद हनूफाल

मिलनै सुवीर शृंगार । दुहु हरष हिए अपार ॥

बर वीर हरषेउ अंग । उत अच्छरी सु उमंग ॥७४८॥

तन उभै मज्जन कीन । भए दान मानस लीन ॥

तहाँ कौच वीर नवीन । रचि बाल वसन प्रवीन ॥७४९॥

इत टोप बीरन सीस । कसि कंचुकी तिय रीस ॥
 बहु अछ बंधि सु वीर । अछरि सु भूषण हीर ॥७५०॥
 इत सूर खड्ग सु लीन । उत बाल अंजन दीन ॥
 इत ढाल बीरन बंधि । ताटंक श्रवननि संधि ॥७५१॥
 सामंत बंधि कटार । अछरी तिलक सुठार ॥
 मुख पान ज्वान सुभाव । तिय चंप दंत जराव ॥७५२॥
 इत कसी सूर कमान । दृग वाम चमक निदान ॥
 धरि बीर कर दस्तान । अछरिय महदी पान ॥७५३॥
 बरच्छो सु लीनिय सूर । बर माल कीनिय हूर ॥
 सिरपेच सूर जराव । तिय सीस फूल सुहाव ॥७५४॥
 इत तवल तौरा नेत । तिय हाव भाव समेत ॥
 रचि सूर सेलिय अंग । अछरिय हार उमंग ॥७५५॥
 कसि तून वीर स जंग । अछरिय नैन अपंग ॥
 कर केहरी नख सूर । उत पानि पानि सहूर ॥७५६॥
 लिय वीर तुलसिय माल । बर माल लीन स बाल ॥
 कसि सूर मोजा पांथ । नुपुर सु बाल सुहाय ॥७५७॥
 कसि सूर वाजि सु तंग । विम्मान बाल उमंग ॥
 इहि भांति सूर सवाल । उतकंठ मिलन तिकाल ॥७५८॥

दोहरा छंद

उमगि उमगि हम्मीर भट, चले सकल करि चाव ।
 च्यारि अनी चतुरंग की, चढ़े संभरी राव ॥७५९॥

उतै साह के मीर भर, खान ओर उमराव ।
 रणतभँवर छिक्किय हरषि, नाना करिव बनाव ॥७६०॥
 चारि दरा घाटी जितो, कीने घाटा रोह ।
 काल रूप कोपे तुरक, बान विकट जंसीह ॥७६१॥

भुजंगप्रयात छंद

चढ़े बीर कोपे दुहूँ ओर धाए ।
 मनो काल के दूत अद्भुत आए ॥
 इतै राव हम्मीर के बीर छुट्टे ।
 उतै भीर धीरं गहीरं सु जुट्टे ॥७६२॥
 उड़ी रैन सैन न दीखंत भानं ।
 दुहूँ ओर घोरं सु बज्जे निसानं ॥
 छुट्टै तोप वानं दुहूँ ओर जोरं ।
 धरा अंमरं बीच मच्चे सु शोरं ॥७६३॥
 उठी ज्वाल माला धरा वै उपट्टे ।
 धुवाँ घोर घोरं सु जोरं प्रगट्टे ॥
 मनो दाय सिंधू तजै आय बेला ।
 प्रलैकाल के काल कीनो समेला ॥७६४॥
 दुहूँ ओर घोरं सु गालं बरषै ।
 मनो मोघ ओला अतोले करषै ॥
 उड़ै अग्रपव्वय डहै गढूढ कोटं ।
 परै गज बाजं धरा धूरि लोटं ॥७६५॥

प्रलै पावकं जानि उट्टी लपट्टैं ।

बरं उभकरं सूभरं यों भपट्टैं ॥

लगै गोल में गोल गोला सु गज्जै ।

भए वार पारं उपम्मा सु रज्जै ॥७६६॥

मनो स्याम कै वास ह्वै वारपारं ।

चहूँ ओर राजंत है चारु वारं ॥

रहे गिद्ध तामें घने बैठि अद्धं^१ ।

करै ध्यान बैठे गुफा में मुनिद्धं ॥७६७॥

उड़े साथि गोलान के बोर ऐसै^२ ।

मनों फाटिका तैं उड़े नट्टु जैसै^३ ॥

चलै तोप जोरं करै^४ सोर भारी ।

परै बिज्जुरी सी घने^५ एकबारी ॥७६८॥

छुटै एक वारै^६ घनी चाहरं यों ।

मनो भार भूजै बनै यों घनै यों ॥

बँदूकै हजारं चलैं एमि राजै ।

मनो मेघ गोला परै भूमि गाजै ॥७६९॥

चलै बान बेगं मचै सोर भारी ।

मनो आतसंबाज खेलंत कारी ॥

छुटै बान कम्मान ज्यों मेघ धारा ।

लगै बाज गज्जं हुवै वार पारा ॥७७०॥

मनो नाग छेना उड़ै होड मंडो ।

उसै अंग अंग करै सेन खंडी ॥

बहै तोमरं सेल औ सक्ति ऐनं ।

करै वार पारं बहै उच्च वैनं ॥७७१॥

बहै खड्ग बेहद देखंत सूरं ।

करै दोय दूकं सडुक्कै समूरं ॥

बहै तेग कंधं परै गज्जराजं ।

लगै आयुधं यो डरं सर्व साजं ॥७७२॥

कटै कंगलं अंग आजीन बाजी ।

तबै सूर रीभे करे मालसाजी ॥

कटारी बहै वार पारं निहारै ।

मनो स्थाम उर माँभ कौस्तुभ सम्हारै ॥७७३॥

कहूँ पंजरं पिंजरं बेगि फारं ।

मनो हाथ वाला अहारी निकारं ॥

छुरी हत्थ जोरं करै सूर हाँकै ।

कहूँ मल्ल युद्धं करै वीर खाँकै^१ ॥७७४॥

परै सीस भूमै^२ उठै रुंढ^३ घोरं ।

हुँहू सेन देखंत कौतुकक जोरं ॥

किती अंत उरभंत लटकंत^४ भूमै ।

किते घायलं घाव लगो सु भूमै^५ ॥७७५॥

भरे योगनी^१ पत्र पीवंत पूरं ।

परै^२ ज्यों मलेच्छं बरै^३ आय हूर^४ ॥

किलककै जु काली हँसैं बार बारं ।

करै^५ भैरवं घोर सोरं अपारं ॥७७६॥

भगो साह की सेन देखंत दोई ।

कहै बैन कोपं वकं सीस सोई ॥

कितै भागि जैहौ अरे मूढ़ आजं ।

जिते^६ वीर चहुवान हम्मीर गाजं ॥७७७॥

अम्यो साह संगं तज्यो जंग भारी ।

कहै साह उज्जीर सोँ जो हँकारी ॥७७८॥

दोहरा छंद

कहा राव हम्मीर के, सूर वीर बलवान ।

सबै^७ सु खाय हमारिए, जंग समै प्रिय प्रान ॥७७९॥

छप्पय छंद

कहै साह उज्जीर सुनो आपन मन लाई ।

जिते राव के वीर सबै^८ छत्रो प्रन^९ पाई ॥

लरत भिरत नहिं टरत करत अद्भुत रस सीतो^{१०} ।

करत जंग अनभंग अंग छिन भंग है नीतो^{११} ॥

नहिं सहत सार आपन^{१२} सपन^{१३} सबै मीर उमराव भर ।

किज्जे सु कौन मत तंत अब कहो बुद्धि आपन समर ॥७८०॥

१ जुगनी । २ जिनें चाहुआनं हमीरं सुगानं । ३ सर्वस्व ।

४ धर्म । ५ पन । ६ जीते । ७ निते । ८ आपन । ९ सयन ।

कहि उजीर^१ कर जोरि सुनो हजरत यह किज्जे ।
 च्यारि सेन चतुरंग संग नामी कर^२ दिज्जे ॥
 एक सेन दिवान्न^३ एक बकसी भड़ बंके ।
 एक गोल मोहि जानि आप एकन कर हंके ॥
 यह भाँति सेन चतुरंग के अनी च्यारि करि जुट्टिए^४ ।
 हम्मीर राव चहुवान ते फते आप लहि हट्टिए ॥७८१॥

दोहरा छंद

करि करि मंत्र उजीर तब, चढे संग ले मीर ।
 च्यारि अनी करि साहि दल, जुरे जंग सब^५ बीर ॥७८२॥

त्रिभंगी छंद

करि मंत्र असेसं सूर सु देसं, बंके वेसं सज्जायं ।
 हय गय चढ़ि वीरं फिरे सु मीरं, धरि धरि थीरं लज्जायं ॥
 गजराजन सज्जै अगों रज्जै, वीरं गज्जै लखि लज्जै ।
 नीसान^६ फरक्कै धीर धरक्कै, हर हर बक्कै गलगज्जै ॥७८३॥
 दोउ ओर उमगौ^७ समर सु रड्डै, बढि बढि तड्डै नख खड्डै ।
 बहु तोपन छुट्टै वीर अहुट्टै, फिरि फिरि जुट्टै बल चड्डै ॥
 बाजे बहु बज्जै जनु घनु गज्जै, सूर समज्जै बल रज्जै ।
 पद रुथ पतालं अरि उर सालं, उट्टत भालं रण सज्जै ॥७८४॥
 छुट्टै बहु वानं संधि कमानं, अरि उर प्रानं बहु कड्डै ।
 लगौ उर सेलं अरि दल पेलं, विग्रह भेलं बल ठड्डै ॥

१ वजीर । २ नर । ३ दीवान । ४ खुट्टिए । ५ फिर ।
 ६ निस्सान । ७ उमड्डै । ८ डड्डै ।

किरवान दुधारं हय गय पारं, सूर सहारं उर फारं ।
करि जेअर कुठारं बहुत करारं, भिरत जुभारं रनभारं ॥७८५॥
गिद्वय पल भण्णै रत बल चण्णै, जंबू अण्णै हिय हण्णै ।

... ..

बहु पत्र भरावै मिलि मिलि गावै, धरि धरि धावै मन भावै ।
पल अस्ति चचोरै बसन निचोरै, लुण्ठि टटोरै गुन गावै ॥७८६॥

दोहरा छंद

यहि विधि दुहुँ दल आहुरे, भिरे^१ दोउ दल ऐन ।
रहे अहल चहुवान हू, खान सकल हठि सैन ॥७८७॥
अबदल मीर जु साहि के, परे खेत मै^२ धाय ।
पकरै राव हमीर का, पकरै^३ अस पति पाय ॥७८८॥
ल्याऊँ गहि हम्मीर को, रीझ दिजिए मोहि ।
जितनो हिंदू को वतन, पाऊँ अब कर जोहि ॥७८९॥
बीस सहस अबदल पिले, इत हमीर के बीर ।
आप आप जय स्वामि की, चाहत मंगल धीर ॥७९०॥

छंद रसावल

नीर पिल्ले तवै, बीर अबदुल जबै ।
कहै बैन बाहं, सुनो आप सा ॥७९१॥
गहूँ राव ल्याऊँ, रणत्थंभ पाऊँ ।
कमानस्सुग्रीवं, गरै डारि जीवं ॥७९२॥

लगूं साह पगै, उठै कोपि जगै ।

हजूरं सु बीसं, नमाए सु सीसं ॥७८३॥

गजं साज^१ तीसं, करै जीव रीसं ।

उतै^२ राव कोपे, पिले वीर ओपे ॥७८४॥

उठी बंक मुच्छं, लगी जाय चच्छं ।

मनों बोर मगै, अकासं सु लगै ॥७८५॥

मिले वीर दोऊ, करें जोर सोऊ ।

भिरे गज्जि गज्जं, बजे बोर बज्जं ॥७८६॥

तुरंगं तुरंगं, मचै जोर जंगं ।

पयहं पयहं, बकै कोप वहं ॥७८७॥

भभक्कंत बानं, उड़ै लगि ज्वानं ।

लगै तेग सीसं, उभै फांक दीसं ॥७८८॥

लगै जम्म दड्ढं, करै पान गड्ढं ।

परी लुत्थि जुत्थं, करी जो अकत्थं ॥७८९॥

करी जूह लोटै^३, पवै जानि कोटै^२ ।

तुरंगं धरन्नी, सु लढ्ढै बरन्नी ॥८००॥

नचै रुड^३ वीरं, धरन्नी सरीरं^४ ।

सिरं हक्क मारै, धरै अत्र धारै^५ ॥८०१॥

उरभक्त अंतं, मनो ग्राह तंतं ।

गहैं अंत चिल्लो^५, अकासं समिल्लो ॥८०२॥

१ सज्ज । २ लुट्टै, कुट्टै । ३ रुद्र । ४ सुधीरं । ५ चिल्ली मिलही ।

मनों बाल मंडो, उड़ावत गुड्डो^१ ।

उडै^२ श्रोण छिच्छं, फुंवारे^३ सु अछं ॥८०३॥

बहैं श्रोण नहं, मनो नीर भहं ।

भरै^४ पगग हथ्यं, तरब्वूज मथ्यं ॥८०४॥

पलक्की चमच्चो, उठै वीर नच्ची ।

कियो अट्टहासं, सुकाली प्रकासं ॥८०५॥

जहाँ क्षेत्रपालं, गुहै शंभु मालं ।

भपै गिद्ध बोटी, फटै तासु पोटी ॥८०६॥

षटं सहस सूरं, परे जाय हूरं ।

गजं तीस पारे, पहारं करार ॥८०७॥

सतं दोय बाजी, परे खेत साजी ।

तहाँ पद्य सैनं, रहे देखि^४ नैनं ॥८०८॥

तबै सेख सीसं, नवाए सरीसं ।

हमीरं सुरावं, कहै बैन चावं ॥८०९॥

दुहूँ सेन मध्ये, महिम्मा सु वध्ये ।

कहै उच्च वाचं, सुनो राव साचं ॥८१०॥

लखो हथ्य मेरे, बदे बैन टेरे ।

सुनो साहि बैनं, लखो अप्प नैनं ॥८११॥

खरो मैं जु खूनी, रहे क्यों जमूनी ।

गहो क्यों न अब्बं, कहै बैन तब्बं ॥८१२॥

यहीं सेस सीसं, रह्यो मैं जु दीसं ।
 करो सत्य बाचं, ततो आप साचं ॥८१३॥
 तवै पातसाहं, खुरासान नाहं ।
 करे^१ कोप पिल्लं, तहाँ सेख मिल्लं ॥८१४॥
 कहै साह बैनं, सुनो सर्व सैनं^२ ।
 गहै सेख ल्यावै, इतो हश्म पावै ॥८१५॥
 जु वारा हजारं, मनं^३सब्ब भारं ।
 नोबति निसानं, अरु तेग मानं ॥८१६॥
 सुने बैन ऐसे, खुरासान रेसे ।
 हजारं सतीसं, निवाए^४ सु सीसं ॥८१७॥
 सदक्कीज बानं, पिले सेख पानं ।
 तवै सेख धाए, राव को सीस नाए ॥८१८॥

दोहरा छंद

करि सलाम हम्मीर को, सेख लई बड़ बग ।
 दुहूँ^५ सेन देखत^६ नयन, रिस करि कढूँ^७ खग ॥८१८॥

चौपाई छंद

कहे साहि सुनि सदकी बैनं ।
 यह कुट्टन^८ को गहो सु ऐनं ॥
 जीबत पकरि याहि अब लीजै^९ ।
 मनसब द्वादस सहस करीजै^{१०} ॥८२०॥

१ करी कुप्पि । २ एनं । ३ मनां । ४ नमाए । ५ दोऊ । ६ दिष्यत,
 पिकखत । ७ काढ़े, कढूँ । ८ कुट्टम । ९ लिजिय । १० करिजिय, जुकिजिय ।

सदकि^१ संग मीर खुरसानी ।
 तीस सहस चढ़ि चले अमानी ॥
 गहन सेख महिमा के काजै ।
 कुप्पिय^२ मीर खेत चढ़ि बाजै ॥८२१॥
 इतै सुसेख राव पद बंदे ।
 गहै तेग मन मांहि अनंदे ॥
 इतै सेख सदकी उत आए ।
 आप आप जय सद सुनाए ॥८२२॥
 कहै सदकि^३ सुनि साह सुजानं ।
 ठठा भषर वसि करिए पानं ॥
 कहा सेख हम्मीर सु रावं ।
 उठे युद्ध कों करि जिय चावं ॥८२३॥

छप्पय छंद

जुटे वीर दुहु जंग अंग अनभंग महाबल ।
 चढ़े जान अम्मान बढ़े निस्सान^४ बरहल ॥
 करि कमान करि पान कान लों करिखइ रष्वे ।
 धरि नराच गुन राखि धाव करि बेगि बरष्वे ॥
 निज संग वीर सत पंच जुत सेख भेखरौ यह धरिव ।
 उत खुरासान षट सहस लै सदकी सद हांकी करिव ॥८२४॥
 तेग बेग बहु कढ़ी मने पावक्क लपट्टी ।
 करी बाज रन जुट्ट कटे सिर पाव डपट्टी ॥

परै धरनि धर नचै उदर कटि अंत भभक्कै ।
 चली रक्त धर धार लुत्थ परि लुत्थ धधक्कै ॥
 षट सहस खिसे पुरसान दल लिय निसान बानै सुबर ।
 किए नजर राव हम्मीर के फवी फते महिमा समर ॥८२५॥
 आइ सेख सिर नाय राव कू बचन सुनाए ।
 धनि छत्री चहुवान सरन पन जग जस छाए ॥
 तेज राज धन धाम तात तिय दृठ नहिं छंडै ।
 राखि धर्म द्रढ़ सत्य कीर्ति जस जुग जुग मंडै ॥
 भरि नीर नैन महिमा कहै अब जननी कब जन्म दे ।
 जब मिलो राव हम्मीर तुम बहुरि समैं व्हैहै करे ॥८२६॥
 कहै राव हम्मीर धीर नहिं हीन उचारो ।
 सूर न करै सनेह देह छिन भंग विचारो ॥
 बिछुरन मिलन सँजोग आदि ऐसी चलि आई ।
 ज्यों जीवन^१ ज्यों मरन सकल^२ वेदन यह गाई ॥
 कीजे न भर्म अनभंग चित मिलै सूर के लांक सब ।
 हम तुम जु साह बहुरों^३ तिया व्हैहि एक^४ तन तजि सुअब ॥८२७॥
 तजिय स्वारथ लोभ मोह काहू नहिं करिए ।
 देह धरे पर वान^५ स्वामि को कारज मरिए ॥
 को इतसौं लै जात कहा उत सौं लै आयौ ।
 रहै अमर कीरति पाप नरदेह सु गायो ॥

सुनि सेख देखि थिर नाहिं कछु तन मिट्टी मिलि जाइए ।
का सोच मरन जीवन तणो यह लाभ सुजस सौं पाइए ॥८२८॥

सुनि हमीर के वचन साह पर सनमुख धाए ।

मीर गाभरू बीर आनि तिन^१ सीस नवाए ॥

अलादीन पतिसाह इते सिर ऊपरि राजै ।

तुम सिर राव हमीर स्वामि आपन कुल लाजै ॥

नन तजौ नोन की सरत दोउ यह तन तिल तिल खंडिए ।

मिलिए जु भिस्त^२ में जाय अब धर्म न अपनौ छंडिए ॥८२९॥

हँसि अलावदी साह शेख कौं बचन सुनाए ।

दिली छाड़ि करि सीस बहुरि मुझको नहिं नाए ॥

मिला मुझे तजि रोस हुरम मैं तुमको दोनी ।

अर गौरखपुर देश देंहु तुम कौं सत चीन्ही^३ ॥

मुसकाय साहि महिमा कहै बचन यादि वे किजिए ।

जननी न जन्म फिर आनि भुव जबै मिलन गन लिजिए ॥८३०॥

दोहरा छंद

जब^४ जननी जनमै बहुरि, धरू देह कहूँ आनि ।

तऊ न तजौ हमीर सँग, सत्य बचन मम जानि ॥८३१॥

तब सु राव हमीर सुनि, कीनी मदति सु सेख ।

हजरति महिमा साह को, बात लगावत देखि ॥८३२॥

कह हमीर यह बचन पर, गही साह सौं तेग^५ ।

लोभ न करिए जीव का, गहौ^६ साह सौं बेग ॥८३३॥

१ रिस । २ बिहस्त । ३ चीनी । ४ अब । ५ तेक । ६ सो रहै हमारी टेक ।

चौपाई छंद

कहै मीर गभरू ये बातैं ।

‘गहै’ सार नहिं करिए घातैं ॥

हुकुम धनी के कौ प्रतिपालौ ।

आई अदलि सीस पर चालौ ॥८३४॥

सुनि गभरू के बचन सुभाए ।

महिमा फूल खेत में आए ॥

सनमुख सार सन्हाय सु बढ्ढै ।

माया मोह त्यागि खग कढ्ढै ॥८३५॥

दोहरा छंद

दोऊ बंधु रिसाय कै, लई बाग इमि संग ।

उतरि खेत में मिलि उभै, कीनों हरष उमंग ॥८३६॥

मीर गभरू पाँय परि, हुकुम माँगि कर जोरि ।

स्वामि काज तन खंडिए, लगौ^२ तनक न खोरि ॥८३७॥

हनूफाल छंद

मिले बंधु दोउ धाय । बहु हरष कीन^३ सुभाय ॥

अब स्वामि धर्म सुधारि । दोउ ठठे बोर हँकारि ॥८३८॥

असमान^४ लगिय सीस । मनौ उभै काल सदीस ॥

इत कोप महिमा कीन्ह । हम्मीर नौन सु चीन्ह ॥८३९॥

उत मीर गभरू आय । मिलि सेख के परि पाँय ॥

१ गहो सार नर कौ रच यातैं ।

२ लपकत कबहूँ पोरि ।

३ कियउ । ४ असमान सीस सुलग ।

कर तेग बेग समाहि । रहि दुहूँ सेन सचाहि ॥८४०॥
 कम्मान लोन सु हत्थ । जनु^१ सार कार सुपत्थ ॥
 धरि स्वामि^२ काज समत्थ । दोउ^३ उभै जुद्ध सपत्थ ॥८४१॥
 दुहुँ द्रंद जुद्ध सुकीन । मनु जुटे मल्ल नवीन ॥
 तरवारि वज्जिय ताय । मनु लगी घोषम लाय ॥८४२॥
 कटि चरण सीसरु हत्थ । परि लुत्थ जुत्थ सु तत्थ ॥
 धमसान थान सु धीर । धर धरनि खेलत वीर ॥८४३॥
 गजराज लुटत भुम्मि । बहु तुरंग परत सु भुम्मि ॥
 बिय वीर वज्जिय सार । तरवारि बरसहु धार ॥८४४॥
 दोउ भ्रात स्वामि सकाम । जग में किए अति नाम ॥
 दोहुँ वीर देखत हूर । चढ़ि गए मुख अति नूर ॥
 दल दोय दिषत वीर । पहुँचे विहस्त गहीर ॥८४५॥

दोहरा छंद

तिल तिल भे अँग दुहुन के, हनै बाजि गजराज ।
 हजरत राव हमीर के, सबै सँवारे काज ॥८४६॥
 मुसलमान हिंदवान^४ को, चले सेख सिर नाय ।
 चढ़ि विमान दोऊ तहाँ, भिस्तहि पहुँचे जाय ॥८४७॥

छप्पय छंद

कहै साहू मुख बचन^५ सुनौ हम्मीर महाबल ।
 अब न गहो तुम सार फिरैं हम सकल दिली दल ॥

१ वर मार धार सुपत्थ । २ धर्म । ३ मनु । ४ हितवान ।
 ५ वचन, दैन ।

तुम्हें माफ तकसीर राज रणथंभ करो थिर ।
 हम तुम बीच कुरान मुहिम नहिं करो दिलीसुर ॥
 परगनें पाँच दीनें अवर रणतभँवर भुगतो सदा ।
 जब लग सुराज हमरौ रहै तुम सु राज राजौ तदा ॥८४८॥

चौपाई छंद

कहै राव हम्मीर सु बानी ।
 सुनि दिल्लीस सत्य जिय जानी ॥
 जांकी अदलि होय किमि मिटै ।
 नर तैं होनहार किमि घटै ॥ ८४९ ॥
 तुम्हरौ दयो राज किन पायौ ।
 तुम्ह को राज कहे किन दायो ॥
 बेर बेर कह मुखै उचारौ ।
 कोटि स्यानपन क्यों न विचारौ ॥ ८५० ॥
 कीरति अमर अमर नहिं कोई ।
 दुर्जोधन दसकंध सु जोई ॥
 काको गढ़ काकी यह दिल्ली ।
 हरि की दर्ई हमैं तुम मिलौ ॥ ८५१ ॥
 हम तुम अंस एक उपजाए ।
 आदि पदम रिषि अंग उपाए ॥
 देव दोष उर धर भए न्यारे ।
 हम हिंदू तुम यवन हँकारे ॥ ८५२ ॥

तजिए भोग भूमि के सबही ।

चलिए सुरपुर बसिए अबही ॥

संग हमारो पहुँच्यौ जाई ।

हम तुम रहै सबहिं पहुँचाई ॥ ८५३ ॥

गहो हृष्ट्यार राज सब छंडौ ।

राषो जस तन पंडि विहंडौ ॥

अबै चालि सुरपुर सुष मंडौ ।

मृत्यु लोक के भोग सु छंडौ ॥ ८५४ ॥

छंद त्रोटक

यह बात कही चहुवान तबै ।

सुनि साह सबै भर पेलि जबै ॥

करि साज सबै रण मंडि महा ।

तिन भारथ पारथ जुद्ध सुहा ॥ ८५५ ॥

दल संग चढ़े सब सूर असी ।

सब तोप सु बान कमान कसी ॥

गजराज अनेक बनाय धनै ।

मनौ पावस बहल मेघ तनै ॥ ८५६ ॥

हय कंद अमंद सु पौन मनौ ।

बहु दामनि सार चमंकि भनौ ॥

घन गौर^१ सदायन देखतयं ।

ध्वज वैरष मंडल लूरतयं ॥ ८५७ ॥

बिरदावत वृंद कविंद घनै ।

सनौ चत्रक मोर अनंद बनै ॥

बगपंति सुदंति अनंत रजे ।

धुरवा किर सुंड छुटे भरजे ॥ ८५८ ॥

बह^१ धार अपार जुधार वही ।

घन घोर सु नौवति नाद वही^२ ॥

कर सोर समोर नकीब चलै ।

यहि भाँति दोउ दिसि^३ वीर^४ मिलै ॥ ८५९ ॥

करिए हंकार सुवीर चलै ।

... .. ॥

कहि मीर सिकंदर नेम कियं ।

सिर नाय सुभाय हुकुम्म लियं ॥ ८६० ॥

पह लैं पुर जाय सु वीर भगं ।

रणथंभ कहा हजरत्ति अगं ॥

तुम सेर करयो वह आप जथा ।

अब देखहु मोर सुहाथ जथा ॥ ८६१ ॥

सु जमीति षधार लई सबही ।

अरु मीर सिकंदर आय^५ सही ॥

करि कोप सिकंदर मीर चढ़े ।

तब राव हमीर के भील कढ़े ॥ ८६२ ॥

१ वह सार अपार सु धार हुई । २ जुई । ३ दल । ४ बोर ।

५ पठई ।

तब भोज कही अब मोहि कहा ।
 इतने अब हथ्य हमार लहौ ॥
 तब राव कही रणथम्भ अगै ।
 दुइ जैत अगै^१ सिर भील तगै ॥ ८६३ ॥
 अर जैत सरनि सुराखि तबै ।
 करि कौन करै तुम्हरी जु अबै ।
 तुम संग रतन चीतोर गढ़ ।
 चढ़ि जाहु हमार जु काज बढ़ ॥ ८६४ ॥
 सुनि भोज इसे कहि बैन तबै ।
 यह सीस तुम्हार निमित्त^१ अबै ॥
 रणथम्भहि हेत जु सीस दिवै ।
 अर और कहा बिन राव जिवै ॥ ८६५ ॥
 यह औरसर फेरि बनै कबही ।
 हजरत्ति हमार मिले जवही ॥
 कहि बत्त इती जु सलाम करी ।
 अपनी सब लीन जमीन खरी ॥ ८६६ ॥
 सब भील कसे हथियार जबै ।
 निकसे कढ़ि मोज अमान तबै ॥
 कमठा कर तीर सम्हार उठे ।
 उत मीर सिकंदर आय जुटे^२ ॥ ८६७ ॥

बजि घोर निसान प्रमान^१ मिले ।
 दल कोप करे बहु तोप चले ॥
 घमसान जुवान कियो तबहीं ।
 दुहु सैन सुऐन बनें जवहीं ॥ ८६८ ॥
 गजराज हरौल करे बल्यं ।
 उत सार अपार कढ़े दलयं ॥
 ससि भील अनी सुघनी हलकौ ।
 कसि गातिय^२ कोप कियो बलकौ ॥ ८६९ ॥
 कमठा कर धार अपार बलं ।
 तइ भोज मिल्यो तहँ साह दलं ॥
 नट कूदत जानि सु ढोल सुरं ।
 बहै तीर अमीर सुजानि छुरं ॥ ८७० ॥
 करि कोप तबै गजदंत कढ़े ।
 मुरि मूरिय धूरि उपारि बढ़े ॥
 सब भीलन मत्त सुकोप कियं ।
 जनु भाल बली मुख लंक लियं ॥ ८७१ ॥
 जनु मार अपार कटार चलै ।
 बहु मीर अमीर रु भील मिलै ॥
 हज्जरति सराहत भोज बलं ।
 जनु मानव रिच्छ भिरत्त दलं ॥ ८७२ ॥

दाउ भोज सिकंदर भील जुटे ।
 मुख बानिय मीर अमीर रटे ॥
 जब भोज कहै करि वार तुहीं ।
 कहै मीर सिकंदर बूढ़ तुहीं ॥ ८७३ ॥
 अब तोपर वार कहा करिए ।
 सब लोक अलोक महा भरिए ॥
 तब भोज सकोप कियो रण में ।
 करि कोप कटार दियो तन में ॥ ८७४ ॥
 तन कंगल भेदि धरनि परयो ।
 किरवान चलाय समीर हरयो ॥
 सिर भोज परयो धरनी^१ तल में ।
 धर धावत^२ रुंड लरै बल में ॥ ८७५ ॥
 उत मीर सिकंदर भूमि परे^३ ।
 वर हूर^४ सुदूर सुआनि परे ॥
 परि खेत सधार अपार सबै ।
 बिन सीस पराक्रम भोज अबै ॥ ८७६ ॥
 भजि साह अनी तजि खेत तबै ।
 परि भोज समाज सबीर सबै ॥
 कसमीर अमीर सहस्र पची ।
 सुमिली^५ धर धार सची सु अची ॥ ८७७ ॥

१ धरनिथल । २ भुमि लरै चल में । ३ गिरे । ४ हूरन ।
 ५ उलटी भरै सेन दिलीस बची ।

तहाँ भोज ससाथि. हजार भले ।

वरि बाल सबै सुर लोक चले ॥८७८॥

दोहरा छंद

परे भोज सँग भील भर, सहस दोइ इक ठौर ।

सहस पचीस कसमीर के, अरपँधार भर मौर^१ ॥८७९॥

सहस तीस पंधार के, और सिकंदर मीर ।

अली सयद के संग भट, परे मीर दस भीर ॥८८०॥

भजी फौज पतसाह की, विकल सकल उमराव ।

दोय सहस भट भोज संग, रहे खेत करि चाव ॥८८१॥

चौपाई छंद

राव हमीर भोज ढिग आए ।

देखि^२ सु भोज नैन जल छाए ॥

तुम सब अमर भए कलि माहीं ।

स्वामि काम सब देह सराही ॥८८२॥

जो न सिकंदर साह जु आए ।

राव हमीर के सनमुख धाए ॥

देखि साह आपन दल भजै ।

हजरति देखि हमीरह लज्जै ॥८८३॥

राव हमीर खेत महिं ठाढ़े ।

हजरति अंग कोप अति बाढ़े ॥

कहै साह तब कोप सु बैन ।
 फिरे सकल नीचे कर नैन ॥८८४॥
 सर्वसु भूमि भोग कर नीके ।
 जंग समय लालच कर जीके ॥
 भगे जात जीवत मोहि अबहीं ।
 गई बात^१ वीरन की सबहाँ ॥८८५॥
 सुन ये बैन वीर खिसयाने ।
 राव हमीर सुद्ध हिय ठाने ॥
 जैन . सिकंदर साह अमानौ ।
 अरु पंधार भीरु सब जानौ ॥८८६॥
 यह हम्मीर राव चहुआन ।
 जुरे जुद्ध मनु काल समान ॥
 तुपक तोप चहर सब दगिय ।
 कर कृपान चहुवान सु जगिय ॥८८७॥
 भुजंगप्रयात छंद
 परे दोय हजार भील समत्थ^१ ।
 तहाँ च्यारि ओरं गिरे खेत सत्थ^१ ॥
 परे कासमीर सहस्र पचीस^१ ।
 अली सेर मीरं परे संग दीसं ॥८८८॥
 तबै साह कोपं किए बैन रीसं ।
 फिरे वीर लज्जा समेतं सुदीसं ॥

तबै राव हम्मीर कोपे सुजानं ।

चले^१ संग चहुवान बलवान रानं ॥८८६॥

लिए सेन पंधार दो लक्ख जामी ।

जबै जैन साहं सिकंदर सु नामी ॥

इतै राव हम्मीर कम्मान लीनी ।

मनौ पत्थ भारत्य सारत्थ कीनी ॥८८७॥

लगै^१ तीर अंगं हुवै पार गज्जै^२ ।

परै^३ पील भुम्मी^२ सु घुम्मै^२ गरज्जै^२ ॥

कहूँ पक्खरं बाजि फूटै^३ सरीर । .

छुटै प्राणवानं सु लागंत तीरं ॥८८८॥

जुरे जंग मीरं अमीरं सु चौजं ।

इतै राव हम्मीर उत साह फौजं ॥

चढे^३ राव के रावतं जो अमानै ।

बनै कंगलं अंग जंगं सु ठानै ॥८८९॥

करै^३ रंग के अंग बानै अनेकं ।

घनै केसरं साज लीनै^३ सु तेकं ॥

किते बीर तोरा तवल्लं बनाए ।

घनै नेत बंधं गजं गाह लाए ॥८९०॥

किते मौर बंधं सजे केसरानं ।

किते बीर बाँके चढे चाहुवानं ॥

पढ़ें पाहि^१ बंड़ी जनं वृंद भारे ।
 मनौ राति जोरंत दूटंत तारे ॥ ८६४ ॥
 उतै साह कीनै घनै गज्ज अगँ ।
 मनौ पाय चल्लै पहारं सु मगँ ॥
 तिन्हें उप्परै साह के बीर धाए ।
 गद्दी तेग हृथं उरं कोप छाए ॥ ८६५ ॥
 इतै राव चहुवान के बीर कोपे ।
 मनो आजही साह के बीर लोपे ॥
 गजै सो हमीरं लखें खेत राजें ।
 सबै सूर बोरं निसानं सु बाजें ॥ ८६६ ॥
 किते चाहुवानं पिले डील पीलं ।
 उठावंत मारंत पारंत डीलं ॥
 कहूँ सुंडि पै तेग बाहंत ऐसी ।
 मनो रंभ धंभं कटै तेग जैसी ॥ ८६७ ॥
 कटै^२ दंत मातंग भाजंत^२ जेते ।
 गहैं पुच्छ सुडु^२ पटकंत कंते ॥
 परै^२ पील पब्बय मनौ खेत भारी ।
 बहैं रक्त घावं मनो घाव कारी ॥ ८६८ ॥
 तिहों काल कविराज उप्पम विचारी ।
 बहैं स्याम पब्बै सु गेरु पनारी ॥

किते बाजि राजं पटकंत भूमैं ।
 भए अंग भंगं खरे घाव घूमैं ॥ ८८६ ॥
 कढ़ो तेग बेगं लपटं सु जानौ ।
 मनौ घोषमं लाय लगी सुमानौ ॥
 जुटे बीस बोरं गहीरं सु गज्जै ।
 भजे कायरं^१ खेत छंडे सु लज्जै ॥ ८८७ ॥
 कटे सीस बाहू कहूँ पाव ऐसे ।
 बहैं तेग बेगं मनौ डार जैसै ॥
 लगै कंध घोवा तबै सीस टटै^२ ।
 परै^३ सीस धरनी तबै रुंड भूटै^३ ॥ ८८८ ॥
 घने सीस तबूज से भुम्मि डारै ।
 लरै^४ रुंड खेतं सिरं हक्क^४ मारै ॥
 बहैं बान किरवान^५ वज्जन्त सारै ।
 मनो काठ काटंत^६ कट्टे कुहारै ॥ ८८९ ॥
 बहैं सील अंग परै^६ पार होई ।
 मनौ रुंड मैं नाग लपटंत सोई ॥
 कटारी लगै^६ अंग दीसंत पारं ।
 मनौ नारि मुग्धा कढ्यौ पानि वारं ॥ ८९० ॥
 छुरी वार सूरं करै^६ जोर ऐसै ।
 मनो सर्पनी पुच्छ दीखंत जैसै ॥

१ कातरं । २ टुटै । ३ भुटै । ४ हांक । ५ कम्मान ।
 ६ कट्ट, कटंत ।

लगै जोर सों यों विषाणं जवानं ।

हुवै अंग पारं जुटै जोर वानं ॥ ६०४ ॥

भए लष्ट्य बष्ट्य दुहूँ संन ऐसैं ।

मनो यों अपारे भिर मल्ल जैमें ॥

पछारै उखारै भुजा सीम सूरं ।

उछारै^१ हँकारै उठै बोर नूरं ॥ ६०५ ॥

मची माल मंदं धरा कीच भारी ।

चली भुट्टि खेतं नदी मै^२ अकारो ॥

बनै कूल पील सुढीलं सु बज्जो ।

बहै बीचि^३ लोहू जलं धार गज्जो ॥ ६०६ ॥

रथं चक्र आवर्त्त सौ भौर मानों ।

घनं घंस बंला कुलं रूप मानों ॥

नरौ ग्राह पावं करं सर्प जैसे ।

बनी अंगुरी मोन भोंगा सु तैसे ॥ ६०७ ॥

बहैं सीस इंदीवरं जानि फूलै^४ ।

खुले नैन यौ चंचरीकं सु भूलै ॥

सिवालं सु केसं सुवेसं विराजै ।

बनै घाट बासों खरे सूर गाजै ॥ ६०८ ॥

भरै जुगगनी खप्परं सूर लोही ।

मनौ ग्राम बामा पनीहार सोही ॥

करै कलि भैरव हरं संग काली ।
 मनौ न्हात बैसाष कार्तिकक वाली ॥ ८०८ ॥
 इसे घाट ओघाट^१ किन्ने हमीरं ।
 डरै^२ कायरं^३ साह के मीर पीरं ॥
 भजी साह सैना सबै लाज डारो ।
 भिरं खेत चहुवान गज्जंत भारी ॥ ८१० ॥
 किते गिद्ध जंबू करालं सु चिल्ली ।
 वगं^४ हंस केते विहंगं सु मिल्लो ॥
 परे खेत साहं सिकंदर सु नामी ।
 सवा लक्ख खंधार के मीर बामी ॥ ८११ ॥
 गिरे खेत हृथी सतं पौन ऐसे ।
 मनौ पर्वतं^५ अंग दीखंत जैसे ॥
 कसे साठि^६ हौदा परे खेत माहीं ।
 जरावं जरं कंचनं के सुमाहो ॥ ८१२ ॥
 परे डुंबरं सौ कई गज्जराजं ।
 कई प्राण हीनं कई मो^६ समाजं ॥
 परे सत्त पंचं निसानन वारे ।
 किते गज्जराजं परे खेत भारं ॥ ८१३ ॥
 सवा लक्ख वाजी परे जे अमानं ।
 परे खेत साहो सिकंदर सुजानं ॥

१ ओघट । २ कातर । ३ वकं । ४ पद्वयं । ५ साठ
 ६ मोजमाजं ।

तिनै साह लक्खं पँधारं सवायं ।

परे एक लक्खं दिलीसं सुपायं ॥८१४॥

इदं इक्क मीरं परे खेत नामी ।

कहूँ नाम ताके परे खेत वामी ॥

परे दूसरे मीर सिर खान भारी ।

रहे खेत महरम्म खानं सुधारी ॥८१५॥

परे जौमजादेन से मीर नामी ।

मोहोबत मुदफ्फर परे इक्क ठामी ॥

परे नूर मीरं अफर्रस धीरं ।

बलो इक्क निज्जाम दीनं सु पीरं ॥८१६॥

परे मीर एते दुहूँ खेत सूरं ।

वहँ नीर ज्यों रत्त वाहंत कूरं^१ ॥

नची जुगनी और भैरव सु नच्चै^२ ।

भखै गिद्ध आमिष जंबू सु रच्चै ॥८१७॥

थके सूर रथं सु जामं सवायं ।

महावीर घायं स घूमंत तायं ॥

बरै अच्छरी सूर^२ वीरं सु अच्छे ।

खुले मोत्त^३ द्वारं प्रवेसंत गच्छे ॥८१८॥

भयो मंडलं कुंडलं भान नहं ।

कढ़े सूर वीरं सु धीरं उपहं ॥

महा रौद्र भौ खेत देखंत जानौ ।

कियो अद्भुतं देव सो जुद्ध मानौ^१ ॥८१८॥

परे खेत खंधार मीरं सु राते ।

इके लक्ष्य हजार पंचास जाते ॥

इतै सूर हम्मीर कं सहस चारं ।

सु तौ वीर धीरं खुले मोक्ष द्वारं ॥८२०॥

दोहरा छंद

तब हमीर हर ध्यान करि, हर हर हर उच्चारि ।

गज निज सनमुख^२ पेलि कै, जुरे^३ साह सों रारि ॥८२१॥

त्रोटक छंद

गजराज हमीर सु पेलि वरं ।

मुख तैं उचरंत सु भाव हरं ॥

किरवान^४ कढ़ो बलवान हथं ।

सनमुख सु साहि सु बालि^५ जथं ॥८२२॥

सुनिए सु अलावदि बैन अथं ।

करि द्वंद सु उद्ध सु जुद्ध धयं ॥

सब सेन कहा करिहै सु सुधं ।

हम आपन^६ इक्क^७ करै सु जुधं ॥८२३॥

दुहुँ ओर उछाह अथाह सजे ।

हजरति सु कोप अकथ^८ रजे ॥

१ जानों । २ सम्मुख पिलि कै । ३ जुरिग, जुरंड । ४ कम्मान चढ़ी । ५ बुलि गथं । ६ अप्पन । ७ एक । ८ अगत्थ ।

सनमुख हमीर सु आय^१ जुटे ।

सब सथ जथारथ बेग^२ हटे ॥६२४॥

तिहिं खेत^३ खरे^४ चहुवान नरं ।

पतिसाह सबै दल भजि^५ भरं ॥

रहि मीर उजीर कछूक तबै ।

चहुवानन के दल देखि जबै ॥६२५॥

पतिसाह कही यह कौन बनी ।

सब सैन बड़ी चहुवान तनी ॥

तव मंत्र वजीर सु एमि कहा ।

तुम मित्र सदा गुन जानि लख्यो ॥६२६॥

अब विप्रह छाड़ि सु संधि करा ।

चहुवानन सों हित जानि डरो ॥

अपराध हमैं सब दूरि करौ ।

तुम होहु अभै हम कूच धरौ ॥६२७॥

नृप सों चर जाय कही तबहो^६ ।

सुनि राव यहै मुख बत्त कही ॥

अब खेत चढ़े कछु संधि नहीं ।

यह बत्त हमारि सुजानि सही ॥६२८॥

रिपु तैं विनती सुइ कातरता ।

अब वृत्त कहै छल चातुरता ॥

१ आनि । २ रेख, देख । ३ अत्त, अत्थ, अर्थ ४ अरे
५ भाजि । ६ अबहीं ।

अब जाहु यहाँ हम सेन सजी ।

बिन साह को जुद्ध करंत लजी ॥६२६॥

वचनिका

अब राव हम्मीर दूत को नीति सहित उत्तर दियो अरु युद्ध को उच्छाह कियो आपणां उमरावों सौं कही आयुध^१ छतीस सों च्यारि आवधां सुं युद्ध कीजे अर जग में अमर जस लीजै ॥ तोप, बाण, चादरि, हथनावि, जंदूर, बंदूक, तमंचा, कमान, सेल इन नै त्यागौ । अरु आयुध चार लीजै । तरवारि, छुरी, कटारी, विषाण, मल्ल युद्ध करि हजरति नै हाथ दिखावे तौ सायुज्य मुक्ति पावो ॥ पातसाह की जान बखसीस करो और अछरी बरौ यह हम्मीर की आज्ञा माथै धरि राव हम्मीर के उमराव केसरिया साज बनाय अरु सेहरा बांधि पातसाह की फौज परि हाँकौ^२ कियो ॥

त्रोटक छंद

कछु जंत्र न तोप न कंत^३ नहों ।

तजि चापन चक्रन बान जिहीं ॥

किरवान^४ लई करि वाजि चढ़े ।

चहुवान अमान सुखेत चढ़े ॥६३०॥

उत मीर बजीर रू साहि निजं ।

करि कोप तबै पतिसाह सजं ॥

तरवारि अपार दुधार बहै ।
 सब साहि सु सैन समूह दहै ॥८३१॥
 कटि ग्राव भुजा धर सो विफरे^१ ।
 मनु काटि करे रस कृत्त हरे ॥
 उडि मथ्य परे धर रुंड उठै ।
 चहुवान धरासह धार उठै ॥८३२॥
 सिर भारत हाक परे धर मै ।
 धर जुझत जुद्ध करै अरमै ॥
 कर जोर कटार सु अंग बहै ।
 बहु खंजर पंजर देह दहै ॥८३३॥
 बहु रंचक^२ मुष्ट कवथ्य परै^३ ।
 मल जुद्ध समुद्ध सुबीर करै ॥
 पचरंग अनगिय खंत बन्यौ ।
 बकसी^४ तब साह सो बैन भन्यौ ॥८३४॥
 भयभीत सु साह की फौज भगी ।
 घमसान मसान सु ज्योति जगी ॥
 परियो बकसी लखि नैन तबै ।
 उलटो गज कीन सु साह जबै ॥८३५॥
 इक संग उजीर^५ न और नर^६ ।
 फिरि रोकिय^६ साह अनंत भरं ॥

१ बिहरै । २ रंजक । ३ भरै । ४ बकसी नृप साह कौ
 आप हन्धौ । ५ तजीर । ६ रुक्किय ।

चहुवान धरम्म सु जानि कहै ।

यह मारत साहि सु पाप अहै ॥८३६॥

अभिषेक लिलाट कियो इन कै ।

महि ईस कहावत है तिन कै ॥

धरि अग्र सु साह को पील जबै ।

जहँ राव हमीर सु लाए पगै ॥८३७॥

अब साहि सु राव कही तवहीं ।

तुम जाहु दिला न डरो अबहीं ॥

लखि साह को लोग मुरकि चलयौ ।

नृप आप हमीर सु खेत भिल्यौ ॥८३८॥

वचनिका

राव हम्मीर का उमरावाँ तरवारि कटारियाँ सेां जुद्ध कियो पातसाह का अमीर उमरावाँ सूं मल्ल जुद्ध करयो तदि पातसाह की फौज विकल होकर पातस्याह ते' छोड़ छोड़ भागी हम्मीर की रावताँ पातस्याह ने हाथी सुद्धां घेरि लियाया ॥ हम्मीर कै आगे ल्या खड़े करयो । राव हम्मीर पातस्याह ने देखि आपणाँ रावताँ सेां कही यानै छोड़ देओ यह नै पृथ्वीस कहैं छैं या अदंड छैं ॥ यह सुनि पातिसाह ने छोड़ दियो^१ । पातसाह ने उह की फौज में पहुँचाय दियो । पतिसाह वहाँ से खेत छोड़ कूँच कियो^२ ॥

दोहरा छंद

छाड़ि खेत पतसाह तब, परे^१ कोस द्वै जाय ।
 हसम सकल चहुवान ने, लीनो^२ तबै छिनाय ॥ ८३८ ॥
 लिए साह नीसान तब, बाना जिते बनाय ।
 और संहारि सु खेत को, घायल सोधि उठाय ॥ ८४० ॥
 सब के जतन कराय कै, देस काल सम आय ।
 राव जीति गढ़ को चलें, हर्ष न हृदय समाय ॥ ८४१ ॥
 बिन जाने नृप हर्ष में, गए भूल^३ यह बात ।
 साह निसान सु अग्र^४ करि, चले भवन हर्षाति ॥ ८४२ ॥

पद्वरी छंद

भगि साह सेन जुत उलट आय ।
 तजि विविध भॉति बाना^५ जु ताहि ॥
 सब साह हसम लीनी छिनाय ।
 नृप सकल खेत सोधो कराय ॥ ८४३ ॥
 बजि दुंदुभि जय जय धुनि सु आय ।
 सब घायल नृप लीन उठाय^६ ॥
 करि अग्र^७ साह नीसान भुल्लि ।
 लखि भूप हसम हर कहां फुल्लि ॥ ८४४ ॥
 सब राज लोक तिय जिती जानि ।
 सब सार परस्पर हरी^८ आनि^९ ॥

१ परिय । २ लिजो । ३ भुल्लि । ४ अग्र । ५ नाना ।
 ६ उचाय । ७ अग्र । ८ हनी । ९ पानि ।

चहुवान दुग्ग किन्नो प्रवेस ।

यह सुनिय राव तिय मरन सेस ॥८४४॥

चहुवान आनि देख्यौ सु गेह ।

शिव वचन यादि कीनो सु येह ॥

नृप सकल संग को सीख दोन ।

रावत्त राण मंत्री प्रवीन ॥८४६॥

तुम जाहु जहाँ रतनेस आय ।

किञ्जे न सोच नृपता बनाय ॥

चहुवान राय हम्मीर आय ।

हर मँदिर महँ प्रविसंत जाय ॥८४७॥

करि पूजन भव^१ गणपति मनाय ।

बहु धूप दीप आरति बनाय ॥

हो गिरजा गणपति सु मम देव ।

तुम जानत हो मम सकल भेव ॥८४८॥

अपवर्ग देहु तुम नाथ सिद्धि ।

तन छत्र धर्म दीजे^२ प्रसिद्धि ॥

करि ध्यान शंभु निज सीस दृश्य^३ ।

नृप तारि कमल ज्यों किय अकथ्य ॥८४९॥

यह सुनिय साह निज श्रवण बात ।

चलि हर मँदिर को साह आत ॥

जलधार नैन लखि राव कर्म ।

कहि साहि मोहि दोनो न मर्म ॥८५०॥

कछु दियो हमें उपदेश नाहि ।

तुम चले आप बैकुंठ माहि ॥

तुम अभय बाँह दोनी जु शेष ।

जुग जुग नाम राख्यौ विशेष ॥८५१॥

अरु महा दानि तुम भए भूप ।

इच्छा सदान दीने अनूप ॥

जगदेव मोरध्वज तैं विशेष ।

जस लयो लोक तुम रक्खि सेख ॥८५२॥

वचनिका

सो राव हम्मीर व्यौरा सुन्यो और शिव के वचन यादि करयो । और यह निश्चय जानि कि वर्ष चौदह पूरे भए गढ़ की अवध पूर्णई हुई तातैं यह शरीर रक्खनो उपहास्य है और छिन भंग शरीर को राखनो आछ्यौ नहीं । यह विचारि शिव के मंदिर गए और आप एक सेवग कनै राखि शिव को षोड़स प्रकार पूजन करयौ और यह वर्दान माँग्यौ कि हे शिव तुम ईश्वर हो । सेवक हृदय के जानन-हारे हो और सबके प्रेरक हो तातैं हमारी यह प्रार्थना है मुक्ति दोजे तो सायुज्य दीजै । जन्म जन्म विषैं छत्रो-कुल में जन्म पाऊँ यह कहि कै खग आप हाथ ले कै सीस

उतारयो शिव पिंडी पै चढ़ाय दियो तब सदाशिवजी प्रसन्न
होय के आशीर्वाद दियो तिहारे कुल की जय होय ॥

दोहरा छंद

साह कहत हम्मीर सां, लेहु मोहि अब संग ।
धर्म रीति जानो सु तुम, सूर उद्धार अभंग ॥६५३॥

पद्वरी छंद

मुसकाय सीस बोल्यो सु बानि ।
तुम करो साह मम बचन कानि ॥
हम तुम सु एक जानो न और ।
तजि मोह दंड त्यागो सु तौर ॥६५४॥
लीजे सुभाँफ सागर सु जाय ।
तब मिलै आप अपै सु आय ॥
यह कहिस सीस सुख मूँदि होत ।
तब साहि ग्यान हृद भो उदोत ॥६५५॥
उठि साह सीस बंदन सु कीन ।
करि प्रणाम संभु को ध्यान लीन ॥
हजरत्त आय डेरै सु तब ।
बज्जोर मीर बोले सु सब ॥६५६॥
तुम जाहु सकल दिल्ली सथान ।
अलवृत्तहि राज दीजे सु आन ॥
नहिं करो मोर अज्ञा सु भंग ।
सेवक धर्म यह है अभंग ॥६५७॥

दोहरा छंद

आयसु पाय सु साह को, चढ़े सकल सजि सैन ।
 महरम खाँ उज्जीर तब, आए दिली सु ऐन ॥८५८॥
 दयो राज सिर छत्र धरि, अलावृत्त तिहि काल ।
 घर घर अति आनंद जुत, यह विधि प्रजा सुपाल ॥८५९॥
 रणतभँवर के खेत को, कीनो सकल प्रमान ।
 प्रथम हने रणधीर ने, बहुरि सेन परिवान ॥८६०॥
 दोय लख रुमीं परे, दोऊ कुँवर उदार ।
 सेन आरबी की जिती, हनी जु असी हजार ॥८६१॥
 हने मीर द्वै सब सतरि, और सिकंदर साह ।
 अट्ट लख पंधार के, हने मीर निज आह ॥८६२॥
 मवा सहस गजराज परि, दो लष बाजि प्रसिद्ध ।
 द्वादस लख सेना प्रबल, हनी हमीर सुसिद्ध ॥८६३॥
 मस्तक राव हमीर को, किय सुमेर हर आप ।
 मुक्ति द्वार सबई खुले, विद्या वर्ष सुथाप ॥८६४॥

छप्पय छंद

बिदा कीन उज्जीर कूँच दिछी को कीनो ।
 तब सुसाह तजि संग बचन हजरत को लीनो ॥
 सेतबंद पर जाय पूजि रामेश्वर नीकै ।
 परे सिंधु में जाय करे मन भाते जी के ॥
 उर्वसी साह हम्मीर नृप सेख मीर सब नाक गय ।
 करि लोकपाल आदर अखिल जय जय जय हम्मीर कय ॥८६५॥

मिले स्वर्ग में जाय साह हम्मीर हरषे ।
 महिमा मीरऽउ बाल बिबिध मिलि सुमन बरषे ॥
 जय जय जय हम्मीर सकल देवन मुख गाए ।
 लोक अमर कीरति मुक्ति परलोक सुपाए ॥
 माणिक राव चहुवान कुल दैन खड्ग दोऊ धरत ।
 कहि जोधराज यह वंश में ननकारी नाहिन करत ॥८६६॥

दोहरा छंद

सुनत राव हम्मीर जस, प्रीति सहित नृप चंद ।
 मनसा वाचा कर्मना, हरे जोध के द्रुंद ॥८६७॥
 चंद्र नाग वसु पंच गिनि, संबत माधव मास ।
 शुक्ल सुत्रतिया जीव जुत, ता दिन ग्रंथ प्रकास ॥८६८॥
 भूपति नीवागढ प्रगट, चंद्रभान चहुवान ।
 साम दाम अरु भेद जुत, दंडहि करत खलान ॥८६९॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज-राजराजेंद्र-श्रीमदखिल-चाहुवान-
 कुल-तिलक नीमराना-अधिपति श्रीमहाराजा चंद्र-
 भानजी-देवाज्ञया कवि जोधराज विर-
 चितं यवनेश अलावद्दीन प्रति
 हम्मीरजुद्धं समाप्तम्

